प्रियांशी
जैन
दंगा

“ये मैं कहा हूँ. मैं तो अपने कमरे में नींद की गोली ले कर सोई थी.मैं यहा कैसे आ गयी ? किसका कमरा है ये ?”

आँखे खुलते ही आलिया के मन में हज़ारों सवाल घूमने लगते हैं. एक अंजाना भय उसके मन को घेर लेता है.

वो कमरे को बड़े गोर से देखती है. "कही मैं सपना तो नही देख रही" आलिया सोचती है.

"नही नही ये सपना नही है...पर मैं हूँ कहा?" आलिया हैरानी में पड़ जाती है.

वो हिम्मत करके धीरे से बिस्तर से खड़ी हो कर दबे पाँव कमरे से बाहर आती है.

"बिल्कुल सुनसान सा माहोल है...आख़िर हो क्या रहा है."

आलिया को सामने बने किचन में कुछ आहट सुनाई देती है.

"किचन में कोई है...कौन हो सकता है....?"

आलिया दबे पाँव किचन के दरवाजे पर आती है. अंदर खड़े लड़के को देख कर उसके होश उड़ जाते हैं.

“अरे ! ये तो राहुल है… ये यहा क्या कर रहा है...क्या ये मुझे यहा ले कर आया है...इसकी हिम्मत कैसे हुई” आलिया दरवाजे पर खड़े खड़े सोचती है.

राहुल उसका क्लास मेट था और पड़ोसी भी. राहुल और आलिया के परिवारों में बिल्कुल नही बनती थी. अक्सर राहुल की मम्मी और आलिया की अम्मी में किसी ना किसी बात को ले कर कहा सुनी हो जाती थी. इन पड़ोसियों का झगड़ा पूरे मोहल्ले में मशहूर था. अक्सर इनकी भिड़ंत देखने के लिए लोग इक्कठ्ठा हो जाते थे.

आलिया और राहुल भी एक दूसरे को देख कर बिल्कुल खुश नही थे. जब कभी कॉलेज में वो एक दूसरे के सामने आते थे तो मूह फेर कर निकल जाते थे. हालत कुछ ऐसी थी कि

अगर उनमे से एक कॉलेज की कँटीन में होता था तो दूसरा कँटीन में नही घुसता था. शुक्र है कि दोनो अलग अलग सेक्शन में थे. वरना क्लास अटेंड करने में भी प्रॉब्लेम हो सकती थी.

“क्या ये मुझ से कोई बदला ले रहा है ?” आलिया सोचती है.

अचानक आलिया की नज़र किचन के दरवाजे के पास रखे फ्लॉवर पॉट पर पड़ी. उसने धीरे से फ्लॉवर पॉट उठाया.

राहुल को अपने पीछे कुछ आहट महसूस हुई तो उसने तुरंत पीछे मूड कर देखा. जब तक वो कुछ समझ पाता... आलिया ने उसके सर पर फ्लॉवर पॉट दे मारा.

राहुल के सर से खून बहने लगा और वो लड़खड़ा कर गिर गया.

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे साथ ऐसी हरकत करने की." आलिया चिल्लाई.

आलिया फ़ौरन दरवाजे की तरफ भागी और दरवाजा खोल भाग कर अपने घर के बाहर आ गयी.

पर घर के बाहर पहुँचते ही उसके कदम रुक गये. उसकी आँखे जो देख रही थी उसे उस पर विश्वास नही हो रहा था. वो थर-थर काँपने लगी.

उसके अध-जले घर के बाहर उसके अब्बा और अम्मी की लाश थी और घर के दरवाजे पर उसकी छोटी बहन फातिमा की लाश निर्वस्त्र पड़ी थी. गली मैं चारो तरफ कुछ ऐसा ही माहोल था.

आलिया को कुछ समझ नही आता. उसकी आँखो के आगे अंधेरा छाने लगता है और वो फूट-फूट कर रोने लगती है.

इतने में राहुल भी वहा आ जाता है.आलिया उसे देख कर भागने लगती है....पर राहुल तेज़ी से आगे बढ़ कर उसका मूह दबोच लेता है और उसे घसीट कर वापिस अपने घर में लाकर दरवाजा बंद करने लगता है.

आलिया को सोफे के पास रखी हॉकी नज़र आती है.वो भाग कर उसे उठा कर राहुल के पेट में मारती है और तेज़ी से दरवाजा खोलने लगती है. पर राहुल जल्दी से संभाल कर उसे पकड़ लेता है

"पागल हो गयी हो क्या… कहा जा रही हो.. दंगे हो रहे हैं बाहर. इंसान… भेड़िए बन चुके हैं.. तुम्हे देखते ही नोच-नोच कर खा जाएँगे"

आलिया ये सुन कर हैरानी से पूछती है, "द.द..दंगे !! कैसे दंगे?"

"एक ग्रूप ने ट्रेन फूँक दी…….. और दूसरे ग्रूप के लोग अब घर-बार फूँक रहे हैं… चारो तरफ…हा-हा-कार मचा है…खून की होली खेली जा रही है"

"मेरे अम्मी,अब्बा और फातिमा ने किसी का क्या बिगाड़ा था" ---आलिया कहते हुवे सूबक पड़ती है

"बिगाड़ा तो उन लोगो ने भी नही था जो ट्रेन में थे…..बस यू समझ लो कि

करता कोई है और भरता कोई… सब राजनीतिक षड्यंत्र है"

"तुम मुझे यहा क्यों लाए, क्या मुझ से बदला ले रहे हो ?"

"जब पता चला कि ट्रेन फूँक दी गयी तो मैं भी अपना आपा खो बैठा था"

"हां-हां माइनोरिटी के खिलाफ आपा खोना बड़ा आसान है"

"मेरे मा-बाप उस ट्रेन की आग में झुलस कर मारे गये, जरीना...कोई भी अपना आपा खो देगा."

"तो मेरी अम्मी और अब्बा कौन सा जिंदा बचे हैं.. और फातिमा का तो रेप हुवा लगता है. हो गया ना तुम्हारा हिसाब बराबर… अब मुझे जाने दो" आलिया रोते हुवे कहती है.

"ये सब मैने नही किया समझी… तुम्हे यहा उठा लाया क्योंकि फातिमा का रेप देखा नही गया मुझसे….अभी रात के २ बजे हैं और बाहर करफ्यू लगा है.माहोल ठीक होने पर जहाँ

चाहे चली जाना"

"मुझे तुम्हारा अहसान मंजूर नही…मैं अपनी जान दे दूँगी"

आलिया किचन की तरफ भागती है और एक चाकू उठा कर अपनी कलाई की नस काटने लगती है

राहुल भाग कर उसके हाथ से चाकू छीन-ता है और उसके मूह पर ज़ोर से एक थप्पड़ मारता है.आलिया थप्पड़ की चोट से लड़खड़ा कर गिर जाती है और फूट-फूट कर रोने लगती है.

"चुप हो जाओ.. बाहर हर तरफ वहशी दरिंदे घूम रहे हैं.. किसी को शक हो गया कि तुम यहा हो तो सब गड़बड़ हो जाएगा"

"क्या अब मैं रो भी नही सकती… क्या बचा है मेरे पास अब.. ये आँसू ही हैं.. इन्हे तो बह जाने दो"

राहुल कुछ नही कहता और बिना कुछ कहे किचन से बाहर आ जाता है.आलिया रोते हुवे वापिस उसी कमरे में घुस जाती है जिसमे उसकी कुछ देर पहले आँख खुली थी.

अगली सुबह आलिया उठ कर बाहर आती है तो देखती है कि राहुल खाना बना रहा है.

राहुल आलिया को देख कर पूछता है, “क्या खाओगी ?”

“ज़हर हो तो दे दो”

“वो तो नही है.. टूटे-फूटे पराठे बना रहा हूँ….यही खाने पड़ेंगे……आऊउच…” राहुल की उंगली जल गयी.

“क्या हुवा…. ?”

“कुछ नही उंगली ज़ल गयी”

“क्या पहले कभी तुमने खाना बनाया है ?”

“नही, पर आज…बनाना पड़ेगा.. अब वैसे भी मम्मी के बिना मुझे खुद ही बनाना पड़ेगा ”

आलिया कुछ सोच कर कहती है, “हटो, मैं बनाती हूँ”

“नही मैं बना लूँगा”

“हट भी जाओ…जब बनाना नही आता तो कैसे बना लोगे”

“एक शर्त पर हटूँगा”

“हां बोलो”

“तुम भी खाओगी ना?”

“मुझे भूक नही है”

“मैं समझ सकता हूँ जरीना, तुम्हारी तरह मैने भी अपनो को खोया है. पर ज़ींदा रहने के लिए हमें कुछ तो खाना ही पड़ेगा”

“किसके लिए ज़ींदा रहूं, कौन बचा है मेरा?”

“कल मैं भी यही सोच रहा था. पर जब तुम्हे यहा लाया तो जैसे मुझे जीनेका कोई मकसद मिल गया”

“पर मेरा तो कोई मकसद नही.........”

“है क्यों नही? तुम इस दौरान मुझे अच्छा-अच्छा खाना खिलाने का मकसद बना लो... वक्त कट जाएगा. करफ्यू खुलते ही मैं तुम्हे सुरक्षित जहा तुम कहो वहा पहुँचा दूँगा” – राहुल हल्का सा मुस्कुरा कर बोला

आलिया भी उसकी बात पर हल्का सा मुस्कुरा दी और बोली, “चलो हटो अब.... मुझे बनाने दो”

“क्या मैं किसी तरह दिल्ली पहुँच सकती हूँ, मेरी मौसी है वहा?”

“चिंता मत करो, माहोल ठीक होते ही सबसे पहला काम यही करूँगा”

आलिया राहुल की ओर देख कर सोचती है, “कभी सोचा भी नही था कि जिस इंसान से मैं बात भी करना पसंद नही करती, उसके लिए कभी खाना बनाऊंगी”

राहुल भी मन में सोचता है, “क्या खेल है किस्मत का? जिस लड़की को देखना भी पसंद नही करता था, उसके लिए आज कुछ भी करने को तैयार हूँ. शायद यही इंसानियत है”

धीरे-धीरे वक्त बीत-ता है और दोनो अच्छे दोस्त बनते जाते हैं. एक दूसरे के प्रति उनके दिल में जो नफ़रत थी वो ना जाने कहा गायब हो जाती है.

वो २४ घंटे घर में रहते हैं. कभी प्यार से बात करते हैं कभी तकरार से. कभी हंसते हैं और कभी रोते हैं. वो दोनो वक्त की कड़वाहट को भुलाने की पूरी कॉसिश कर रहे हैं.

एक दिन राहुल आलिया से कहता है, “तुम चली जाओगी तो ना जाने कैसे रहूँगा मैं यहा. तुम्हारे साथ की आदत सी हो गयी है. कौन मेरे लिए अच्छा-अच्छा खाना बनाएगा. समझ नही आता कि मैं तब क्या करूँगा?”

“तुम शादी कर लेना, सब ठीक हो जाएगा”

“और फिर भी तुम्हारी याद आई तो?”

“तो मुझे फोन किया करना”

आलिया को भी राहुल के साथ की आदत हो चुकी है. वो भी वहा से जाने के ख्याल से परेशान तो हो जाती है, पर कहती कुछ नही.

एक महिने बादः --

"जरीना, उठो दिन में भी सोती रहती हो"

"क्या बात है? सोने दो ना"

"करफ्यू खुल गया है. मैं ट्रेन की टिकट बुक करा कर आता हूँ. तुम किसी बात की चिंता मत करना, मैं जल्दी ही आ जाऊंगा"

"अपना ख्याल रखना राहुल"

"ठीक है…सो जाओ तुम कुंभकारण कहीं की ...हा..हा..हा...हा…."

"वापिस आओ मैं तुम्हे बताती हूँ" --- आलिया राहुल के उपर तकिया फेंक कर बोलती है

राहुल हंसते हुवे वहा से चला जाता है.जब वो वापिस आता है तो आलिया को किचन में पाता है

"बस ५ दिन और…फिर तुम अपनी मौसी के घर पर होगी"

"५ दिन और का मतलब? ……मुझे क्या यहा कोई तकलीफ़ है?"

"तो रुक जाओ फिर यहीं…अगर कोई तकलीफ़ नही है तो"

आलिया राहुल के चेहरे को बड़े प्यार से देखती है. उसका दिल भावुक हो उठता है.

"क्या तुम चाहते हो कि मैं यहीं रुक जाऊ?"

"नही-नही मैं तो मज़ाक कर रहा था बाबा. ऐसा चाहता तो टिकट क्यों बुक कराता?" -- ये कह कर राहुल वहा से चल देता है. उसे पता भी नही चलता की उसकी आँखे कब नम हो गयी.

इधर आलिया मन ही मन कहती है, “तुम रोक कर तो देखो मैं तुम्हे छोड कर कहीं नही जाऊंगी”

वो ५ दिन उन दोनो के बहुत भारी गुज़रते हैं. राहुल आलिया से कुछ कहना चाहता है, पर कुछ कह नही पाता. आलिया भी बार-बार राहुल को कुछ कहने के लिए खुद को तैयार करती है पर राहुल के सामने आने पर उसके होन्ट सिल जाते हैं.

जिस दिन आलिया को जाना होता है, उस से पिछली रात दोनो रात भर बाते करते रहते हैं. कभी कॉलेज के दिनो की, कभी फिल्मो की और कभी क्रिकेट की. किसी ना किसी बात के बहाने वो एक दूसरे के साथ बैठे रहते हैं. मन ही मन दोनो चाहते हैं कि काश किसी तरह बात प्यार की हो तो अच्छा हो. पर बिल्ली के गले में घंटी बाँधे कौन ? दोनो प्यार को दिल में दबाए, दुनिया भर की बाते करते रहते हैं.

सुबह ६ बजे की ट्रेन थी. वो दोनो ४ बजे तक बाते करते रहे. बाते करते-करते उनकी आँख लग गयी और दोनो बैठे-बैठे सोफे पर ही सो गये.

कोई ५ बजे राहुल की आँख खुलती है. उसे अपने पाँव पर कुछ महसूस होता है.वो आँख खोल कर देखता है कि आलिया ने उसके पैरो पर माथा टिका रखा है

“अरे!!!!!! ये क्या कर रही हो?”

“अपने खुदा की इबादत कर रही हूँ, तुम ना होते तो मैं आज हरगिज़ जींदा ना होती”

“मैं कौन होता हूँ जरीना, सब उस भगवान की कृपा है, चलो जल्दी तैयार हो जाओ, ५ बज गये हैं, हम कहीं लेट ना हो जायें”

आलिया वहा से उठ कर चल देती है और मन ही मन कहती है, “मुझे रोक लो राहुल”

“क्या तुम रुक नही सकती जरीना...बहुत अच्छा होता जो हम हमेशा इस घर में एक साथ रहते.” राहुल भी मन में कहता है.

हजारो जिंदगियो के लिये शाप बना यह दंगा राहुल और जरिना के लिये एक नयी जिंदगी बनता हे.एक अनोखा बंधन दोनो के बीच जुड़ चुका है.

५:३० बजे राहुल, आलिया को अपनी बाइक पर रेलवे स्टेशन ले आता है.
आलिया को रेल में बैठा कर राहुल कहता है, “एक सर्प्राइज़ दूं”

“क्या? ”

“मैं भी तुम्हारे साथ आ रहा हूँ”

“सच!!!!”

“और नही तो क्या… मैं क्या ऐसे माहोल में तुम्हे अकेले दिल्ली भेजूँगा”

“तुम इंसान हो कि खुदा…कुछ समझ नही आता”

“एक मामूली सा इंसान हूँ जो तुम्हे…………”

“तुम्हे… क्या?” आलिया ने प्यार से पूछा

“कुछ नही”

राहुल मन में कहता है, “……….जो तुम्हे बहुत प्यार करता है”

जो बात आलिया सुन-ना चाहती है, वो बात राहुल मन में सोच रहा है, ऐसा अजीब प्यार है उसका.

ट्रेन चलती है. राहुल और आलिया खूब बाते करते हैं….बातो-बातो में कब वो दिल्ली पहुँच जाते हैं….उन्हे पता ही नही चलता

ट्रेन से उतरते वक्त आलिया का दिल भारी हो उठता है. वो सोचती है कि पता नही अब वो राहुल से कभी मिल भी पाएगी या नही.

“अरे सोच क्या रही हो…उतरो जल्दी” राहुल ने कहा.

आलिया को होश आता है और वो भारी कदमो से ट्रेन से उतरती है.

“चलो अब सिलमपुर के लिए ऑटो करते हैं” राहुल ने एक ऑटो वाले को इशारा किया.

“क्या तुम मुझे मौसी के घर तक छोड़ कर आओगे?”

“और नही तो क्या… इसी बहाने तुम्हारा साथ थोड़ा और मिल जाएगा”

आलिया ये सुन कर मुस्कुरा देती है.

राहुल के इशारे से एक ऑटो वाला रुक जाता है और दोनो उसमे बैठ कर सिलमपुर की तरफ चल पड़ते हैं.

आलिया रास्ते भर किन्ही गहरे ख़यालो में खोई रहती है. राहुल भी चुप रहता है.

एक घंटे बाद ऑटो वाला सिलमपुर की मार्केट में ऑटो रोक कर पूछता है, “कहा जाना है… कोई पता-अड्रेस है क्या?”

“ह्म्म…..भैया यही उतार दो. राहुल, मौसी का घर सामने वाली गली में है” आलिया ने कहा.

"शुक्र है तुम कुछ तो बोली." राहुल ने कहा.

"तुम भी तो चुप बैठे थे मोनी बाबा बन कर...क्या तुम कुछ नही बोल सकते थे."

"अच्छा-अच्छा अब उतरो भी...ऑटो वाला सुन रहा है." दोनो के बीच तकरार शुरू हो जाती है.

आलिया ऑटो से उतरती है. "राहुल आइ आम सॉरी पर तुम कुछ बोल ही नही रहे थे."

"ठीक है कोई बात नही. शांति से अपने घर जाओ...मुझे भूल मत जाना."

"तुम्हे भूलना भी चाहूं तो भी भुला नही पाउंगी"

"देखा हो गयी ना अपनी बाते शुरू." राहुल ने मुस्कुराते हुवे कहा.

आलिया ने उस गली की और देखा जिसमे उसकी मौसी का घर था और गहरी साँस ली. "चलु मैं फिर"

थोड़ी देर दोनो में खामोशी बनी रहती है. राहुल आलिया को देखता रहता है. "जाते जाते कुछ कहोगी नही" राहुल ने कहा.

"राहुल अब क्या कहूँ…तुम्हारा शुक्रिया करूँ भी तो कैसे, समझ नही आता"

"शुक्रिया उस खुदा का करो जिसने हमे इंसान बनाया है…. मेरा शुक्रिया क्यों करोगी?"

"कभी खाना बुरा बना हो तो माफ़ करना, और जल्दी शादी कर लेना, तुम अकेले नही रह पाओगे"

"ठीक है..ठीक है….अब रुलाओगि क्या.. चलो जाओ अपनी मौसी के घर"

"ठीक है राहुल अपना ख्याल रखना और हां मैने जो उस दिन तुम्हारे सर पर फ्लॉवर पॉट मारा था उसके लिए मुझे माफ़ कर देना"

"और उस हॉकी का क्या?"

आलिया शर्मा कर मुस्कुरा पड़ती है और कहती है, "हां उसके लिए भी"

"ठीक है बाबा जाओ अब…. लोग हमें घूर रहे हैं"

आलिया भारी कदमो से मूड कर चल पड़ती है और राहुल उसे जाते हुवे देखता रहता है.

वो उसे पीछे से आवाज़ देने की कोशिश करता है पर उसके मूह से कुछ भी नही निकल पाता.

आलिया गली में घुस कर पीछे मूड कर राहुल की तरफ देखती है. दोनो एक दूसरे को एक दर्द भरी मुस्कान के साथ अलविदा करते हैं. उनकी दर्द भारी मुस्कान में उनका अनौखा

प्यार उभर आता है. पर दोनो अभी भी इस बात से अंजान हैं कि वो ना चाहते हुवे भी एक अनोखे बंधन में बँध चुके हैं. प्यार के बंधन में.

जब आलिया गली में ओझल हो जाती है तो राहुल मूड कर भारी मन से चल पड़ता है.

“पता नही कैसे जी पाऊंगा आलिया के बिना मैं? काश! एक बार उसे अपना दिल चीर कर दीखा पाता…क्या वो भी मुझे प्यार करती है? लगता तो है. पर कुछ कह नही सकते”राहुल चलते-चलते सोच रहा है.

अचानक उसे पीछे से आवाज़ आती है

“राहुल!!! रूको….”

राहुल मूड कर देखता है.

उसके पीछे आलिया खड़ी थी. उसकी आँखो से आँसू बह रहे थे.

“अरे तुम रो रही हो… तुम्हे तो अपने, अपनो के पास जाते वक्त खुश होना चाहिए”

“तुम से ज़्यादा मेरा अपना कौन हो सकता है राहुल… मुझे खुद से दूर मत करो”
राहुल की भी आँखे छलक उठती हैं और वो दौड़ कर आलिया को गले लगा कर

कहता है, “क्यों जा रही थी फिर तुम मुझे छोड कर?”

“तुम मुझे रोक नही सकते थे?” आलिया ने गुस्से में पूछा.

“रोक तो लेता पर यकीन नही था कि तुम रुक जाओगी”

“तुम कह कर तो देखते” आलिया सुबक्ते हुवे बोली.

“ओह्ह…आलिया आइ लव यू…”

“पता नही क्यों.... बट आइ लव यू टू राहुल” आलिया ने कहा.

“मुझे कुछ समझ नही आ रहा था कि वापिस कैसे जाऊंगा”

“और मैं सोच रही थी कि तुम्हारे बिना कैसे जी पाउंगी”

“अच्छा हुवा तुम वापिस आ गयी वरना दिल्ली से मेरी लाश ही जाती”

“ऐसा मत कहो… मैं वापिस क्यों नही आती. अम्मी,अब्बा और फातिमा को तो खो चुकी हूँ, तुम्हे नही खो सकती राहुल”

उन्हे उस पल किसी बात का होश नही रहता. प्यार और होश शायद मुश्किल से साथ चलते हैं.

“पता है…मैं तुम्हे बिल्कुल लाइक नही करता था”

“मैं भी तुमसे बहुत नफ़रत करती थी”

“ऐसा कैसे हो गया? ये सब सपना सा लगता है” राहुल ने कहा

“ये तो पता नही…पर मुझे हमेशा अपने पास रखना राहुल, तुम्हारे बिना मैं नही जी सकती”

“तुम मेरी जींदगी हो जरीना, मेरे पास नही तो और कहा रहोगी”

“पर अब हम जाएँगे कहा…. मुझे नही लगता कि हम दोनो उस नफ़रत के माहोल में रह पाएँगे?”

“चिंता मत करो, प्यार हुवा है तो इस प्यार के लिए कोई ना कोई सुकून भरा आशियाना भी ज़रूर मिल जाएगा”

दोनो हाथो में हाथ ले कर चल पड़ते हैं किसी अंजानी राह पर जिसकी मंज़िल का भी उन्हे नही पता. प्यार की राह पर मंज़िल की वैसे परवाह भी कौन करता है.जिस तरह नदी पहाड़ को चीर कर अपना रास्ता बना लेती है. उसी तरह प्यार भी इस कठोर दुनिया में अपने लिए रास्ते निकाल ही लेता है. तभी शायद इतनी नफ़रत के बावजूद भी दुनिया में प्यार… आज भी ज़ींदा है.

राहुल और आलिया एक दूसरे का हाथ थाम कर चल दिए. पर उन्हे जाना कहा था ये वो तैय नही कर पाए थे. नया नया प्यार हुवा था वो दोनो अभी बस उसमें खोए थे. जींदगी की कठोर सचाईयों का सामना उन्हे अभी करना था.

“वापिस चले क्या जरीना?”

“तुम्हे क्या लगता है लोग हमें वहा जीने देंगे. मैं वहा नही रह पाउंगी अब.”

“पर यहा हमारा कुछ नही है. घर बार सब गुजरात में ही है. यहा पैर जमाना मुश्किल होगा.”

“हम कोशिश तो कर ही सकते हैं.”

“ठीक है ऐसा करते हैं फिलहाल किसी होटेल में चलते हैं और ठंडे दिमाग़ से सोचते हैं कि आगे क्या करना है.”

“हां ये ठीक रहेगा. मैं बहुत थक भी गयी हूँ. बहुत जोरो की भूक भी लगी है.”

“चलो पहले खाना ही खाया जाए. फिर होटेल चलेंगे.”

“हां बिल्कुल चलो.”

दोनो एक रेस्टोरेंट में बैठ जाते हैं और शांति से भोजन करते हैं.

“दाल मखनी का कोई जवाब नही. नॉर्थ इंडिया में बहुत पॉपुलर है ये.”

“हां अच्छी बनी है. मैं इस से भी अच्छी बना सकती हूँ.”

“तुमने घर तो कभी बनाई नही.”

“सीखूँगी ना जनाब तभी ना बनाऊंगी. मुझे यकीन है मैं इस से अच्छा बना लूँगी.”

बातो बातो में खाना हो जाता है और दोनो अब एक होटेल की तलाश में निकलते हैं.

"यहा शायद ही कोई अच्छा होटेल मिले. कही और चलते हैं." आलिया ने कहा.

"तुम्हे कैसे पता."

"जनाब मेरी मौसी के यहा आती रहती हूँ मैं, पता कैसे ना होगा."

"ओह हां बिल्कुल. चलो कही और चलते हैं." राहुल ने कहा.

दोनो ऑटो पकड़ कर लक्ष्मीनगर पहुँचते हैं और वहा एक होटेल में कमरा ले लेते हैं. रात घिर आई है और प्यार के दो पंछी रात में आशियाना पा कर खुश हैं.

जब राहुल और आलिया कमरे की तरफ जा रहे होते हैं तो आलिया कहती है, "तुम्हे नही लगता कि हमें दो कमरो की ज़रूरत थी."

"क्यों अब तुम क्या मुझसे अलग रहोगी. इस प्यार का कोई मतलब नही है क्या तुम्हारे लिए."

"प्यार हुवा है शादी नही…हे..हे…हे." आलिया ने हंसते हुवे कहा.

"शादी भी जल्द हो जाएगी. तुम कहो तो अभी कर लेते हैं."

"नही…नही मैं मज़ाक कर रही थी. चलो अंदर." आलिया ने कहा.

रूम में आते ही आलिया बिस्तर पर पसर गयी और बोली, "ये बिस्तर मेरा है. तुम अपना इंतजाम देख लो."

"बहुत खूब …मैं क्या फर्श पर लेटुंगा." राहुल भी आलिया के बाजू में आ कर लेट गया.

आलिया फ़ौरन बिस्तर से उठ गयी.

“प्यार का मतलब ये नही है कि हम एक साथ सोएंगे. मैं सोफे पर जा रही हूँ. तुम चैन से लेटो यहा .”

“अरे रूको मैं मज़ाक कर रहा था. तुम लेटो यहा. सोफे पर मैं सो जाऊंगा.” राहुल बिस्तर से उठ जाता है.

“पक्का…फिर मत कहना कि मैने बिस्तर हथिया लिया.” आलिया मुस्कुराई.

“मेरा दिल हथिया लिया तुमने बिस्तर तो बहुत छोटी चीज़ है. जाओ ऐश करो.” राहुल भी मुश्कराया.

प्यार और तकरार दोनो साथ साथ चल रहे थे. जब प्यार होता है तो प्यार को तरह तरह से आजमाया भी जाता है. ऐसा ही कुछ आलिया और राहुल के प्यार के साथ होने वाला था. वो दोनो तो इस बात से बिल्कुल अंज़ान थे. नया नया प्यार हुवा था. और नया प्यार अक्सर सोचने समझने की शक्ति ख़तम कर देता है. सुरूर ही कुछ ऐसा होता है प्यार का. लेकिन ऐसे नाज़ुक वक्त में थोड़ी सी भी ग़लत फ़हमी या टकराव प्यार को मिंटो में कड़वाहट में बदल सकती है. प्यार इतना गहरा तो होता नही है कि संभाल पाए. इसलिये नया नया प्यार अक्सर शुरूवात में ही बिखर जाता है. अभी तक तो सब ठीक चल रहा लेकिन अगले दिन राहुल और आलिया के प्यार का इम्तिहान था. जिसमे पास होना बहुत ज़रूरी था.

अगले दिन दोनो बड़े प्यार से उठे. गुड मॉर्निंग विश किया. नहाए धोए. ब्रेकफास्ट किया और फिर आगे का सोचने लगे.

"राहुल हमारी पढ़ाई का क्या होगा."

"तभी तो मैं वापिस जाने की सोच रहा था. अब तो शांति है वहा."

"लेकिन मैं अगर वहा तुम्हारे साथ रहूंगी तो लोग तरह तरह की बाते करेंगे."

"तो क्या हुवा हम शादी करके रहेंगे एक साथ यू ही थोड़ा रहेंगे."

"लेकिन वहा अभी भी तनाव बना हुवा है. ऐसे में हमारे रिश्ते को कोई नही समझेगा."

"फिर ऐसा करते हैं कि पहले पढ़ाई पूरी करते हैं. फिर आगे का सोचते हैं."

"मैं कहा रहूंगी. मेरा घर तो बुरी तरह जल चुका है. और वहा कोई और नही है जिसके पास मैं रुक पाउ."

"हॉस्टेल हैं ना कॉलेज का दिक्कत क्या है."

"ओह हां ये बात तो मैने सोची ही नही. हां मैं हॉस्टेल में रह सकती हूँ."

“चलो छोड़ो ये सब. चलो घूम कर आते हैं कही. आते हुवे वापसी की ट्रेन का टिकट भी बुक करवा लेंगे.”

“कही हम जल्दबाज़ी में तो फ़ैसला नही ले रहे.”

“फ़ैसला तो हमें लेना ही है. मुझे इस से बेहतर रास्ता नही लगता. तुम कुछ सूझा सकती हो तो बोलो.”

“हां वैसे हमारी पढ़ाई के लिहाज़ से ये ठीक है…चलो कहा घूमने चलोगे” आलिया ने कहा

“लाल किला नही देखा मैने अब तक चलो वही चलते हैं.” राहुल ने कहा.

“मैने देखा है एक बार. तुम्हारे साथ देखने में और मज़ा आएगा चलो.”

दोनो लाल किला घूमने निकल पड़े. जब वो लाल किले से बाहर आए तो दोनो को जोरो की भूक लग चुकी थी.

“राहुल चलो अब खाना खाया जाए. एक रेस्टोरेंट है यही पास में वहा हर तरह का खाना मिलता है. चलो.”

राहुल और आलिया एक रिक्षा ले कर उस रेस्टोरेंट पर पहुँचते हैं. लेकिन रेस्टौरा को देखते ही राहुल सोच में पड़ जाता है. रेस्टोरेंट में वेज और नॉन-वेज दोनो तरह का खाना था. राहुल था पंडित इसलिये वो थोड़ा सोच में पड़ गया. लेकिन आलिया की खातिर रेस्टोरेंट में घुस्स गया.

“आलिया तुम ऑर्डर दो मैं वॉश रूम हो कर आता हूँ.”

“क्या लोगे तुम ये तो बताते जाओ.”

“मंगा लो कुछ भी.”

आलिया ये तो जानती ही थी कि राहुल शाकाहारी है. उसने उसके लिए वेज खाना ऑर्डर कर दिया और अपने लिए चिकन कढ़ाई और तंदूरी नान ऑर्डर कर दिया. यही से सारी मुसीबत शुरू होने वाली थी. राहुल जब तक वापिस आया तब तक उसका खाना आ चुका था. जैसे ही राहुल बैठा आलिया का ऑर्डर भी आ गया. जब इंतजारर ने चिकन कढ़ाई टेबल पर रखी तो राहुल की तो आँखे फटी रह गयी. उसका मन खराब हो गया.

"ये तुमने ऑर्डर किया है."

"हां…ये मेरी फेवरिट डिश है."

"अफ…मैं यहा एक मिनिट भी नही बैठ सकता." राहुल वॉश रूम की तरफ भागता है. उसे उल्टी आ जाती है. पंडित होने के कारण वो हमेशा नॉन वेज चीज़ो से दूर ही रहा था. उसके साथ ऐसा होना स्वाभाविक ही था.

राहुल वापिस आया और बोला, "उठो मैं यहा खाना नही खाऊंगा."

"क्या हो गया राहुल कुछ बताओ तो सही. बैठो तो."

"ये नॉन वेज मेरी आँखो के आगे से हटा लो. मुझे ग्लानि होती है. कैसे खा सकती हो तुम एक जीव को. तुम्हे ग्लानि नही होती"

आलिया ने चिकन कढ़ाई पर प्लेट रख दी और बोली, "कैसी बात कर रहे हो. इसमे ग्लानि की क्या बात है."

राहुल बैठ गया और बोला, "मैं ये सब बर्दाश्त नही कर सकता. तुम्हे ये सब छोड़ना होगा."

"क्यों छोड़ना होगा. ये भोजन है और कुछ नही. आइ लाइक इट."

"पर ये किसी की हत्या करके बनता है. ये पाप है."

"पता नही कौन सी दुनिया में जी रहे हो तुम. मैने तो बहुत पंडित लोगो को खाते देखा है नॉन वेज."

“खाते होंगे पर मैं बिल्कुल नही खाता.”

“तो मत खाओ तुम मुझे नही रोक सकते.”

“तुम समझती क्यों नही. अपने खाने के लिए क्या किसी जीव की हत्या ठीक है.”

“मिस्टर राहुल पांडे एक बात बताओ. क्या अनाज़ में जान नही होती. क्या पेड ज़ींदा नही होते. जिस पेड़ से फ्रूट तोड़े जाते हैं क्या वो जींदा नही हैं. मार्स पर घास का एक तिनका भी नही उगता. एक घास का तिनका भी उतना ही जींदा है जितना की चिकन. अब बताओ क्या कुछ ग़लत कहा मैने.”

“मुझे नही पता लेकिन मुझे ये सब बर्दाश्त नही है.”

“ये तुम्हारी प्रॉब्लेम है मेरी नही.” आलिया ने कहा.

प्यार बड़ी जल्दी अपना हक़ जताने लगता है. यही बात अक्सर टकराव का कारण बन जाती है. राहुल आलिया पर हक़ तो जता रहा था पर उसने ग़लत वक्त चुन लिया था. आलिया के लिए अपने भोजन को डिफेंड करना स्वाभाविक था. ये बात राहुल की समझ में नही आ रही थी.

आलिया की भी ग़लती थी. वो ये नही समझ पा रही थी कि राहुल का रीअँक्शन नॅचुरल है. उसे बहस में पड़ने की बजाए थोड़ा शांति से काम लेना चाहिए था. लेकिन ये बाते कहनी आसान हैं और करनी मुश्किल.

राहुल फ़ौरन उठ कर बाहर आ गया. राहुल को सामने ही हनुमान जी का मंदिर दीखाई दिया और वो मंदिर में घुस्स गया.आलिया को इतना बुरा लगा कि वो भी बिना खाना खाए बिल पे करके बाहर आ गयी. बाहर आकर राहुल को ना पाकर उसकी आँखो में खून उतर आया.

“बस इतना ही प्यार था इसे मुझसे. चला गया छोड़ के मुझे. मैं ऐसे इंसान के साथ जींदगी नही बीता सकती.”

गुस्से में अक्सर हम सही फ़ैसला नही कर पाते और अपनी सोचने समझने की ताक़त खो बैठते हैं. आलिया इतने गुस्से में थी कि उसने तुरंत मौसी के घर जाने का फ़ैसला कर लिया. उसने ऑटो पकड़ा और सिलमपुर की तरफ चल पड़ी. हालाँकि ये बात और थी कि रास्ते भर उसकी आँखे टपकती रही.

राहुल सोच रहा था कि आलिया अंदर चैन से बैठ कर खाना खा रही होगी. इसलिये वो मंदिर से आराम से निकला. उसने रेस्टोरेंट के बाहर से ही झाँक कर देखा. आलिया वहा होती तो दीखती. उसने अंदर आ कर पता किया. उसे बताया गया कि वो तो खाना खा कर चली गयी. अब इंतजाररर बहुत बिज़ी रहते हैं. उन्हे क्या मतलब किसी ने खाना खाया या नही. उसके मूह से निकल गया कि वो खाना खा कर चली गयी. राहुल के सिने पर तो जैसे साँप लेट गया.

उसने बाहर आ कर देखा लेकिन आलिया कही दीखाई नही दी. "ये प्यार इतनी जल्दी भिखर जाएगा मैने सोचा नही था."

राहुल ऑटो लेकर होटेल की तरफ चल दिया. उसे उम्मीद थी कि आलिया उसे होटेल में ही मिलेगी. लेकिन होटेल पहुँच कर वो दंग रह गया. आलिया वहा होती तो मिलती. वो तो अपनी मौसी के घर पहुँच भी गयी थी और वहा उसका बड़े जोरो का स्वागत भी हो रहा था.

राहुल बेचारा अकेला बिस्तर पर लेट गया. "शायद वो चली गयी अपनी मौसी के यहा. अगर यही सब करना था तो कल मेरे साथ आई ही क्यों थी. कल ही चली जाती. चलो अच्छा ही हुवा. उसके साथ निभाना वैसे भी मुश्किल था." ये बाते राहुल सोच तो रहा था लेकिन सोचते सोचते उसकी अंजाने में ही आँखे भर आई थी.

"आलिया क्यों किया तुमने मेरे साथ ऐसा. तुम तो ऐसी नही थी. मुझे छोड़ कर चली गयी. क्या यही प्यार था तुम्हारा. मैं तुम्हे कभी माफ़ नही करूँगा."

आलिया और राहुल दोनो को ही प्यार ने बड़ी गहरी चोट दी थी. इधर राहुल रो रहा था उधर आलिया की भी हालत खराब थी. उसे लोगो ने घेर रखा था. उस से पूछा जा रहा था कि वो दंगो से कैसे बची. आलिया ऐसी हालत में नही थी कि कुछ भी कहे. उसका तो दिल बहुत भारी हो रहा था. वो कई बार वॉश रूम में आकर चुपचाप सूबक सूबक कर रोई.

इस तरह प्यार के इंतेहाँ में राहुल और आलिया का प्यार फेल हो गया था. और इस फेल्यूअर के बाद दोनो का ही बहुत बुरा हाल था. दोनो के दिलो में एक दूसरे के लिए नफ़रत उभरने लगी थी लेकिन आँखे थी कि प्यार में आँसू बहा रही थी. प्यार भी अजीब खेल खेलता है.

प्यार को समझना बहुत मुश्किल काम है. ये बात वही समझ सकते हैं जो कभी प्यार के पचडे में पड़े हों. आलिया चली तो आई थी गुस्से में अपनी मौसी के घर लेकिन उसके दिल पर राहुल से दूर हो कर जो बीत रही थी उसे सिर्फ़ वो ही जानती थी. ऐसा नही था कि नाराज़गी दूर हो गयी थी उसकी. वो तो ज्यों की त्यों बरकरार थी. लेकिन फिर भी रह-रह कर वो राहुल की यादों में खो जाती थी.

मौसी के यहा आलिया को गुमसुम देख कर सभी परेशान थे. उन्हे लग रहा था कि आलिया ज़रूर कुछ छुपा रही है. लोग अंदाज़ा लगा रहे थे कि शायद दंगो के दौरान कुछ अनहोनी हो गयी होगी उसके साथ, जिसे वो छुपा रही है. इसलिये लोगो ने उस से सवाल पूछने बंद कर दिए. उन्हे क्या पता था की आलिया की छुपी का कारण राहुल है.

आलिया कोशिश तो खूब कर रही थी हँसने की मुस्कुराने की लेकिन बार बार उसका दिल भारी हो उठता था.

"बेटा तू कुछ बोल क्यों नही रही है. जब से आई है गुमसूम सी है. हमें बता तो सही की क्या बात है." आलिया की मौसी ने पूछा.

"मौसी कुछ नही बस वैसे ही परेशान हूँ." आलिया ने कहा.

"अम्मी और अब्बा की याद आ रही होगी है ना. फातिमा का सुन कर बहुत दुख हुवा मुझे. अल्ला उन्हे माफ़ नही करेंगे जिन्होने फातिमा के साथ ये सब किया."

"मुझे वो सब याद ना दिलाओ मौसी. बड़ी मुश्किल से भूली हूँ मैं वो सब." बोलते-बोलते आलिया की आँखो में आँसू उतर आए.

मौसी ने आलिया को गले से लगा लिया और बोली, "मेरी प्यारी बच्ची…चल छोड़ ये उदासी कुछ खा पी ले."

“मुझे भूक नही है मौसी अभी.” आलिया ने कहा.

“चल ठीक है. जब तेरी इच्छा हो तब खा लेना….ठीक है. थोड़ा आराम कर ले, बहुत थक गयी होगी. तेरे लिए वही कमरा तैयार करवा दिया है जहा तू हर बार आ कर रहती है… ठीक है.”

“शुक्रिया मौसी” आलिया मुस्कुरा दी.

आलिया कमरे में आ कर बिस्तर पर गिर गयी और फिर आँसुओ का वो तूफान उठा की थमे नही थमा. “क्यों किया राहुल तुमने ऐसा मेरे साथ. बहुत प्यार करती हूँ तुम्हे में…फिर आख़िर क्यों”

अब आलिया के पास राहुल तो था नही जो कोई जवाब देता. प्यार के गम में डूबी हुई आलिया रोते हुवे सवाल पे सवाल किए जा रही थी जिनका उसे कोई जवाब नही मिल रहा था. बहुत रुला रहा था प्यार बेचारी को.

राहुल की भी हालत कम नाज़ुक नही थी. पेट में चूहे कूद रहे थे लेकिन मज़ाल है कि मूह पे खाने का नाम आए. प्यार भूक प्यास सब भुला देता है. वो भूके पेट होटेल के बिस्तर पर पड़ा हुवा करवट बदल रहा था. पता नही उसे ऐसा क्यों लग रहा था कि अभी दरवाजा खुलेगा और आलिया अंदर आएगी. जब भी उसे अपने कमरे के बाहर आहट सुनाई देती तो वो फ़ौरन उठ कर देखता.वो दाए-बाए हर तरफ बड़े गौर से देखता. अब आलिया वहा होती तो दीखती. हर बार निराश और हताश हो कर राहुल वापिस अपने बिस्तर पर गिर जाता. हालत तो राहुल की भी बिल्कुल आलिया जैसी ही थी बस फ़र्क इतना था कि उसकी आँखे इतनी नही बरस रही थी जीतनी की आलिया की. हां ये बात ज़रूर थी कि उसकी आँखो में हर वक्त नमी बनी हुई थी. आँसू भी टपकते थे रह-रह कर जब दिल बहुत भावुक हो उठता था.

“आलिया तुम्हे मुझे यू छोड़ कर नही जाना चाहिए था. मेरे बारे में तुमने एक बार भी नही सोचा. कितना प्यार करता हूँ तुम्हे और फिर भी तुमने ऐसा किया. तुम्हे माफ़ नही कर पाऊंगा मैं.” राहुल ने अपनी आँखो के नीचे से आँसुओ की बूँदो को पोंछते हुवे कहा.

धीरे धीरे कब रात घिर आई पता ही नही चला. पूरी रात आलिया को नींद नही आई. राहुल भी सो नही पाया. हां ऐसा होता है. प्यार कभी-कभी नींद भी छीन लेता है. ऐसी नाज़ुक

हालत में सोना वैसे भी नामुमकिन था.

प्यार की एक इंट्रेस्टिंग बात ये भी होती है की सब नाराज़गी और नफ़रत सिर्फ़ उपर का दिखावा होती है. दिल की गहराई में कुछ ऐसी तड़प होती है एक दूसरे के लिए की उसे शब्दो में नही कहा जा सकता. ये बात कोई प्यार करने वाला ही समझ सकता है.

सुबह होते होते राहुल और आलिया दोनो का ही गुस्सा ठंडा पड़ने लगा था. आलिया ने फ़ैसला किया कि वो दिन निकलते ही होटेल जाएगी और राहुल के गले लग जाएगी और उस से खूब लड़ाई करेगी. बस दिक्कत की बात सिर्फ़ ये थी कि वो घर से निकले कैसे. कोई उसे अकेले कही जाने नही देगा और किसी को साथ लेकर वो राहुल के पास जा नही सकती थी. इसलिये जैसे ही दिन निकला वो चुपचाप घर से निकल पड़ी. दिल्ली में ऑटो तो सारी रात चलते हैं. सुबह सुबह ऑटो मिलने में कोई दिक्कत नही हुई.

पर दिक्कत ये आन पड़ी कि ऑटो वाला आलिया को लक्ष्मीनगर की बजाए कही और ही ले आया. दरअसल ऑटो वाला नया था. उसे लक्ष्मीनगर की लोकेशन ठीक से पता नही थी बस यू ही अपने पैसे बनाने के चक्कर में चल पड़ा था अंदाज़े से.

“भैया ये कहा ले आए तुम मुझे ये लक्ष्मीनगर तो नही लग रहा.”

“ओह…ये लक्ष्मीनगर नही है क्या. ग़लती हो गयी मेडम”

ऑटो वाले ने दूसरे ऑटो वाले से लक्ष्मी नगर का रास्ता पूछा और फिर ऑटो को लेकर चल पड़ा.

होटेल पहुँचते पहुँचते सुबह के ९ बज गये. आलिया ने तुरंत ऑटो वाले को पैसे पकड़ाए और होटेल में घुस्स कर सीधा अपने उस रूम की तरफ चल पड़ी जिसमे राहुल और वो एक साथ रुके थे. लेकिन पीछे से रीसेपशन पर खड़ी एक युवती ने उसे टोक दिया.

“एकस्क्युज मी मेडम, आप कहा जा रही हैं.”

आलिया मूडी और बोली, “रूम नो ११४ में ठहरी हूँ मैं.”

“ओह हां मैं भूल गयी सॉरी. पर आपके साथ जो थे वो जा चुके हैं रूम छोड़ कर.”

“क्या?” आलिया के तो पैरो के नीचे से जैसे ज़मीन ही निकल गयी.

“कब गये वो?”

“बस अभी अभी निकले हैं”

“कहा गये वो?” आलिया का तो दिमाग़ ही घूम गया था.

“मेडम शायद आपने ठीक से सुना नही. वो चेक-आउट करके जा चुके हैं. अब कहा गये हैं हमें नही पता.”

आलिया चेहरा लटकाए हुवे होटेल से बाहर आ गयी.

“मेरा ज़रा सा भी इंतेजार नही किया तुमने राहुल. क्यों प्यार किया मैने तुमसे.” आलिया की आँखे फिर से भर आई.

बड़ा ही अजीब सा कुछ हो रहा था राहुल और आलिया के साथ. आलिया होटेल पहुँच गयी थी और राहुल सिलमपुर. बात सिर्फ़ इतनी थी कि दोनो ग़लत समय पर सही जगह पर थे.

राहुल को आलिया की मौसी का घर तो पता था नही. हां बस गली का पता था. राहुल पीठ पर बॅग टांगे गली में चक्कर लगा रहा था. उसने किसी से आलिया की मौसी के घर के बारे में पूछने की जहमत नही उठाई. वो बस बार बार गली के चक्कर लगा रहा था.

“क्या वो मुझे भूल गयी इतनी जल्दी. बाहर आकर तो देखना चाहिए उसे मैं कब से घूम रहा हूँ यहा.”

राहुल को एक बार भी ये ख्याल नही आया की आलिया शायद होटेल गयी हो. क्योंकि वो पूरा दिन और पूरी रात इंतजार करता रहा था आलिया का इसलिये शायद उसे ये ख्याल ही नही आया.

अब वो किसी का दरवाजा खड़का कर पूछे भी तो क्या पूछे. क्या ये पूछे कि आलिया की मौसी का घर कहा है. आलिया की मौसी का नाम पता होता तो शायद बात बन जाती. और ये भी पता नही था कि उसके साथ बर्ताव क्या होगा अगर आलिया की मौसी का घर मिल भी गया तो.

"बस समझ ले राहुल उसे तेरी कोई कदर नही है. ये प्यार ख़तम हो चुका है. कुछ नही बचा अब." राहुल ने सोचा.

राहुल भारी मन से गली से बाहर की ओर चल दिया.

दुर्भाग्य की बात ये थी कि इधर राहुल गली से निकल रहा था और उधर गली के दूसरी तरफ से आलिया आ रही थी ऑटो में बैठ कर. दोनो एक दूसरे को ढूंड रहे थे लेकिन ना जाने क्यों मुलाकात नही हो पाई.

राहुल ने गली से बाहर आकर ऑटो पकड़ा. इधर राहुल ऑटो में बैठा, उधर आलिया ऑटो से उतर कर मौसी के घर में वापिस आ गयी.

"मैं ही बेवकूफ़ थी जो निकल पड़ी सुबह सुबह उसके लिए जो मुझे छोड़ कर जा चुका है. इतना बेदर्द निकलेगा ये राहुल मैने सोचा नही था. ये प्यार मेरी जींदगी की सबसे बड़ी ग़लती है." आलिया सोचते हुवे चल रही थी.

"आलिया बेटा कहा गयी थी तू इतनी सुबह सवेरे हमें तो चिंता हो रही थी." आलिया की मौसी ने कहा.

"कही नही मौसी यही पास में ही गयी थी."

"बेटा कुछ तो बात ज़रूर है जो तू छिपा रही है."

"कुछ नही है मौसी आपको वेहम हो रहा है."

"जब तेरा मन हो बता देना बेटा, मुझे तो तेरी बहुत चिंता हो रही है. चल कुछ खा ले."

खाने का मन तो अब भी नही था आलिया का लेकिन फिर भी मौसी का दिल रखने के लिए उसने कुछ खा लिया.

राहुल सीधा रेलवे स्टेशन पहुँचा और किसी तरह से गुजरात की ट्रेन की टिकट का इंतजाम किया. उसे रात की ट्रेन की टिकट मिली किसी तरह से जुगाड़ करके. बहुत बेचैन हो रहा था दिल्ली छोड़ने के ख्याल से. वहा उसकी आलिया जो थी. पर उसे लग रहा था कि प्यार व्यार ख़तम हो चुका है और अब वापिस चलने में ही भलाई है. जब ट्रेन प्लॅटफॉर्म पर पहुँची तो वो बड़े भारी मन से ट्रेन में चढ़ा.

उस वक्त आलिया अपने हाथ की लकीरो को देख रही थी. "शायद किस्मत में तुम्हारा साथ नही लिखा था राहुल. या फिर शायद साथ लिखा था पर हम निभा नही पाए. जो भी हो तुम मुझे यू छोड़ कर चले जाओगे मैने सोचा नही था. आइ हेट यू." और आलिया की आँखे फिर से बहने लगी.

राहुल पहुँच तो गया घर वापिस गुजरात. लेकिन घर की तरफ जाते वक्त उसके पाँव ही नही बढ़ रहे थे आगे. वो जानता था कि आलिया के बिना उस घर में रहना कितना मुश्किल होगा उसके लिए. जब वो घर में घुसा तो वो मंज़र उसकी आँखो में घूम गया जब वो आलिया को साथ लेकर घर से निकल रहा था रेलवे स्टेशन के लिए.

राहुल ने बॅग एक तरफ पटका और सोफे पर गिर गया. वक्त जैसे थम सा गया था और जीवन की खुशियाँ जैसे साथ छोड़ गयी थी. दुनिया ही उजड़ गयी थी राहुल की.

यही हाल कुछ आलिया का था. आलिया भी उस वक्त अपने रूम में बिस्तर पर पड़ी थी. उसका भी ऐसा ही हाल था जैसे कि सब कुछ उजड़ गया हो उसका.

जब मौसी कमरे में घुसी तो वो फ़ौरन उठ कर बैठ गयी. "मौसी आप…सलाम वालेकुम."

"सलाम वालेकुम बेटा, कुछ तो बता सब खैरीयत तो है. तुम तो हमसे कुछ बोल ही नही रही हो. जब से आई हो कमरे में पड़ी रहती हो बस."

अब आलिया बताए भी तो कैसे. उसकी तकलीफ़ का कारण राहुल का प्यार था और उस प्यार को कोई नही समझ सकता था. मौसी को टालने के लिए उसने कहा, "कारण तो आप जानती ही हैं मौसी. सब कुछ खो दिया है मैने."

"अल्लाह रहम करे मेरी बच्ची पर. बहुत कुछ सहा है तुमने जरीना. तुम्हे ज़ींदा देख कर जो खुशी हमें मिली थी वो हम लफ़्ज़ो में बयान नही कर सकते. अब यही दुवा है कि अल्लाह का फ़ज़ल हो तुम पर."

"अल्लाह शायद हम से रूठ गये हैं मौसी. सब कुछ बीखर गया है." आलिया ने कहा.

मौसी आलिया को गले लगा लेती है. "वक्त करवट लेगा बेटी. वक्त हमेशा एक सा नही रहता…आओ थोड़ा बाहर घूम फिर लो. बंद कमरे में घुटन हो जाती है बैठे बैठे."

"ठीक है मौसी आप चलिए मैं आती हूँ." आलिया ने कहा.

बहुत कोशिश की आलिया ने राहुल को भुलाने की और उसे अपनी यादों से हटाने की. लेकिन जब कोई दिल में बस जाता है उसे इतनी आसानी से निकाला नही जा सकता.

कोशिश राहुल भी कर रहा था आलिया को भुलाने की. लेकिन घर के हर कोने में आलिया की यादें बसी थी. वो घर में जहा भी देखता उसे आलिया का ही अहसास रहता. हर कोने में बस आलिया ही बसी थी जैसे. और ना चाहते हुवे भी उसकी आँखे नम हो जाती थी.

भुलाने की कोशिश में एक हफ़्ता बीत गया लेकिन कुछ फायदा हुवा नही. प्यार की तड़प, कसक और मीठी सी बेचैनी हर वक्त बरकरार थी. धीरे धीरे वो दोनो ही ये बात समझने लगे थे कि वो दोनो प्यार के अनोखे बंधन में बँध चुके हैं जिसे वो चाह कर भी नही तोड सकते. उनकी हर कोशिश बेकार जो हो रही थी.

और फिर एक ऐसी तड़प उठी प्यार की जिसने उनके प्यार को और ज़्यादा महका दिया. एक रात ऐसी आई जिसमे दोनो काग़ज़ और कलम लेकर बैठ गये और कुछ लिखने की ठान ली. आलिया को तो राहुल का अड्रेस पता ही था. राहुल ने भी घूम फिर कर किसी तरह आलिया की मौसी का अड्रेस ढूंड ही लिया. दो चिट्ठियाँ लीखी जा रही थी रात के वक्त एक साथ. दिल्ली में आलिया लिख रही थी और गुजरात में राहुल लिख रहा था. हां थोड़ा वक्त का अंतर था. आलिया रात के १२ बजे लिखने बैठी थी और राहुल रात के २ बजे लिखने बैठा था.

अगले दिन चुपके से दोनो ने अपनी अपनी चीठीया पोस्ट कर दी. पहुँचने में ४ दिन लग गये. दोनो बेचैन थे अपनी चिट्ठी का जवाब पाने की लिए. लेकिन उन्हे नही पता था कि दोनो ने एक साथ चिट्ठी लिखी है और दोनो जल्द ही एक दूसरे की चिट्ठी पढ़ने वाले हैं.

पहले राहुल को चिट्ठी मिली आलिया की. घर में बैठा था चुपचाप मूह लटकाए हुवे जब डाकिये ने बेल बजाई घर की.

"राहुल पांडे आप ही का नाम है." डाकिये ने पूछा.

"जी हां बिल्कुल." राहुल ने कहा.

"यहा साइन कर दीजिए, स्पीड पोस्ट आई है आपके नाम."

राहुल ने साइन किए और डाकिये ने चिट्ठी राहुल को पकड़ा दी. जब राहुल ने चिट्ठी के पीछे भेजने वाले का नाम देखा तो आँखो में वो रोनक आ गयी उसके की वो ज़ोर से चिल्लाया "जरीना!"

डाकिये के भी कान फट गये. वो सर हिलाता हुवा चला गया.

राहुल ने फ़ौरन चिट्ठी को लीफाफ़े से निकाला और सोफे पर बैठ कर पढ़ने लगा. चिट्ठी इस प्रकार थी :-

“ मेरे प्यारे **राहुल,**

तुम चले गये ज़रा सी बात पर मुझे छोड़ कर. क्यों किया ऐसा तुमने. किस हाल में हूँ मैं यहा क्या तुम्हे खबर भी है. कोई दिन ऐसा नही जाता जब तुम्हारे लिए आँसू नही बहाती. हर पल तुम्हारे लिए तड़पति रहती हूँ. तुम तो शायद मुझे भूल गये होंगे. मैं तुम्हारे लिए पापी जो हूँ. तुमने एक मौका भी नही दिया मुझे कुछ कहने का और चले गये. दिल पर क्या बीती है कह नही सकती. ये चिट्ठी तुम्हे लिख रही हूँ क्योंकि अपने दिल के हाथो मजबूर हो गयी हूँ. उस दिन लड़ाई के बाद मैं भी फ़ौरन खाना खाए बिना बाहर आ गयी थी. बहुत ढूँढा तुम्हे पर तुम तो जा चुके थे. क्या यही प्यार था तुम्हारा. मैं क्या करती, मौसी के घर आना पड़ा मुझे. अगले दिन भी मैं सुबह सुबह जैसे-तैसे ऑटो लेकर होटेल पहुँची. लेकिन तुम वहा से भी निकल गये चेक आउट करके. मेरा इंतेज़ार भी नही किया तुमने. खून के आँसू रोई हूँ मैं तुम समझ नही सकते. बड़ी मुश्किल से वापिस आई थी मौसी के घर. मन तो कर रहा था कि मर जाऊ कही जाकर पर इस उम्मीद में वापिस आ गयी कि क्या पता तुम मिल जाओ कही.

तुम्हे तो दिखाई थी मौसी की गली मैने. अगर प्यार करते मुझसे तो मुझे ढूंड ही लेते. पर नही तुम्हे तो मुझे छोड़ कर भागने की पड़ी थी. चले गये चुपचाप मुझे छोड़ कर, सोचा भी नही की कैसे जीऊंगी मैं तुम्हारे बिना.और हां मैने नॉन-वेज खाना छोड़ दिया है बिल्कुल. आगे से कभी देखूँगी भी नही नॉन-वेज को, खाने की तो दूर की बात है. मुझे अहसास हो गया है कि तुम ठीक थे. पेड़-पोधो और जीव जंतुओ में कुछ तो फरक रहता ही है. चिकन में जीवन ज़्यादा है एक हरी सब्जी के मुक़ाबले. मैं ये बात समझ गयी खुद ही. तुमने तो बहुत बुरे तरीके से समझाने की कोशिश की थी. मुझे आराम से कहते तो मैं खुशी खुशी तुम्हारे लिए कुछ भी छोड़ देती. नॉन-वेज तो बहुत छोटी चीज़ है राहुल.

अब ये बताओ कि अपनी आलिया को कब ले जाओगे यहा से. मैं खुद आ जाती पर अकेले सफ़र करते हुवे डर लगता है मुझे. कभी अकेले गयी नही कही. बहुत घबराती हूँ मैं ट्रेन में. अगर नही आओगे तो मुझे आना तो पड़ेगा ही. दिल के हाथो मजबूर जो हूँ. इन दीनो में यही जाना है राहुल कि बहुत प्यार करती हूँ मैं तुम्हे और तुम्हारे बिना नही जी सकती. आ जाओ राहुल मैं आँखे बिछाए तुम्हारा इंतेज़ार कर रही हूँ. ले जाओ अपनी आलिया को अपने साथ और जैसे जी चाहे वैसे रखो.

तुम्हारी जरीना.”

राहुल की हालत बहुत नाज़ुक हो गयी पढ़ते-पढ़ते. आँसू टपक रहे थे आलिया के एक-एक बोल पर. बार बार पढ़ा उसने एक एक लाइन को. दिल में प्यार की मीठी मीठी चुभन हो रही थी. कुछ बोल ही नही पा रहा था राहुल, लिखा ही कुछ ऐसा था आलिया ने. उसने वो चिट्ठी सीने से लगा ली और सोफे पर लेट गया.

आलिया को राहुल की चिट्ठी अगले दिन मिली. वो तो सोई थी कमरे में जब मौसी ने आवाज़ दी.

“आलिया बेटा तुम्हारा खत आया है.”

आलिया ये सुनते ही बिस्तर से उठ गयी. “मेरे लिए खत कौन भेज सकता है. कही राहुल ने तो नही भेजा. पर उसे तो यहा का अड्रेस भी नही पता होगा.”

आलिया तुरंत भाग कर बाहर आई. उसने साइन करके चिट्ठी ले ली. पीछे राहुल का नाम था. वो तो झूम उठी खुशी के मारे. पर मौसी के कारण अपनी खुशी को दबा लिया किसी तरह.

“किसका खत है बेटा.” मौसी ने पूछा.

“है एक सहेली का मौसी मैं आराम से रूम में बैठ कर पढ़ूंगी.”

“ठीक है पढ़ ले. पहली बार तेरी आँखो में चमक देख रही हूँ. शायद ये खत कुछ सुकून देगा तुझे. जा पढ़ले अपनी सहेली का खत आराम से.”

“शुक्रिया मौसी.” आलिया फ़ौरन रूम में वापिस आ गयी. रूम में आते ही उसने कुण्डी बंद कर ली. उसका दिल बहुत ज़ोर से धड़क रहा था. खुशी ही कुछ ऐसी थी फ़िज़ा में. बहुत फुर्ती से उसने लीफाफा खोला और चिट्ठी निकाल कर बिस्तर पर बैठ गयी. राहुल की चिट्ठी कुछ इस प्रकार थी.

“ मेरी प्यारी **जरीना,**

कैसी हो तुम. बहुत मुश्किल से मिला अड्रेस तुम्हारी मौसी का मुझे. अड्रेस मिलते ही आज ये चिट्ठी लिख रहा हूँ. एक बात पूछनी थी तुमसे. क्यों चली गयी थी तुम रेस्टोरेंट से बिना बताए. खाना खाकर रफू चक्कर हो गयी मुझे छोड़ कर. क्या बस इतना ही प्यार था तुम्हारा. तुम्हे नही लगता कि तुमने कुछ ग़लत किया है. मैं धुंडता रहा तुम्हे वहा लेकिन तुम कही नही मिली. बताओ क्यों किया तुमने ऐसा.

थक हार कर मैं होटेल वापिस आ गया था. उम्मीद थी कि तुम होटेल में ही मिलोगी मुझे. पर ये क्या तुम तो वहा भी नही थी. ऐसा कौन सा तूफान आ गया था कि तुम अचानक मुझे छोड़ कर चली गयी. क्या एक बार भी नही सोचा तुमने की मैं कैसे जीऊँगा. क्या तुम्हे ज़रा भी चिंता नही हुई मेरी.अगले दिन तुम्हारी मौसी की गली में भी घुमा मैं काफ़ी देर. लेकिन तुम तो शायद मुझे भूल कर मज़े की नींद ले रही थी. बहुत बेदर्द हो तुम.

दिल से मजबूर हो कर लिख रहा हूँ ये चिठ्ठी मैं. बहुत कोशिश की तुम्हे भुलाने की पर भुला नही सका. क्या करू प्यार ही इतना करने लगा हूँ तुम्हे. पर तुम्हे क्या, तुम्हे तो मिल गया होगा सुकून मुझे तडपा के.

एक बात और कहनी थी. आज मैने तुम्हारी खातिर वो किया जो मैं कभी नही कर सकता था. आज तुम्हारी फेवरिट डिश चिकन कढ़ाई खाई मैने. इतनी बुरी भी नही लगी जितना मैं समझता था.मुश्किल हुई पर खा ही ली. अब जो चीज़ मेरी आलिया की फेवरिट है उसे तो चखना ही था. अब हमारे बीच कोई भी दिक्कत नही होगी इस बात को लेकर. अब मैं भी नॉन-वेज बन गया हूँ. तुम ठीक ही थी जरीना. मैने बहुत सोचा और इसी नतीजे पर पहुँचा कि जीवन तो कण-कण में है. यही तो हमारे धरम की मान्यता भी है. तुम्हारे भोजन का यू अपमान करना ग़लत था. ये बात अब मैं समझ गया हूँ. अब ये छोटी सी बात हमारे बीच नही आएगी. आ जाओ वापिस मेरी जिंदगी में जरीना. तुम्हारे बिना बहुत अकेला महसूस कर रहा हूँ मैं. सब कुछ बिखर गया है.

तुम्हे लेने आ रहा हूँ आलिया इस रविवार को मैं. तैयार रहना. कोई बहाना नही चलेगा. तुम सिर्फ़ मेरी हो और मेरी रहोगी. बहुत प्यार करूँगा तुम्हे मैं जरीना. तैयार रहना तुम मैं आ रहा हूँ तुम्हे लेने.

तुम्हारा राहुल"

मैं तो तैयार खड़ी हूँ राहुल तुम आओ तो सही. आँखे बंद करके चल पड़ूँगी तुम्हारे साथ. जहा चाहे वहा ले जाना तुम मुझे. आइ लव यू." बोलते बोलते आलिया की आँखे भर आई लेकिन इस बार आँसू कुछ और ही रंगत लिए थे.

आलिया ने प्यार की खातिर नॉन-वेज छोड़ दिया और राहुल ने प्यार की खातिर नॉन-वेज शुरू कर दिया. वैसे तो बहुत छोटी सी बाते लगती हैं ये. लेकिन ये करना इतना आसान नही होता. अपने अहम को मारना पड़ता है. जो अपनी अहम को ख़तम कर पाता है वही प्यार की गहराई में उतर पाता है.राहुल और आलिया फैल तो ज़रूर हुवे थे प्यार के इम्तिहान में लेकिन अब उन्होने वो पाया था अपने जीवन में जो की बहुत अनमोल था. प्यार में एक दूसरे के लिए झुकना सीख गये थे वो दोनो. जो कि प्यार के लंबे सफ़र पर जाने के लिए ज़रूरी है.

अब इसे अनोखा बंधन ना कहु तो क्या कहु मैं. ये अनोखा बंधन बहुत प्यारा और सुंदर है जिसमे कि इंसानी जींदगी की वो खुबसुरती छुपी है जिसे शब्दो में नही कहा जा सकता. बस समझा जा सकता है.

प्यार के दुश्मन हज़ार होते हैं. प्यार को दुनिया की नज़र भी लग जाती है. बहुत खुश थे आलिया और राहुल एक दूसरे का प्यार भरा खत पा कर. आलिया के पाँव ज़मीन पर नही थम रहे थे. राहुल भी खुशी से झूम रहा था.

सनडे को लेने जाना था राहुल को आलिया को. आने जाने की टिकट उसने बुक करा ली थी. अभी २ दिन बाकी थे. उसने सोचा क्यों ना आलिया के आने से पहले अपने पापा के कारोबार को संभाल लिया जाए. वही बचा था अब इक लौता वारिस उसे ही सब संभालना था. आलिया की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए ये ज़रूरी भी था.

बहुत बड़ा कपड़े का व्यापार था राहुल के पापा कालिदास त्रिवेदी का. बिना देख रेख के वो यू ही नुकसान में जा रहा था. दंगो के बाद राहुल ने सुध ही नही ली व्यापार की. लेकिन अब उसे ज़िम्मेदारी का अहसास हो चला था. आलिया की खातिर उसे उस बीखरे हुवे व्यापार को फिर से खड़ा करना था. प्यार कई बार ज़िम्मेदारी भी सीखा देता है.

राहुल सुबह सवेरे ही घर से निकल पड़ा. सभी कर्मचारी राहुल को देख कर बहुत खुश हुवे. सभी परेशान थे कि फॅक्टरी अगर यू ही चलती रही तो जल्दी बंद हो जाएगी और उनका रोज़गार छिन जाएगा. राहुल ने सभी को भरोसा दिलाया कि वो फिर से फॅक्टरी को पहले वाली स्थिती में ले आएगा.

पूरा दिन राहुल ने फॅक्टरी में ही बिताया. किसी बिगड़े काम को ठीक करने के लिए अक्सर एक सच्चे पर्यास की ज़रूरत होती है. उसके बाद सब कुछ खुद-ब-खुद ठीक होता चला जाता है. ऐसा ही कुछ हो रहा था कालिदास त्रिवेदी की उस फॅक्टरी में. राहुल के आने से उम्मीद की एक किरण जाग उठी थी सभी के मन में. जो कि एक बहुत बड़ी बात होती है.

काफ़ी दिनो बाद कुछ काम हुवा फॅक्टरी में. राहुल बहुत खुश था. फॅक्टरी में रहा राहुल मगर हर वक्त उसके जहन में आलिया का चेहरा घूमता रहा.

शाम को वो खुशी खुशी घर लौट रहा था. अंजान था कि कई बार खुशी को किसी की नज़र भी लग जाती है. जब वो अपने घर पहुँचा तो पाया कि कुछ गुंडे टाइप के लोग आलिया के टूटे-फूटे घर के बाहर खड़े हैं. वो उन्हे इग्नोर करके अपने घर में घुसने लगता है. मगर उसे कुछ ऐसा सुनाई देता है कि उसके कदम घर के बाहर ही थम जाते हैं.

“यार जो भी हो. क्या मस्त आइटम थी वो जरीना. मैं तो दंगो के दौरान बस उसे ही ढूंड रहा था. एक से एक लड़की को ठोका उस दौरान पर आलिया जैसी कोई नही थी उनमे. पता नही कहा छुप गयी थी साली. उसकी छोटी बहन की तो अच्छे से ली थी हमने.”

“हो सकता है वो घर पर ना हो कही बाहर गयी हो.”

“हो सकता है? पर यार उसकी लेने की तम्माना दिल में ही रह गयी. अफ क्या चीज़ थी साली. ऐसे दंगो में ही तो ऐसा माल हाथ आता है. वो भी निकल गया हाथ से.”

राहुल तो आग बाबूला हो गया ये सुन कर. प्रेमी कभी अपनी प्रेमिका के खिलाफ ऐसी बाते नही सुन सकता. भिड़ गया राहुल उन लोगो से बीना सोचे समझे. जो आदमी सबसे ज़्यादा बोल रहा था वो उस पर टूट पड़ा.

“बहुत बकवास कर रहा है. तेरी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बाते करने की” राहुल ने उसे ज़मीन पर गिरा कर उस पर घूँसो की बोचार कर दी. मगर वो पांच थे और राहुल अकेला था. जल्दी ही उसे काबू कर लिया गया. ये कोई हिन्दी मूवी का सीन नही था जहा कि हीरो पांच तो क्या दस लोगो को भी धूल चटा देता है. ये रियल लाइफ का द्रिश्य था.

दो लोगो ने राहुल को पकड़ लिया और एक ने चाकू निकाल कर कहा, “क्यों बे ज़्यादा चर्बी चढ़ि है तुझे. हम कौन सा तेरी मा बहन के बारे में बोल रहे थे. उन लोगो के बारे में बोल रहे थे जो हमारे दुश्मन हैं. धर्मी हो कर धर्मी पर ही हाथ उठाते हो वो भी हमारे दुश्मनो की खातिर. तुम्हारे जैसे लोगो ने ही धरम को कायर बना रखा है.”

“कायरता खुद करते हो और पाठ मुझे पढ़ा रहे हो. छोड़ो मुझे और एक-एक करके सामने आओ. खून पी जाऊंगा मैं तुम लोगो का.”

“सत्तू मार साले के पेट में चाकू और चीर दे पेट साले का. ज़रूर इसी ने छुपाया होगा आलिया को. इसके घर में देखते हैं. क्या पता जो दंगो के दौरान नही मिली अब मिल जाए…हे…हे.”

“उसके बारे में एक शब्द भी और कहा तो मुझसे बुरा कोई नही होगा.” राहुल छटपटाया. मगर दो लोगो ने उसे मजबूती से पकड़ रखा था.

किसी तरह से राहुल ने दोनो को एक तरफ धकेला और टूट पड़ा उस गुंडे पर जिसके हाथ में चाकू था. होश खो बैठा था राहुल. होता है प्यार में ऐसा भी कभी. मगर ये ज़्यादा देर नही चला. फिर से उसे जकड़ लिया गया.

और फिर वो हुवा जिसके बारे में राहुल ने सोचा भी नही था. चाकू के इतने वार हुवे उसके पेट पर की खून की नादिया बह गयी वहा. राहुल को तडपता छोड़ वो गुंडे भाग गये वहा से.

राहुल की फॅक्टरी का एक कर्मचारी, कमलेश राहुल से कुछ पेपर्स पर साइन लेने उसके घर पहुँचा तो उसने राहुल को वहा खून से लथपथ पाया. तुरंत किसी तरह एम्बुलांस बुलाई उसने और राहुल को हॉस्पिटल ले जाया गया.

बहुत सीरीयस हालत में था वो. ऑपरेशन किया डॉक्टर्स ने मगर बचने की उम्मीद कम ही बता रहे थे. खून बहुत बह गया था. चाकू के इतने वार हुवे थे कि पेट छलनी छलनी हो रखा था उसका. बड़ी देर लगी ऑपरेशन में भी. ऑपरेशन के बाद राहुल को आई.सी.यू में रख दिया गया. उसे होश नही आया था. सनडे आ गया मगर अभी भी वो कोमा में ही था. राहुल के बारे में सुन कर मुंबई से उसके चाचा, चाची मिलने आए. कालिदास त्रिवेदी की मौत के वक्त नही आ पाए थे वो क्योंकि माहोल ठीक नही था. चाचा का नाम था रामदास त्रिवेदी और चाची का नाम था कमला देवी.

‘‘डॉक्टर साहिब कब तक रहेगा कोमा में राहुल.’’ रघुनाथ ने पूछा.

‘‘कुछ नही कह सकते. हम जो कर सकते थे हमने किया. अब सब भगवान के उपर है.’’ डॉक्टर कह कर चला गया.

आज के दिन राहुल को आलिया को लेने दिल्ली जाना था. मगर वो तो कोमा में पड़ा था. उसे होश ही नही था कि आलिया तड़प रही होगी राहुल के लिए. या फिर होश था उसे मगर कुछ कर नही सकता था. कोमा चीज़ ही कुछ ऐसी है. बेसहाय बना देती है इंसान को.

आलिया तो सुबह से ही बेचैन थी. बेसब्री से इंतेज़ार कर रही थी राहुल का. उसे मौसी को बिना कुछ कहे घर से निकलना था, राहुल के पीछे पीछे. बस एक बार दिख जाए राहुल गली में. आँखे बिछाए बैठी थी वो. छत की बाल्कनी में खड़ी हो गयी सुबह सवेरे ही.

"क्या बात है बेटा आज सुबह जल्दी उठ गयी." मौसी ने आवाज़ लगाई आलिया को.

आलिया मौसी की आवाज़ सुन कर चौंक गयी, "सलाम वालेकुम मौसी."

"सलाम वालेकुम बेटा. क्या बात है आज सुबह सुबह यहा खड़ी हो. सब ख़ैरियत तो है."

"हां मौसी सब ख़ैरियत है. बस वैसे ही खड़ी थी."

"तुमसे कोई मिलने आ रहा है आज." मौसी ने कहा.

"कौन?"

"सलीम नाम है उसका. यही पड़ोस में रहता है. अच्छा लड़का है. तेरे बारे में बताया मैने उसे. बहुत दुख हुवा उसे सुन कर तुम्हारे बारे में.

मिलना चाहता है तुम से. आ जाओ नीचे वो आता ही होगा. बहुत अहसान है उसके हम पर. उस से मिलोगी तो अच्छा लगेगा हमें."

"ठीक है मौसी मैं आती हूँ आप चलिए." आलिया ने कहा.

मौसी सोच में पड़ गयी कि आख़िर क्या है बाल्कनी में ऐसा आज जो आलिया वहा से हटना नही चाहती. मौसी के जाने के बाद आलिया ने फिर से झाँक कर देखा गली में मगर उसे कोई दीखाई नही दिया. "शायद बाद में आएगा राहुल. अभी तो सारा दिन पड़ा है. मिल आती हूँ पहले इस सलीम से."

आलिया जब सीढ़ियाँ उतर कर आई तो उसने पाया की सलीम उसका इंतेज़ार कर रहा था.

‘‘तो आप हैं आलिया खान. खुदा कसम बहुत खूबसूरत हैं आप. हमारी नज़र ना लग जाए आपको.’’ सलीम ने आलिया को देखते ही कहा.

‘‘आओ बेटी बैठो. यही है सलीम. बहुत काबिल लड़का है. जब भी कोई काम बोलती हूँ इसे वो ये झट से कर देता है.’’

‘‘ये तो आपकी जर्रा नवाज़ी है खाला. हम इतने काबिल भी नही हैं. सब खुदा की रहम है.’’

‘‘नही सलीम तुम सच में बहुत काबिल हो. अच्छा तुम दोनो बाते करो मैं चाय लेकर आती हूँ.’’

आलिया मौसी को रोकना चाहती थी पर कुछ कह नही पाई.

‘‘लगता है आपको खुशी नही हुई हमसे मिल कर. आप कहें तो हम चले जाते हैं.’’ सलीम ने कहा.

‘‘जी नही आप हमें ग़लत ना समझे. हम थोड़ा परेशान हैं.’’ आलिया ने कहा.

‘‘समझ सकते हैं हम आपकी परेशानी. हम बेख़बर नही हैं आपकी परेशानी से. खाला हमें सब कुछ बता चुकी हैं. हम यहा आपका गम बाटने आयें हैं.’’ सलीम ने कहा.

‘‘बहुत बहुत शुक्रिया आपका मगर हम उस बारे में बात नही करना चाहते.’’

‘‘समझ सकते हैं हम. गुज़रे दौर की बाते जख़्मो को और हवा ही देती हैं. हम आपसे माफी चाहेंगे अगर हमने आपके जख़्मो को कुरेद दिया हो तो. हमें ज़रा भी इल्म नही था कि इन बातो का जिकर नही होना चाहिए. हम तो बस आपका गम हल्का करना चाहते थे.’’

‘‘आपसे इज़ाज़त चाहूँगी. मुझे जाना होगा.’’

‘‘रोकेंगे नही आपको. मगर आप बैठेंगी तो हमें अच्छा लगेगा. आपसे ही मिलने आयें हैं हम.’’

आलिया बहुत बेचैन हो रही थी ये जान-ने के लिए कि राहुल आया की नही. उसके चेहरे पर ये बेचैनी सॉफ झलक रही थी.

“आप हमें कुछ बेचैन सी लग रही हैं. सब ख़ैरियत तो है.” सलीम ने कहा.

“सब ख़ैरियत है आप हमारी फिकर ना करें.” आलिया थोड़ा गुस्से में बोल गयी.

तभी मौसी चाय ले आई. आलिया वहा से उठी और बोली, “मौसी मैं अभी आती हूँ.”

“चाय ठंडी हो जाएगी बेटा.”

आलिया को कुछ नही सुन-ना था. उसे तो बस उपर आ कर बाल्कनी से झाँक कर देखना था कि राहुल आया है कि नही. दौड़ कर आई वो उपर और दिल में राहुल को देखने की बेचैनी लिए उसने चारो तरफ देखा गली में. मगर उसे कोई नज़र नही आया. थक हार कर वो वापिस आ गयी.

“चाय ठंडी हो गयी, ऐसा क्या ज़रूरी काम था उपर.” मौसी ने पूछा.

“शायद आलिया को चाय पसंद नही है.” सलीम ने कहा.

“बहुत पसंद है इसे चाय. पता नही आजकल क्या हो गया है इसे.”

“खाला आलिया गम के ऐसे दौर से गुज़री है कि इंसान की रूह काँप जाए. इंसान का खो जाना लाजमी है. अब इज़ाज़त चाहूँगा खाला. कुछ ज़रूरी काम है मुझे. फिर मिलेंगे. खुदा हाफ़िज़!”

“खुदा हाफ़िज़ बेटा. आते रहना.”

“खुदा हाफ़िज़ आलिया जी. हम फिर मिलेंगे.” सलीम ने मुस्कुराते हुवे कहा.

“खुदा हाफ़िज़…” आलिया ने जवाब दिया.

“हमारी यही दुवा है कि अल्ला का रहम हो आप पर और आप इस गम के दौर से जल्द निकल आयें बाहर. हम इस खुबसुरत से चेहरे पर जल्द से जल्द मुस्कान देखना चाहते हैं.” सलीम ने कहा.

आलिया ने कुछ नही कहा. उसका ध्यान ही नही था सलीम की बात पर. वो तो राहुल के ख़यालो में खोई थी.

“आलिया जी हम आपको दुवा दे रहें हैं और आप कबूल नही कर रहीं. क्या हमसे कोई गुस्ताख़ी हुई है.”

आलिया को होश आया और वो झट से बोली, “शुक्रिया आपका. बहुत बहुत शुक्रिया.”

सलीम चला गया वहा से. सलीम के जाने के बाद मौसी बोली, “अच्छा लड़का है. बहुत मेहनती है. बहुत अहसान है इसके हम पर. बहुत पसंद आई तुम उसे. जब तुम उपर गयी थी तो तुम्हारा हाथ माँग रहा था. सलीम से अच्छा शोहार नही मिलेगा तुम्हे.”

“मौसी आप सोच भी कैसे सकती हैं ऐसा.” आलिया के ये बात ना-गवारा गुज़री.

“बेटा तेरे अब्बा और अम्मी के बाद अब मैं ही हूँ तेरी अपनी. इतना सोचने का हक़ तो शायद मुझे है ही. तुझे ये सुझाव पसंद नही तो ना सही मगर फिर भी गौर करना इस पर. सलीम बहुत ही अच्छा लड़का है. अच्छे से जानती हूँ मैं उसे. तुम्हारे लिए उस से बेहतर शोहर नही मिल सकता. उसे तुम पसंद भी आ गयी हो. बाकी तुम्हारी मर्ज़ी है. तुम्हारा निकाह तुम्हारी मर्ज़ी से ही होगा.”

आलिया ने कुछ नही कहा और आ गयी सीढ़ियाँ चढ़ कर उपर बाल्कनी में. राहुल वहा हो तो दीखे. आँखे नम हो गयी इस बार उसकी.

“क्यों तडपा रहे हो मुझे राहुल. मर जाऊंगी मैं इस तड़प में. प्लीज़ जल्दी आ जाओ. मैं और इंतेज़ार नही कर सकती.”

सुबह से दोपहर हुई और दोपहर से शाम. शाम से रात भी हो गयी. आलिया की आँखे पथरा गयी राह देखते-देखते. बहुत रोई वो बार-बार. आँखे लाल हो गयी उसकी. उसे क्या

पता था कि जिसे वो ढूंड रही है वो इस वक्त कोमा में है और शायद गहरी नींद में उसे अपने पास बुला रहा है.

अनोखा बंधन था ये सच में. प्यार इस जनम का नही बल्कि काई जन्मों का लग रहा था. रात तो हो गयी थी पर पता नही क्यों उम्मीद नही छोड़ी थी आलिया ने. प्यार हमेशा उम्मीद की किरण जगाए रखता है इंसान में. रात को भी वो कईं बार आई बाल्कनी में चुपचाप दबे पाँव. मगर हर बार निराशा ही हाथ लगी. बहुत मुश्किल से जाती थी वो वापिस अपने कमरे में. मन करता नही था उसका बाल्कनी से हटने का मगर वो वहा ज़्यादा देर नही रुक सकती थी. दिन में मौसी काई बार पूछ चुकी थी कि क्या कर रही हो बार बार बाल्कनी में. आलिया नही चाहती थी कि किसी को भी पता चले उसके और राहुल के बारे में. उनका प्यार जितना गुमनाम रहे उतना ही अच्छा. जितना लोगो को पता चलेगा उतनी ही मुसीबत बढ़ेगी. राहुल की चिट्ठी उसने बहुत ध्यान से छुपा कर रखी थी. फाड़ नही सकती थी उसको. अनमोल प्यार जो था उस चिट्ठी में. ऐसा प्यार जो कि उसे अपनी जींदगी से भी ज़्यादा प्यारा था. होता है ऐसा भी...प्यार अपनी जींदगी से भी ज़्यादा अनमोल हो जाता है.

आलिया वापिस आकर गिर गयी अपने बिस्तर पर. थाम नही पाई अपनी आँखो को और वो बह गयी फिर से.

"कहा रह गये तुम राहुल. क्यों नही आ पाए तुम. ऐसा क्या हो गया कि तुमने मुझे यू तडपता छोड दिया. अगर मैं मर गयी तड़प-तड़प कर तो देखना बहुत पछताओगे तुम. मेरे जितना प्यार कोई नही कर सकता तुम्हे. क्यों राहुल क्यों.......क्यों नही आ पाए तुम." और बोलते बोलते रो पड़ी आलिया फिर से.

"कभी कितनी नफ़रत करती थी तुमसे और आज ये हालत है तुम्हारे कारण. एक पल भी जीना नही चाहती तुम्हारे बिना. याद है तुम्हे वो दिन जब तुम कीचड़ उछाल कर चले गये थे मेरे उपर.

मैं कॉलेज से मार्केट चली गयी थी राधा और किंजल के साथ. वापसी में बारिश शुरू हो गयी. शुक्र है छाता था मेरे पास. बचते-बचाते चल रही थी पानी की बूँदो से. नयी जीन्स पहन रखी थी मैने. घर के नज़दीक ही थी मैं. तुम ना जाने कहा से आए अचानक बाइक पर और कीचड़ उछाल दिया मेरे उपर. जीन्स तो मिट्टी से लथपथ हुई ही, मेरे चेहरे पर भी कीचड़ के छींटे डाल दिए तुमने.

तुम रुक गये ये देख कर. तुम्हे लगा कोई और है. छाते के कारण शायद तुम मुझे पहचान नही पाए थे. आगे बाइक खड़ी करके नज़रे झुकाए हुवे. मैने तो तुम्हे पहचान ही लिया था. मन कर रहा था कि ईंट उठा कर मारु तुम्हारे सर पर.

"मिस्टर राहुल क्या समझते हो तुम खुद को. देख कर नही चल सकते क्या. मेरी नयी जीन्स खराब कर दी तुमने." मैने गुस्से में रीअॅक्ट किया.तुम तो मुझे देखते ही मूड गये वापिस. इतनी कर्टासी भी नही दीखाई की कम से कम सॉरी ही बोल दो. चल दिए मूह फेर कर जैसे कि सब मेरी ही ग़लती हो. अपनी बाइक पर बैठ गये जा कर और किक मार कर बोले, "मेरी मम्मी से पैसे ले लेना. नयी खरीद लेना. ज़्यादा बकवास करने की ज़रूरत नही है."

"अपने पैसे अपने पास रखो मिस्टर. पैसो की कमी नही है मुझे. स्टुपिड….." मैं चिल्ला कर बोली.

"तो खरीद लो ना नयी जा कर. मेरा दिमाग़ क्यों खा रही हो." चले गये तुम बोल कर.

बहुत गुस्सा आया था तुम्हारे उपर. मन कर रहा था कि तुम्हारी जान ले लूँ. और आज ये दिन है कि तुम्हारे लिए अपनी जान दे सकती हूँ. कितना अजीब होता है प्यार. हम दोनो ऐसे अनमोल प्यार के बंधन में बँध जाएँगे सोचा भी नही था मैने. आ जाओ राहुल और मेरे लिए एक नयी जीन्स लेते आना. ड्यू है तुम्हारे उपर. वही पहन कर चलूंगी मैं तुम्हारे साथ. तुम बस लेते आओ. या फिर रहने दो जीन्स को….तुम आ जाओ राहुल प्लीज़….मैं बीखर गयी हूँ पूरी तरह. एक तुम ही तो हो जिसके लिए जीना चाहती हूँ. तुम भी इस तरह तडपाओगे तो क्या होगा मेरा. प्लीज़ आ जाओ."

आलिया से रहा नही गया और वो फिर से उठ कर चल दी बाल्कनी की तरफ. रात के ३ बज रहे थे. मगर उसकी उम्मीद टूटी नही थी अभी. चारो तरफ देखा आलिया ने बाल्कनी से झाँक कर. गली में कुत्ते भोंक रहे थे. "ये कुत्ते कही और क्यों नही चले जाते. राहुल को ना काट लें कहीं ये."

राहुल का कही अता पता नही था पर आलिया राहुल के लिए कुत्तो से परेशान हो रही थी. बहुत परवाह रहती है प्यार में एक दूसरे की.

वापिस आना ही पड़ा आलिया को. “क्या पता कल आए राहुल. क्या पता ट्रेन लेट हो गयी हो. या फिर हो सकता है कोई ज़रूरी काम आन पड़ा हो. वो आएगा ज़रूर मुझे यकीन है. बस जल्दी आ जाए तो अच्छा है वरना पता नही जी पाउंगी या नही.”

दुबारा नही उठी आलिया बाल्कनी में जाने के लिए. थक हार कर उसकी आँख लग गयी थी. सो गयी बेचारी तड़प-तड़प कर. आँखे भारी हो रखी थी. नींद आना लाज़मी था.

राहुल अभी भी कोमा में था. आस पास क्या हो रहा था उसे कुछ नही पता था. लेकिन प्यार का कुछ ऐसा चमत्कार था कि वो थोड़ा-थोड़ा सोच पा रहा था. कुछ केसेस हुवे हैं ऐसे कोमा के जिनमे इंसान सोच पाता है. मगर ये थिंकिंग दिमाग़ की बहुत गहराई में होती है. प्यार भी तो कही गहरा छुपा रहता है इंसान के अंदर. शायद वही ये सोचने समझने की ताक़त छुपी रहती है.

"आलिया मैं आ रहा हूँ तैयार रहना." ये विचार खुद-ब-खुद आ गया राहुल के दिमाग़ में. शायद आलिया से मिलने की तड़प बहुत गहराई तक समा गयी थी उसके अस्तित्व में.

राहुल को पता भी नही था कि सनडे बीत चुका है और आलिया का उसके इंतेज़ार में बुरा हाल है. कोमा में था राहुल जान नही सकता था ये बात. उसका अस्तित्व दिन दुनिया से बहुत परे था जहा टाइम और दिन नही होता. एक गहरी नींद होती है कोमा जहा कुछ उभर आता है अचानक. जैसे की आलिया के लिए जीन्स ले जाने का विचार अचानक ही आ गया. पता नही कैसे.

शायद प्यार में बहुत गहराई से जुड़े थे आलिया और राहुल वरना राहुल को जीन्स का ख्याल आना मुमकिन नही था. राहुल मन ही मन मुस्कुराया, "बहुत चिल्लाई थी तुम उस दिन. पूरी जीन्स कीचड़ के रंग में रंग गयी थी. कितना गुस्सा था तुम्हारे चेहरे पर. ला दूँगा नयी जीन्स. मुझे पता है कि ड्यू है जीन्स मुझ पर."

“जरीना! उठो…आज इतनी देर तक कैसे सो रही हो.” मौसी ने आवाज़ लगाई. खूब दरवाजा पीटा उन्होने. पर आलिया का कोई जवाब नही आया.

मौसी की आवाज़ सुन कर उनका बेटा अकरम वहा आ गया और बोला, “अम्मी क्या हुवा?”

“११ बज गये हैं और ये लड़की उठी नही अभी तक.” मौसी ने कहा.

“सोने दो ना अम्मी तुम हमेशा दूसरो की नींद खराब करती हो.” अकरम ने कहा

“आलिया इतनी देर तक कभी नही सोती. कल कुछ ज़्यादा ही परेशान लग रही थी. मुझे तो चिंता हो रही है.”

“क्या हुवा अकरम की अम्मी. इतना हंगामा क्यों मचा रखा है.” अकरम के अब्बा ने पूछा. उनका नाम मन्सूर था.

“आलिया दरवाजा नही खोल रही. पता नही क्या बात है.” मौसी ने चिंता जनक शब्दो में कहा.

सलीम किसी काम से घर आया था. वो भी उन लोगो की बाते सुन कर वहा आ गया और बोला, “खाला क्या बात है. सब ख़ैरियत तो है.”

“पता नही सलीम बेटा. आलिया दरवाजा नही खोल रही. ११ बज रहे हैं. मुझे तो चिंता हो रही है. कल बहुत बेचैन सी लग रही थी. बार-बार बाल्कनी के चक्कर लगा रही थी. पता नही क्या बात है. कुछ बताती भी तो नही है. अपने आप में खोई रहती है.”

“गहरी नींद में सोई है शायद.” सलीम भी ज़ोर-ज़ोर से दरवाजा खड़काता है.

पर आलिया का कोई जवाब नही आता.

“खाला आप हटिए. दरवाजा तोड देते हैं.” सलीम ने कहा.

“हां सलीम भाई ठीक कहा, तोड देते हैं दरवाजा.” अकरम ने कहा.

“हां बेटा कुछ करो…मुझे तो बहुत डर लग रहा है.” मौसी घबरा रही थी.

सलीम और अकरम दरवाजे को धक्का मारते हैं. दरवाजा २-३ धक्के मारने पर खुल जाता है.

पहले मौसी अंदर आती है क्योंकि जवान लड़की थी कमरे में. मौसी अंदर आकर पाती है कि आलिया पाँव सीकोडे पड़ी है. वो उसे हिलाती है पर वो कुछ रेस्पाँड नही करती. ‘‘ये तो बेहोश पड़ी है शायद.’’

मौसी बाहर आती है और सलीम से कहती है, ‘‘बेटा वो तो बेहोश पड़ी है अंदर. डॉक्टर को बुलाओ जल्दी.’’

सलीम फ़ौरन डॉक्टर को लेकर आता है. डॉक्टर आलिया को एग्ज़ॅमिन करता है और बोलता है, ‘‘सब कुछ नॉर्मल है. शायद किसी सदमें में है. क्या कुछ ऐसा हुवा है इसके साथ जिस से इसके दिल को गहरा झटका लगे.’’

‘‘हुवा तो बहुत कुछ है डॉक्टर साहिब अब क्या बतायें. आप कोई दवाई दे दीजिए.’’ मौसी ने कहा.

‘‘मैं इंजेक्शन दे रहा हूँ. कुछ ही देर में इसे होश आ जाएगा. आप इन्हे खुश रखने की कोशिश करें.’’ डॉक्टर ने कहा.

डॉक्टर आलिया को इंजेक्शन दे कर चला गया. अकरम और उसके अब्बा भी वहा से चले गये. उन्हे अपने काम के लिए निकलना था. सलीम और मौसी वही बैठ गये दो कुर्सी ले कर.

‘‘कुछ तो है ऐसा जो ये हमसे छुपा रही है.’’ मौसी ने कहा.

‘‘खाला वक्त लगेगा उसके जख़्मो को भरने में. कुछ वक्त दीजिए उसे.’’ सलीम ने कहा.

‘‘वक्त तो ठीक है, पर ये हर वक्त खोई-खोई रहती है.’’

‘‘खाला आपने आलिया से कुछ बात की हमारे बारे में’’ सलीम ने पूछा.

“की थी बेटा. अभी उसने कुछ बताया नही है पर तुम फिकर ना करो आलिया तुम्हारी ही बीवी बनेगी. मैं हूँ ना.”

“खाला अगर ऐसा हो गया तो खुद को ख़ुसनसीब समझूंगा. पहली बार मुझे कोई पसंद आया है.” सलीम ने कहा.

“तुम्हारे बहुत अहसान हैं बेटा. इतना तो तुम्हारे लिए कर ही सकती हूँ. आलिया ना नही बोलेगी मुझे यकीन है इस बात का. और तुमसे अच्छा शोहार नही मिलेगा उसे.”

“खाला हम चाहते हैं कि जितनी जल्दी ये निकाह हो जाए अच्छा रहेगा. हम आलिया को बहुत खुश रखेंगे.” सलीम ने कहा.

“मालूम है बेटा. कोशिश करूँगी कि तुम दोनो का निकाह जल्दी हो जाए. मेरे सर से भी ज़िम्मेदारी का बोझ हटेगा. उमर हो चली है मेरी. जींदगी का क्या भरोसा. जीतनी जल्दी आलिया का घर बस जाए अच्छा है. तुम्हारे हाथ में उसका हाथ दे कर मैं भी निश्चिंत रहूंगी.” मौसी ने कहा.

डॉक्टर के इंजेक्शन के बाद कुछ ही देर में आलिया को होश आ गया.

“राहुल!” आलिया चिल्ला कर बोली और बिस्तर पर उठ कर बैठ गयी. तब उसकी मौसी और सलीम वही थे.

सलीम और आलिया की मौसी तो हैरान रह गये.

“राहुल? कौन राहुल जरीना” सलीम ने हैरानी में पूछा.

आलिया को होश आया कि वो क्या बोल गयी. “मैं सपना देख रही थी शायद.”

आलिया का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा. वो अच्छे से जानती थी कि किसी को भी वहा राहुल और उसके बारे में पता चला तो बहुत मुसीबत हो जाएगी. अकरम के अब्बा और अकरम ने खुद फरिदा को इसलिये मार दिया था क्योंकि वो एक धर्मी लड़के से प्यार कर बैठी थी. अकरम की छोटी बहन थी फरिदा. ऐसे माहोल में आलिया का डरना लाजमी था.

कोई नही था वहा ऐसा जो कि आलिया और राहुल के रिश्ते को समझता. इसलिये उसे हर हाल में अपने प्यार को छुपा कर रखना था.

“क्या हुवा था बेटा...पता है तुम बेहोश पड़ी थी यहा. डॉक्टर ने इंजेक्शन दिया तुम्हे तब होश में आई तुम. ऐसी कौन सी बात है अब जो कि तुम्हे अंदर ही अंदर खाए जा रही है. कल बार बार बाल्कनी में घूम रही थी. मैने तुझे रात को भी देखा बाल्कनी में जाते हुवे. पर तुझे टोका नही. कुछ बताओगी अपनी मौसी को ताकि मैं कुछ कर पाव तुम्हारे लिए”

आलिया अजीब मुश्किल में पड़ गयी, बोले भी तो क्या बोले. चुप रही बस. अब कैसे कहे कि वो राहुल को ढूंड रही थी. कुछ और कहने को उसे सूझ नही रहा था. जब दिल प्यार में डूबा हो तो दिमाग़ अक्सर कम चलता है.

“बेटा मैं कुछ पूछ रही हूँ कुछ बताओगी मुझे.” मौसी ने फिर पूछा.

“रहने दीजिए खाला. आलिया का जब मन होगा बता देगी.” सलीम ने कहा.

लेकिन कहते हैं कि इश्क़ छुपाए नही छुपता. आलिया के तकिये के पास राहुल की चिट्ठी पड़ी थी. मौसी की नज़र पड़ गयी उस चिट्ठी पर. वो आगे बढ़ी और उठा ली वो चिट्ठी. आलिया का ध्यान ही नही था इस बात पर कि तकिये के पास चिट्ठी पड़ी है. प्यार में ध्यान व्यान सब गुम हो जाता है शायद. जब उसने मौसी के हाथ में राहुल की चिट्ठी देखी तो वो चिल्लाई, “मौसी ये मेरी पर्सनल चिट्ठी है. मुझे वापिस दे दो.”

“सलीम बेटा पढ़ना ज़रा इसमे क्या लिखा है. मुझे तो पढ़ना नही आता.” मौसी ने कहा.

“नही सलीम ये मेरी पर्सनल है. कोई नही पढ़ेगा इसे.” आलिया ने कहा.

सलीम ने चिट्ठी पकड़ तो ली पर दुविधा में पड़ गया वो कि क्या करे क्या ना करे. मौसी कह रही थी पढ़ो और आलिया कह रही थी मत पढ़ो.

“पढ़ो बेटा. शायद आलिया की परेशानी का सबब इस चिट्ठी में मिल जाए. ये तो कुछ बताती है नही.”

सलीम ने चिट्ठी हाथ में ली और मन ही मन पढ़नी शुरू की. जब वो चिट्ठी पढ़ कर हटा तो उसके चेहरे पर तनाव था.

“मौसी बाहर आईए बहुत गंभीर बात है.” सलीम ने कहा.

“मेरा खत मुझे वापिस दे दो.” आलिया ने भावुक आवाज़ में कहा. वो वैसे ही राहुल के ना आने से परेशान थी और अब ये नयी मुसीबत आन खड़ी हुई थी.

सलीम ने राहुल का खत अपनी जेब में डाल लिया और मौसी को साथ लेकर बाहर की ओर चल दिया.

आलिया उठी बिस्तर से और चिल्लाई, “मेरा खत है वो कहा ले जा रहे हो. पागल हो क्या तुम. वापिस दो मुझे वो.”

सलीम ने बाहर आकर बाहर से कुण्डी लगा दी दरवाजे की. आलिया अंदर से दरवाजा पीट-ती रही. “मेरा खत मुझे वापिस दे दो प्लीज़.......” आँसू आ गये आलिया की आँखो में बोलते बोलते.

सलीम पूरा खत पढ़ कर मौसी को सुनाता है.

“देखा खाला ये कारण है इसकी परेशानी का. इसे अपने अम्मी, अब्बा और बहन के मरने का कोई गम नही है. बल्कि एक काफ़िर के कारण परेशान है ये. वो लेने आने वाला था कल आलिया को यहा. तभी ये बाल्कनी में घूम रही थी. हमें तो यकीन ही नही हो रहा. हमें लगा ये अपनो को खोने के कारण गम में है. पर नही ये तो इश्क़ फर्मा रही है वो भी एक फजीर और काफ़िर से.”

“अकरम और उसके अब्बा को पता चला तो फरिदा की तरह काट डालेंगे इसे भी. ये लड़की ऐसा करेगी हमने सोचा भी नही था. उन लोगो ने क़त्ले आम किया हमारी क़ौम का और ये उनसे प्यार कर रही है. शरम आनी चाहिए इसे.”

“मौसी मेरा खत मुझे वापिस दे दो. वो मेरी जींदगी है प्लीज़.........” आलिया ने अंदर से रोते हुवे चिल्ला कर कहा.

“अगर ये राहुल यहा आया तो हम उसे जींदा नही छोड़ेंगे खाला.” सलीम ने कहा.

“बेटा क्या तुम ये सब जान-ने के बाद भी आलिया से शादी करोगे.” मौसी ने पूछा.

“हम शायद मोहब्बत करने लगे हैं आलिया से. हम उसी से शादी करेंगे चाहे कुछ हो जाए.” सलीम ने कहा.

“बेटा तुम शादी की तैयारी करो बस अब फिर. ज़्यादा देर करनी ठीक नही है.” मौसी ने कहा.

“मैं तो तैयार हूँ खाला. आप चाहे आज करवा दो शादी.”

“ठीक है बस एक हफ्ते का वक्त दो हमें.”

“ठीक है खाला…आपको किसी भी बात की चिंता करने की ज़रूरत नही है. हम सब इंतजाम कर देंगे.”

“वो तो हम जानते ही हैं.”

आलिया सुन रही थी सब कुछ अंदर. इतनी भावुक हो रही थी कि कुछ पूछो मत. कुछ भी नही बोल पा रही थी. गिर गयी रोते-रोते वही ज़मीन पर और बोली, “अब तो आ जाओ राहुल. या अब भी नही आओगे. प्लीज़…………………………..”

------------------- एक साल बाद--------------------------

राहुल ने धीरे से आँखे खोली. कोई नही था आस पास उसके. उसे कुछ समझ नही आ रहा था कि वो कहा है और क्यों है. कोमा से उठने के बाद अक्सर ऐसा होता है.

"जरीना…आलिया कहा है? मैं यहा कैसे." सबसे पहले उसे यही सूझा.

राहुल अभी गहरी नींद से जागा था. दिमाग़ एक साल तक गहरी नींद में था. वापिस नॉर्मल होने में वक्त तो लगता ही है.

राहुल उठ कर बैठ गया बिस्तर पर. रामदास त्रिवेदी ने देख लिया उसे बैठे हुवे. उनकी खुशी का ठीकाना नही रहा.

"बेटा तुम्हे होश आ गया. अरे सुनती हो राहुल को होश आ गया." रामदास त्रिवेदी ने अपनी पत्नी को आवाज़ दी. वो भागी भागी आई.

"चाचा जी आप."

"हां बेटा. हम तुम्हे अपने साथ मुंबई ले आए थे. वहा गुजरात में हम तुम्हे अकेला नही छोड़ सकते थे." रामदास त्रिवेदी ने कहा.

"मेरा सर बहुत भारी है." राहुल ने सर पर हाथ रख कर कहा.

"सर पर भी मारा था उन कमिनो ने. तुम्हे कुछ याद है कौन थे वो."

राहुल सोच में पड़ गया. उसे कुछ धुन्द्ला धुन्द्ला याद आ रहा था.

"चलो छोड़ो वो सब. ज़्यादा ज़ोर मत डालो दिमाग़ पर. आ जाएगा सब कुछ याद खुद ही. हम तो उम्मीद छोड़ चुके थे बेटा. तुम्हे आज होश में देख कर जो खुशी मिली है उसे मैं शब्दो में नही कह सकता." रामदास त्रिवेदी ने कहा.

राहुल को ये ध्यान भी नही था कि वो एक साल बाद होश में आया है. कोमा से उठे व्यक्ति के लिए समय और वक्त का ज्ञान असंभव है. लेकिन राहुल को इतना ध्यान ज़रूर था कि

उसे सनडे को आलिया को लेने जाना है. उसे क्या पता था की जिस सनडे को उसे आलिया को लेने जाना था वो कब का बीत चुका है और जींदगी एक साल आगे बढ़ चुकी है.

"चाचा जी आज दिन क्या है"

"आज शनिवार है बेटा... क्यों."

"शनिवार... मुझे चलना होगा. मुझे कल हर हाल में दिल्ली पहुँचना है." राहुल धीरे से बड़बड़ाया और उठने की कोशिश करने लगा.

रामदास त्रिवेदी समझ नही पाया कि राहुल ने क्या कहा. उन्होने राहुल के कंधे पर हाथ रखा और बोले, "बेटा क्या बोल रहे थे तुम. और अभी जल्दबाज़ी मत करो उठने की. एक साल बाद होश आया है तुम्हे. शरीर में जंग लग चुका है.थोड़ा वक्त दो अपने शरीर को."

ये सुनते ही राहुल भोंचका रह गया. उसका सर घूमने लगा. उसे विश्वास नही हो रहा था अपने कानो पर.

"एक साल बाद होश आया...ये कैसे हो सकता है." राहुल ये मानने के लिए बिल्कुल तैयार नही था.

"हां बेटा तुम कोमा में थे. एक साल बाद उठे हो तुम आज. भगवान का लाख लाख शुक्र है कि तुम्हे होश आ गया." रामदास त्रिवेदी ने कहा.

राहुल के दिमाग़ की हालत ऐसी नही थी को वो कुछ भी समझ पाए. उसे तो बस इतना पता था कि आज अगर शनिवार है तो कल उसे आलिया को लेने दिल्ली जाना है. वो अभी भी बीते कल में जी रहा था. मगर जींदगी उसके चारो और बहुत आगे निकल गयी थी.

राहुल इतना स्तब्ध था कि कुछ भी नही बोल पाया. उसकी नज़र जब दीवार पर टाँगे कॅलंडर पर गयी तो उसकी आँखे भर आई. २००३ का कॅलंडर था वो.

"चाचा जी कौन सा महीना है."

"२० एप्रिल २००३ है आज बेटा. तुम परेशान मत हो, सब ठीक है. तुम्हारी फॅक्टरी ठीक चल रही है. कोई चिंता की बात नही है."

राहुल की तो हालत खराब हो गयी. ऐसा लग रहा था जैसे की वो फिर से बेहोश हो जाएगा. "एक साल बीत गया. आलिया ने बहुत इंतेज़ार किया होगा मेरा. बहुत रोई होगी मेरे इंतेज़ार में वो. मैं क्यों नही जा पाया...क्यों....हे भगवान क्यों किया ऐसा हमारे साथ." राहुल चिंता में पड़ गया.

रामदास त्रिवेदी नही जानता था कि राहुल के मन में क्या चल रहा है. राहुल की हालत वैसे उठने लायक नही थी मगर फिर भी वो उठ गया किसी तरह बिस्तर से और बोला, ‘‘चाचा जी मुझे दिल्ली जाना है तुरंत.’’

प्यार की तड़प और बेचैनी शायद ताक़त भर देती है इंसान के शरीर में. वरना राहुल नही उठ सकता था.

"क्या बात है बेटा, कुछ बताओ तो सही, तुम बहुत परेशान लग रहे हो."

"मुझे बहुत ही ज़रूरी काम है चाचा जी. मुझे हर हाल में दिल्ली जाना है." राहुल किसी को कुछ नही बताना चाहता था. बात ही कुछ ऐसी थी. वैसे भी अगर वो बताता भी तो शायद ही कोई समझ पाता उसकी बात को.

"राहुल डॉक्टर को फोन किया है मैने वो आता ही होगा. अगर डॉक्टर सफ़र की इज़ाज़त दे तो तुम बेशक जा सकते हो." रामदास त्रिवेदी ने कहा.

"डॉक्टर चाहे कुछ भी कहे मुझे जाना ही होगा." राहुल ने कहा.

"बेटा ऐसी क्या बात है जो की तुम तुरंत जाना चाहते हो." रघुनाथ ने पूछा.

तभी डॉक्टर आ गया.

"लो डॉक्टर साहिब आ गये." रघुनाथ ने कहा.

"बड़ी खुशी हुई मुझे आपको होश में देख कर मिस्टर राहुल." डॉक्टर ने कहा.

डॉक्टर राहुल का चेकअप करने के बाद बोला, "सब कुछ ठीक है अब. चिंता की कोई बात नही है. लेकिन अभी आराम कीजिए."

डॉक्टर के जाने के बाद राहुल ने जाने की बात नही की. उसे पता था कि चाचा जी उसे नही जाने देंगे. मगर उसे हर हाल में दिल्ली के लिए निकलना था. वो लेट गया वापिस बिस्तर पर चाचा जी को दीखाने के लिए. शाम घिर आई थी. राहुल रात को आराम से निकल सकता था. उसने अपना पर्स चेक किया. ज़्यादा पैसे नही थे उसमे. शुक्र है एटीएम कार्ड था उसमे.

रात को सबके सोने के बाद राहुल चुपचाप घर से निकल दिया. एक टॅक्सी पकड़ी उसने एयर पोर्ट के लिए. रास्ते में उसने एक एटीएम से पैसे निकलवाए. एक शोरुम से उसने नये कपड़े भी खरीद लिए, क्योंकि जिन कपड़ो में वो था वो मैले लग रहे थे. ना जाने क्यों उसकी नज़र एक जीन्स पर पड़ी और वो उसने खरीद ली. ‘‘आलिया को पसंद आएगी ये जीन्स.’’ शोरुम के ट्राइयल रूम में ही उसने कपड़े चेंज कर लिए. उसने खुद जीन्स ही खरीदी थी और खूब जच रही थी उस पर.

टिकट आसानी से मिल गयी उसे. सुबह ४ बजे की फ्लाइट थी. राहुल बोरडिंग पास लेकर सेक्यूरिटी चेक कराने के बाद बैठ गया बोरडिंग के इंतेज़ार में बैठा सोच रहा था.

‘‘कैसी होगी मेरी जरीना, क्या बीती होगी उस पर उस सनडे को. काश मैं अपने गुस्से को शांत रख पाता तो ये नौबत ना आती. मगर मेरी जगह कोई भी होता तो ऐसा ही करता. मुझे माफ़ करदो जरीना, तुम्हारा गुनहगार हूँ मैं. आ रहा हूँ अब तुम्हारे पास. जैसे ही होश आया मुझे मैं निकल पड़ा हूँ तुम्हारे लिए. पता नही किस हाल में हो तुम. तुम ठीक तो हो ना आलिया ?’’ आँखे नम हो गयी राहुल की ये सब सोच कर.

‘‘अगर मैं कोमा में नही होता तो बिल्कुल आता मैं आलिया चाहे पट्टीया बँधी होती चारो और मेरे ...पर आता में ज़रूर.’’ राहुल बहुत भावुक हो रहा था.

स्वाभिक भी था. जब प्यार राहुल और आलिया के प्यार जैसा हो तो भावुक हो जाना सावभाविक है.

बोरडिंग की अनाउन्स्मेंट हुई तो राहुल फ़ौरन उठ गया. ये अहसास कि वो अपनी आलिया के पास जा रहा है उसके चेहरे पर रोनक आ गई.

२ घंटे में वो मुंबई से दिल्ली पहुँच गया. मगर अभी सुबह के ६ ही बजे थे. "उसी होटेल में चलता हूँ जिसमे आलिया के साथ ठहरा था."

आ गया राहुल टॅक्सी लेकर उसी होटेल में और रिक्वेस्ट करने पर रूम नो ११४ ही मिल गया उसे. सुबह के ७ बज चुके थे. फ्रेश हो कर ब्रेकफास्ट किया उसने. कब ९ बज गये पता ही नही चला. रूम से चेक आउट नही किया उसने. "एक बार यही वापिस आ कर उस दिन की लड़ाई को याद करेंगे. कितने तडपे थे हम दोनो एक दूसरे से लड़ कर."

चल दिया राहुल आलिया से मिलने की उम्मीद दिल में लेकर उसकी मौसी के घर की ओर. दिल में एक अजीब सी तड़प और बेचैनी थी उसके जिसे शब्दो में नही कहा जा सकता. प्यार करने वाले इस तड़प को बखूबी समझ सकते हैं.

राहुल को याद था अड्रेस आलिया की मौसी का. ठीक १०:३० पर वो आलिया की मौसी के घर के बाहर था. दरवाजा खड़काया उसने. मौसी ने दरवाजा खोला.

"किस से मिलना है आपको." मौसी ने कहा.

"मुझे आलिया से मिलना है, प्लीज़ बुला दीजिए उसे."

मौसी तो हैरान रह गयी ये सुन कर, "क्या तुम राहुल हो?"

"जी हां मैं राहुल हूँ."

मौसी के चेहरे पर डर के भाव उभर आए. उन्होने बाहर दायें..बायें झाँक कर देखा और राहुल को अंदर खींच लिया.

"किसी और से तो आलिया के बारे में नही पूछा तुमने."

"नही मैं सीधा यहीं आया हूँ." राहुल ने हैरानी में कहा.

“कितने दिनो बाद आए हो. कैसी मोहबत थी तुम्हारे दिल में आलिया के लिए. बहुत तड़पती थी वो तुम्हारे लिए और तुम आज आए हो, एक साल बाद.”

“आलिया कहा है, उसे बुला दीजिए प्लीज़.” राहुल गिड़गिडया

मौसी कुछ बोलने की बजाए खुद फूट-फूट कर रोने लगी. “वही तो पता नही चल रहा कि कहा है मेरी बच्ची.”

“आप ये क्या कह रही हैं.”

“सच कह रही हूँ बेटा, कुछ नही पता कि वो कहा है, कैसी है, किस हाल में है.”

राहुल तो सुन ही नही सका ये सब. बहुत बेचैन हो गया वो और बोला, “ये सब कैसे हुवा, क्या आप बताएँगी.”

“पहले तुम ये बताओ कि तुम्हे आज अचानक याद कैसे आ गयी आलिया की. चिट्ठी में तो तुमने उसे ले जाने को लिखा था. सारा दिन वो बाल्कनी में आ-आ कर पागलो की तरह तुम्हे ढूंड रही थी. क्यों किया तुमने ऐसा मेरी बच्ची के साथ.”

“मैं कोमा में था, नही आ सकता था..अगर होश होता मुझे तो कोई ताक़त मुझे नही रोक सकती थी यहा आने से.” राहुल मौसी को पूरी बात सुनाता है.

“अल्लाह रहम करे तुम दोनो की महोब्बत पर. मैं तो समझ ही नही पाई थी शुरू में तुम दोनो के प्यार को. ज़बरदस्ती शादी करवा रही थी आलिया की सलीम से.”

“सलीम…कौन सलीम.” राहुल ने हैरानी में पूछा.

“सलीम एक ऐसा बाहरूपिया है जिसे समझने में मैने बहुत बड़ी भूल की थी. सुनो तुम्हे सब बताती हूँ तभी तुम पूरी बात समझ पाओगे.”

“तुम्हारे बारे में पता चलने के बाद, मैने तो आलिया को एक कमरे में बंद कर दिया था. एक हफ्ते के अंदर शादी कर देना चाहती थी आलिया की सलीम के साथ. आलिया बहुत

दरखास्त करती थी मुझसे की मेरी बात सुन लो एक बार. पर मैने उसकी एक नही सुनी. पर एक रात जब मैं उसे खाना देने गयी तो वो फूट-फूट कर रोने लगी और सुबक्ते हुवे बोली, "मौसी थोड़ा सा ज़हर दे दो मुझे. मैं जीना नही चाहती. मैं राहुल से बहुत प्यार करती हूँ. मैं उसके सिवा किसी और से शादी नही कर सकती. मेरा शरीर और मेरी रूह राहुल की है मौसी. अगर मेरे साथ ज़बरदस्ती की गयी तो मैं जान दे दूँगी अपनी. पर मैं किसी भी हालत में सलीम शी शादी नही करूँगी. ऐसा होने से पहले मैं अपनी जान दे दूँगी."

मेरा तो दिल बैठ गया ये सब सुन कर. मैने दरवाजा खोला और आलिया के पास आकर उस से पूछा, "आख़िर क्या कारण है की तुम उस काफ़िर के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हो."

"प्यार करती हूँ मैं राहुल से. वो भी मुझे बहुत प्यार करता है. उसके कारण ही जींदा हूँ मैं वरना मर जाती कब की. उसी ने मुझे दंगो से बचाया और उसी ने मुझे जीने की चाह दी. वरना मैं कब की खुद को ख़तम कर चुकी होती." आलिया ने सुबक्ते हुवे पूरी कहानी सुनाई मुझे

मैने कहा, "हाई रब्बा कितना बड़ा गुनाह करने जा रहे थे हम. मेरी बच्ची मुझे माफ़ करदे. नही होगी तुम्हारी शादी सलीम से. लेकिन ये बात अपने तक ही रखना. अकरम और उसके अब्बा को भनक भी नही लगनी चाहिए इस सब की."

"मौसी मेरा वो खत मुझे वापिस दिलवा दो."

"दिलवा दूँगी....सलीम अच्छा लड़का है वो दे देगा चुपचाप वो खत. पर एक बात बताओ तुम्हारा राहुल तो आया नही तुम्हे लेने. उसे तो आना चाहिए था अगर इतनी महोब्बत थी तुमसे."

"ज़रूर कोई बात रही होगी मौसी वरना राहुल ज़रूर आता. बहुत प्यार करता है वो मुझे. मुझे जाने दो मौसी. अगर वो नही आ पाया तो मैं चली जाती हूँ. मैं नही रह सकती उसके बिना" आलिया रोने लगी थी ये बोलते हुवे

मुझे वो बिल्कुल दीवानी लग रही थी. मैने कहा, "तुम कैसे जाओगी अकेले और मैं साथ चल नही सकती. क्या करूँ."

“मैं चली जाऊंगी मौसी…मुझे जाने दो…यहा मैं और रही तो घुट-घुट कर मर जाऊंगी.”

“टिकट भी तो करवाना पड़ेगा. मैं करती हूँ कुछ. कल या परसो का टिकट करवा देती हूँ. तुम चिंता मत करो. खाना खाओ चुपचाप मैं टिकट का इंतजाम करती हूँ.”

मैने २ दिन बाद का टिकट करवा दिया आलिया का किसी को बोल कर. सलीम कही गया हुवा था इसलिये उस से वो खत नही ले पाई मैं. पता नही कैसे उसे भनक लग गयी की आलिया गुजरात जा रही है और वो उस दिन सुबह आ धमका यहाँ जिस दिन आलिया को दोपहर को निकलना था.

“खाला ये सब क्या हो रहा है मेरी पीठ पीछे.”

“क्या हुवा सलीम मैं कुछ समझी नही.”

“हमें पता चला है कि आलिया आज गुजरात जा रही है. क्या मैं पूछ सकता हूँ कि मेरी होने वाली बीवी मुझसे पूछे बिना गुजरात क्यों जा रही है.”

मुझे बहुत गुस्सा आया उसके ऐसे बर्ताव पर, मैं बोली, “अभी वो बीवी हुई नही है तुम्हारी सलीम. और मैने ये शादी ना करने का फ़ैसला लिया है. आलिया को तुम पसंद नही हो.”

“हां-हां उसे तो वो काफ़िर पसंद है. ये हमारे प्यार की बेज़्जती है खाला और हम ये कतयि बर्दाश्त नही करेंगे.”

मैने पहली बार सलीम को ऐसे रूप में देखा था. वो मुझसे पूछे बिना ही सीधा आलिया के कमरे की तरफ चल दिया.

मैने उसे टोका, “सलीम रूको कहा जा रहे हो.”

“आप बीच में ना पड़े खाला ये मेरे और आलिया के बीच की बात है.”

“रूको यही…तुम होते कौन हो ऐसा बोलने वाले.” मैं चिल्लाई

पर सलीम पहुँच गया आलिया के पास और जब मैं वहा पहुँची तो उसने आलिया के बाल पकड़ रखे थे. दर्द से कराह रही थी मेरी बच्ची. सलीम उस वक्त एक शैतान लग रहा था मुझे.

मैने छुड़ाने की कोशिश की पर मुझे धक्का दे दिया सलीम ने. सर पर मेरे बहुत गहरी चोट लगी. ये तो आलिया ने हिम्मत दीखाई. उसके हाथ के करीब ही एक फुलदान रखी थी. उसने उठा कर वो सलीम के सर पर दे मारी. सलीम गिर गया नीचे. हम दोनो तुरंत बाहर आ गये और बाहर से कुण्डी लगा दी.

"आलिया तुम अभी निकल जाओ यहा से. अकरम और उसके अब्बा को पता चल गया तो और ज़्यादा मुसीबत हो जाएगी. तुझे तो पता ही है कि किस तरह से फरिदा को काट डाला था उन दोनो ने. इस से पहले कि बात और ज़्यादा बिगड़े तुम चली जाओ यहा से और अपनी जींदगी में खुश रहो.

"मेरा वो खत खाला."

"खत से ज़्यादा ज़रूरी तुम्हारा यहा से निकलना है. ये सलीम दरवाजा तोड देगा जल्दी ही. तुम जाओ मेरी बच्ची और खुश रहो. बस यही दुवा कर सकती हूँ मैं तुम्हारे लिए. इस से ज़्यादा और कुछ नही कर सकती तुम्हारे लिए."

मैने आलिया को पैसे भी दे दिए ताकि सफ़र में कोई दिक्कत ना हो.

मगर आलिया को निकले अभी १० मिनिट ही हुवे थे कि सलीम भी दरवाजा तोड कर बाहर आ गया.

"खाला आपने ये अच्छा नही किया. हम आपको कभी माफ़ नही करेंगे. मैं भी देखता हूँ कि कैसे पहुँचती है आलिया गुजरात. अगर वो मेरी नही हुई तो किसी की भी नही होगी." सलीम निकल गया घर से अनाप सनाप बकते हुवे. उसका सही चरित्र तो मुझे उस दिन ही पता चला था. अच्छा हुवा जो मैने अपनी भूल सुधार ली.

मगर बेटा उस दिन के बाद ना आलिया का कुछ पता है ना सलीम का. उस दिन से आज तक कुछ खबर नही है आलिया की. ना ही सलीम का कुछ अता पता है.

"हे भगवान इतना कुछ हो गया आलिया के साथ और मैं वहा पड़ा हुवा सोता रहा. इस से अच्छा तो भगवान मुझे मार ही देते."

"अल्लाह रहम करे तुम दोनो की महोब्बत पर. मुझसे जो बन पड़ा मैने किया. इस से ज़्यादा कुछ नही कर सकती थी मैं."

मौसी की बाते सुन कर राहुल तो बिखर सा गया. समझ नही पा रहा था कि कैसे रीअॅक्ट करे. आलिया के साथ क्या बीती होगी ये सोच-सोच कर उसका दिमाग़ घूम रहा था.

"क्या आपने पोलीस में कंप्लेंट की आलिया की गुमशुदगी की?" राहुल ने भावुक आवाज़ में पूछा.

"की थी बेटा की थी. पर कुछ फायदा नही हुवा. मैं गुजरात भी गयी थी उसे ढूँडने. मुझे लगा था कि वो गुजरात में ही होगी तुम्हारे साथ. पर तुम्हारे घर तो ताला लगा था. हमारी जान-पहचान के जो लोग हैं वहा सब से मिली मैं. पता नही क्यों यही अंदेसा होता है कि कुछ अनहोनी हुई है उसके साथ."

"नही…नही ऐसा नही हो सकता. मेरी आलिया को कुछ नही हो सकता. भगवान इतने निर्दयी नही हो सकते." राहुल पागलो की तरह बोला. बात ही कुछ ऐसी थी.

"हां बेटा उम्मीद तो मैं भी यही रखती हूँ कि आलिया ठीक होगी ज़हा भी होगी."

"बहुत…बहुत धन्यवाद आपका जो आपने इतना कुछ किया आलिया के लिए. क्या आप सलीम के घर का पता बता सकती हैं." राहुल ने भावुक हो कर कहा.

"वहा मत जाना और यहा आस पास किसी से बात भी मत करना. तुम्हारी जान पे बन आएगी. चुपचाप यहा से जाओ बेटा. यहा तुम दोनो के प्यार को कोई नही समझ सकता." मौसी ने कहा.

"फिर भी बता दीजिए, क्या पता कोई सुराग मिल जाए आलिया के बारे में."

"ठीक है बेटा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी." मौसी ने कहा.

आलिया की मौसी ने राहुल को सलीम का अड्रेस बता दिया और बोली, ‘‘संभाल कर रहना बेटा. तुमसे कोई नाता नही है..फिर भी पता नही क्यों तुम्हारी चिंता हो रही है.’’

‘‘यही इंसानियत है…आप नेक दिल हैं इसलिये.. मुझे आलिया की तलाश करना है. मुझे यकीन है कि वो जहा भी होगी सही-सलामत होगी. भगवान ऐसा अनर्थ नही कर सकते हमारे साथ. धन्यवाद आपका जो आपने हमारे लिए इतना कुछ किया.’’

‘‘काश कुछ और भी कर पाती बेटा. जाओ अपना ख्याल रखना.’’

राहुल ने मौसी के पाँव छुवे और चल दिया भारी मन से वहा से. बहुत ही व्यथित था मन उसका.

राहुल मौसी के घर से सीधा सलीम के घर पहुँचा. उसने घर का दरवाजा खड़काया तो एक लड़की ने दरवाजा खोला. ‘‘क्या सलीम का घर यही है.’’

‘‘जी हां कहिए…क्या काम है.’’ लड़की ने कहा. लड़की का नाम हिना था. वो सलीम की छोटी बहन थी.

‘‘देखो मैं घुमा फिरा कर बात नही करूँगा.’’

‘‘किसी ने कहा भी नही जनाब आपसे कि घुमा-फिरा कर कहें. क्या काम है जल्दी बतायें. बहुत काम रहते हैं मुझे’’ हिना ने कहा.

‘‘मेरा नाम राहुल है. मैं आलिया की तलाश कर रहा हूँ. उसी सिलसिले में आया हूँ यहा.’’ राहुल ने कहा.

हिना को तो गुस्सा आ गया ये सुन के, ‘‘तो तुम हो राहुल.’’ हिना ने गला पकड़ लिया राहुल का. ‘‘बताओ मेरे भैया कहा हैं वरना जान से मार दूँगी.’’

‘‘कौन है हिना…किसके साथ लड़ रही हो.’’ अंदर से हिना की अम्मी ने आवाज़ दी.

“देखो…मुझे कुछ नही पता सलीम के बारे में. मगर अगर तुम्हे पता है तो बता दो वरना.” राहुल ने कहा.

“वरना क्या कर लोगे तुम…तुम्हे जिंदा नही छोड़ूँगी मैं. बताओ कहा हैं मेरे भाई.”

“छोडो मुझे…पागल हो गयी हो क्या…छोडो.” हिना ने राहुल के गले को कस के पकड़ रखा था. जब हिना नही मानी तो थक हार कर राहुल को उसे धक्का देना पड़ा और वो दूर ज़मीन पर जा कर गिरी. उसका सर ज़मीन से टकराने के कारण हल्का सा खून निकल आया उसके माथे से.

राहुल ये देख कर विचलित हो गया और आगे बढ़ कर हिना को उठाया, “माफ़ करना…मैं यहा लड़ाई करने नही आया हूँ. आलिया को ढूंड रहा हूँ मैं. अपनी आलिया को. मुझे नही पता सलीम कहा है. मैं आलिया की तलाश में यहा आया हूँ. वैसे तुम मुझे कैसे जानती हो.”

“भैया की पँट की जेब से मिला था खत तुम्हारा जो कि तुमने आलिया के लिए लिखा था. तुम दोनो का प्यार अच्छा लगा मगर तुम दोनो के प्यार के कारण मेरे भैया ला-पता हैं. मुझे तुम दोनो का ही हाथ लगता था इस सब में. इसलिये गुस्सा कर रही थी तुम्हारे उपर.”

“कल होश आया था मुझे. कोमा में था मैं एक साल से. आलिया को लेने नही आ सका था इस कारण. आज उसकी मौसी के घर गया तो पता चला कि वो गायब है एक साल से. पूछो मत क्या गुज़री है दिल पे. मुझे आलिया की मौसी ने बताया की सलीम भी उसी दिन से गायब है. वो गया भी था आलिया के पीछे ही. बस अपनी आलिया को ढूंड रहा हूँ मैं. उसी की तलाश मुझे यहा ले आई. माफ़ करना मुझे…मेरा कोई इरादा नही था आपको चोट पहुँचाने का.”

“आप भी मुझे माफ़ कर दीजिए. बहुत दुखी हूँ अपने भाई जान के कारण. इसलिये आप पर बरस पड़ी. जब से भैया लापता हुवे हैं, इस घर में मातम है. अम्मी बिस्तर पर पड़ी है… अब्बा भी गुजर गये ६ महीने पहले. सब कुछ बिखर गया हमारा. तभी गुस्सा था मुझे तुम दोनो से. मन होता था कि मिल जाओ तुम दोनो एक बार, तो वो हाल करूँ तुम दोनो का की भूल जाओगे सब कुछ.”

“मैं समझ सकता हूँ तुम्हारे ज़ज्बात.” राहुल ने भावुक हो कर कहा

“क्या नाम है तुम्हारा?”

“हिना…”

“हिना…क्या कुछ भी ऐसा बता सकती हो जो कि मुझे काम आ सके.”

“मुझे खुद कुछ नही पता. जितना आपको पता है उतना ही मुझे पता है. तुम आलिया को ढूंड रहे हो.अगर मेरे भैया की भी कुछ खबर लगे तो हमें बता देना. बहुत मेहरबानी होगी आपकी.”

“बिल्कुल ये भी क्या कहने की बात है. चलता हूँ मैं….”

“चाय पी कर जायें आप तो अच्छा होगा.”

“नही ..नही तकल्लूफ की कोई ज़रूरत नही है.” राहुल ने कहा.

“जिस दिन वो खत मिला मुझे भैया की जेब से तो समझाना चाहती थी उन्हे. मुझे लग गया था कि उनकी और आलिया की शादी ठीक नही रहेगी. मगर उस दिन लौटे ही नही घर भैया. और आज तक उनका कुछ आता-पता नही है.” रो पड़ी हिना बोलते-बोलते.

“मैं समझ रहा हूँ तुम्हारे दुख को. मैं भी आलिया के लिए उतना ही परेशान हूँ, जितना की तुम सलीम के लिए.”

“तुम रूको मैं चाय लाती हूँ.”

“चाय की जगह अगर वो खत दे दो तो महरबानी होगी. आलिया के लिए है वो. बस उसी का हक़ है उस पर.”

“ला ही रही थी मैं. मैं उसे रख कर क्या करूँगी.” हिना ने कहा.

हिना चाय के साथ-साथ राहुल का लिखा हुवा खत भी ले आई.

“शुक्रिया आपका इस खत के लिए. चाय नही पी पाऊंगा. कुछ मन नही है अभी. प्लीज़ बुरा मत मान-ना.” राहुल ने कहा.

“मैं टूट पड़ी थी आप पर जैसे ही आप आए. अगर चाय पी कर जाएँगे तो दिल को सुकून मिलेगा की आपने मुझे माफ़ कर दिया.” हिना के कहा.

“ठीक है आपकी खातिर पी लेता हूँ.” राहुल ने कहा और चाय का कप उठा लिया ट्रे से.

राहुल ने चुपचाप चाय पी और हिना का शुक्रिया करके वहा से चल दिया. उसे कुछ समझ नही आ रहा था कि आख़िर कहा गायब हो गये आलिया और सलीम.

राहुल पूरा दिन वही आस पास घूमता रहा. होटेल जाने का मन ही नही हुवा उसका.

शाम को वापिस आकर बिस्तर पर गिर गया वो. “हे भगवान ये कैसी सज़ा दी है आपने हमें. क्या हम दोनो के साथ ऐसा करना ज़रूरी था. एक बार क्या बीछड़े दुबारा मिलना नामुमकिन सा लग रहा है. अगर हमें प्यार के रिश्ते में बाँधने के बाद यही सब करना था तो इस से अच्छा यही होता की आप हमें मार डालते. अब कहा ढूंडू आलिया को. ” आँखे भर आई आँसुओ से ये बोलते हुवे राहुल की.

राहुल को वो दिन याद आ गया जब वो आलिया के साथ उसी रूम में रुका था. कितने खुश थे वो दोनो. वो प्यार और तकरार उसे बार-बार याद आ रहा था. आलिया का बिस्तर को हथियाना अनायास ही उसके होंटो पर मुस्कान बिखेर गया और और वो हंसते हंसते रो पड़ा, “कहा हो तुम जरीना…कहा हो. ”

राहुल उठा फ़ौरन और उसने अपने घर चलने का फ़ैसला किया. होटेल से चेक आउट करके वो सीधा दिल्ली के एयर पोर्ट पहुँचा और गुजरात के लिए टिकट खरीदी. रात १० बजे की फ्लाइट थी. वो १२ बजे पहुँच गया वापिस अपने शहर. बहुत ही दुखी मन से बढ़ रहा था अपने घर की तरफ. एयर पोर्ट से उसने एक टॅक्सी ले ली थी. जब टॅक्सी ने उसे उसके घर के बाहर छोडा तो वो भावुक हो गया, “कैसे जाऊ इस घर में, तुम्हारे बिना, जरीना…कहा हो तुम.”

राहुल टॅक्सी वाले को भाड़ा देना भी भूल गया. टॅक्सी से उतर कर घर की तरफ चल दिया.

“सर २०० रुपये हुवे.”

“ओह हां…मैं भूल गया सॉरी.” राहुल ने २०० रुपये निकाल कर टॅक्सी वाले को दे दिए.

“राहुल ने दरवाजा खोल कर लाइट जलाई तो हैरान रह गया. दरवाजे के पास ही बहुत सारे खत पड़े थे. उसने तुरंर एक खत उठाया…खत आलिया का था. राहुल की आँखे चमक उठी आलिया का खत देख कर. उसने सारे खत देखे उठा के. हर खत के पीछे एक ही नाम लिखा था, जरीना.

२२.०४.२००३

राहुल ने सारे खत डेट वाइज़ सेट किए और बैठ गया सोफे पर. घर में हर तरफ धूल मिट्टी बिखरी पड़ी थी. मगर उसका ध्यान सिर्फ़ आलिया की चिट्ठियो पर था. उसने सोफे को अच्छे से झाड़ कर खत रख दिए और पहला खत पढ़ना शुरू किया. खत ८ एप्रिल २००२ की डेट का था.

“ मेरे प्यारे **राहुल,**

तुम नही आ पाए दिल्ली मुझे लेने. क्या पूछ सकती हूँ कि क्यों नही आ पाए. चलो छोड़ो कोई लड़ाई नही करना चाहती तुमसे. एक लड़ाई के बाद ही ये हाल है दूसरी लड़ाई हुई तो पता नही क्या होगा. कोई बात नही मेरे राहुल. मैं खुद आ गयी हूँ गुजरात. पर ये क्या राहुल तुम्हारा कुछ अता-पता ही नही है. कहा हो तुम राहुल. क्या मुझसे कोई भूल हो गयी है जो की मुझे अकेला तड़पने को छोड गये हो.तुम्हे नही पता किन मुश्किलों का सामना करके पहुँची हूँ मैं गुजरात. और यहाँ कुछ समझ नही आ रहा कि कहाँ जाऊ. तुम्हारे सिवा कोई भी तो नही है मेरा. अब क्या करूँ राहुल कुछ समझ नही आ रहा.

परेशान हूँ तुम्हारे लिए. कुछ तो बात ज़रूर होगी वरना तुम मुझे लेने ज़रूर आते. मैं अकेली आई हूँ और बहुत मुश्किल से आई हूँ. तुम मिलोगे तो तुम्हे बताऊंगी. अभी तुम्हे ढूंड रही हूँ हर तरफ. पर तुम्हारा कुछ पता नही चल रहा. तुम्हारे घर के आस पास कुछ पूछने की हिम्मत नही हुई. सुना है कि माहोल अभी भी तनाव भरा है. मुझे डर लग रहा है राहुल.

मगर सबसे बड़ी दिक्कत ये है कि कहा जाऊ अब. तुम्हारे घर ताला लगा है. चाबी होती मेरे पास तो घुस जाती खोल कर चुपचाप. वो घर मेरा ही तो है ना राहुल. हमारा घर है..जहा हम एक महीना साथ रहे थे. वहीं तो हमारे दिलों में प्यार जागा था. हम दोनो का प्यारा घर है वो, प्यार की यादों में डूबा हुवा घर.

हमारे घर के पास जो मार्केट है वही गुजराती रेस्टोरेंट में बैठ कर लिख रही हूँ ये सब. समझ नही आ रहा कि कहा जाऊ अब. तुम अगर वापिस आओ तो मेरा खत पढ़ कर तुरंत अपने कॉलेज आ जाना. वही कैंटीन में मिलूंगी मैं. इंतेज़ार करूँगी तुम्हारा प्लीज़ जल्दी आना... मुझे और कितना तडपाओगे तुम. खुद तो नही आए मुझे लेने अब मैं आ गयी हूँ तो पता नही कहा हो. तुम मिलो एक बार खूब लड़ूँगी तुमसे. पर इस बार लड़ाई करके दूर नही जाऊंगी तुमसे. बहुत भूल हुई थी मुझसे उस दिन. बिना सोचे समझे मौसी के घर आ गयी थी. मुझे होटेल जाना चाहिए था. उस एक ग़लती की वजह से आज तक हम मिल नही पाए. अब और पता नही कितना इंतेज़ार करना पड़ेगा. खत मिलते ही आ जाना कॉलेज देर मत करना बहुत बेचैन हूँ मैं तुमसे मिलने के लिए. इतनी बेचैन की तुम अंदाज़ा भी नही लगा सकते. जल्दी आना प्लीज़..........

तुम्हारे इंतेज़ार में

तुम्हारी जरीना.”

आलिया के लिखे हर बोल से राहुल के तन-बदन में हलचल हो रही थी. आँखे छलक उठती थी उसकी हर एक बोल को पढ़ कर. उस खत से एक बार फिर ये बात क्लियर हो रही थी उसे कि आलिया जितना प्यार कोई नही कर सकता उसे.

“ओह...जरीना, कितना अनमोल प्यार है तुम्हारा मेरे लिए. तुम्हारा गुनहगार बन गया हूँ. जिस वक्त तुम्हे मेरी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी मैं यहा नही था. मैं कितना बेकार फील कर रहा हूँ कह नही सकता. काश मैं होता यहा उस दिन तो अपनी पलके बिछा कर स्वागत करता तुम्हारा. बहुत बेबस महसूस कर रहा हूँ मैं ये सब पढ़ कर. देखता हूँ अगले खत में क्या है.” राहुल ने अपने आँसुओ को पोंछते हुवे कहा.

राहुल ने अगला खत उठाया. खत ९ एप्रिल २००२ को लिखा गया था.

“आलिया ने खुद यहा आकर ये खत डाले हैं. पोस्ट ऑफीस की कोई स्टॅम्प या टिकट नही है. देखता हूँ इसमे क्या लिखा है आलिया ने.” राहुल ने कहा और पढ़ना शुरू किया.

“ मेरे प्यारे **राहुल,**

आख़िर बात क्या है राहुल. कुछ समझ में नही आ रहा. तुम ठीक तो हो ना. कही से भी कोई खबर नही मिल रही तुम्हारी. सारा दिन मैं बैठी रही कॉलेज की कैंटीन में तुम्हारे इंतेज़ार में. आख़िर क्यों तडपा रहे हो मुझे इतना तुम. तुम्हारे कुछ दोस्तो से भी बात की मैने. पर किसी को कुछ नही पता तुम्हारे बारे में.

तुम कितने निर्दयी निकले राहुल. अगर कही जाना ही था तुम्हे तो कम से कम कोई मेसेज तो छोड़ जाते मेरे लिए. मैने लिखा था ना तुम्हे कि अगर तुम नही आए मुझे लेने तो मैं खुद आ जाऊंगी. आ गयी हूँ मैं खुद ही. पर अब आ कर सर छुपाने के लिए जगह को तरस रही हूँ. कॉलेज में हॉस्टेल भी नही मिल रहा. मेरे पास कोई भी सबूत नही है कि मैं इस कॉलेज की स्टूडेंट हूँ. सब कुछ तो जल चुका है दंगो में. अब कैसे समझाऊ इन लोगो को. एक दिन के लिए भी कोई कमरा देने को तैयार नही है. अब कहा जाऊ राहुल कुछ समझ नही आ रहा. मुझे बहुत डर लग रहा है. कल भी कॉलेज में ही मिलूंगी तुम्हे यही कैंटीन में. देखती हूँ कुछ आज की कहा रुकु. अजीब मुसीबत में डाल दिया है तुमने मुझे. मन तो कर रहा है की ताला तोड़ कर घुस जाऊ मैं घर में. मेरा भी हक़ है उस पर. पर वहा माहोल ठीक नही है और लोगो ने देख लिया तो मुसीबत हो जाएगी. वैसे भी तुम्हारे बिना मुझे वहा डर ही लगेगा.

वैसे कितनी अजीब बात हो रही है. कभी मैं तुम्हे देखना भी पसंद नही करती थी इस कॉलेज में और आज आँखे बस तुम्हे ही खोज रही हैं. और इसी बात का फायदा उठा कर तुम मुझे सता रहे हो. मज़ाक कर रही हूँ. मज़ाक में दर्द भी है थोड़ा सा. परेशान जो हूँ. मुझे पता है ज़रूर कोई मजबूरी होगी तुम्हारी राहुल वरना तुम ज़रूर आते. ये चिट्ठी भी डाल दूँगी तुम्हारे घर में. डर लगता है वहा जाते हुवे. अपने जले हुवे घर को देख कर अम्मी, अब्बा और फातिमा की याद आती है बहुत. डर लगता है बहुत जब अपने घर को देखती हूँ. पर कोई चारा भी तो नही. ये खत खुद ही डालना होगा तुम्हारे घर में. जहा भी हो जल्दी आ जाओ और देखो की मैं किस हाल में हूँ.

तुम्हारी जरीना.”

राहुल फूट पड़ा इस बार. रोकना मुश्किल हो रहा था, “क्यों मेरे भगवान क्यों किया ऐसा हमारे साथ. प्यार करने वालो के साथ ऐसा हरगिज़ नही होना चाहिए. मैं क्यों नही था यहा…..देखता हूँ आगे क्या किया आलिया ने.”

राहुल ने तीसरा खत उठाया. “१६ एप्रिल २००२, पूरे एक हफ्ते बाद लिखी आलिया ने ये.” राहुल हैरत में पड़ गया कि क्या हुवा होगा आलिया के साथ इस एक हफ्ते के दौरान. राहुल ने पढ़ना शुरू किया.

“ मेरे प्यारे **राहुल,**

मिल गया है आसरा मुझे चिंता की कोई बात नही है. चिंता की बात बस ये है कि तुम्हारा अभी भी कुछ अता-पता नही है. रोज एक बार ज़रूर जाती हूँ घर तुम्हारे. वही मनहूस ताला टंगा रहता है. तुम्हारी फॅक्टरी भी गयी थी मैं तुम्हे ढूँडने. बड़ी मुश्किल से पता किया था अड्रेस उसका. मगर वहा अच्छा व्यवहार नही हुवा मेरे साथ. कुछ लोग मुझे छेड़ने लगे वहा. मैने एक व्यक्ति से पूछा भी तुम्हारे बारे में मगर उसे भी कुछ नही पता था. ज़्यादा देर नही रुक पाई वहा. बहुत ही बेकार माहोल है राहुल वहा. कुछ करना इस बारे में तुम. जिस तरह से लोग घूर रहे थे मुझे, मुझे बहुत ही डर लग रहा था. एक उम्मीद ले कर गयी थी फॅक्टरी तुम्हारी और भयबीत हो कर लौटी वहा से.

मैं अब एक छोटे से स्कूल में पढ़ा रही हूँ. उस दिन कॉलेज से तुम्हारे घर आई शाम को तो अब्दुल चाचा मिल गये मुझे. तुमने भी देखा होगा उन्हे कयि बार हमारे घर आते-जाते हुवे. उन्होने भी अपना सब कुछ खो दिया दंगो में. उनकी दो बेटियों की इज़्ज़त लूटी गयी उन्ही के सामने और उनके बेटे का सर काट दिया गया उन्ही के सामने. उन्हे भी मार डालते वो लोग शुकर है पोलीस आ गयी थी वक्त पर.

अब्दुल चाचा एक स्कूल चला रहे हैं जिसमे की अनाथ बच्चो को शिक्षा दी जा रही है. बहुत बच्चे अनाथ किए इन दंगो ने राहुल. कोई ५० बच्चे हैं स्कूल में. मुझे देख कर अब्दुल चाचा ने मुझे रिक्वेस्ट की, कि मैं उनके साथ जुड़ जाऊ क्योंकि उन्हे टीचर की ज़रूरत है. मेरे लिए इस से अच्छी बात नही हो सकती थी. स्कूल में ही रहने को कमरा मिल गया. और एक नेक काम करने का मौका दिया अल्लाह ने मुझे. बहुत अच्छा लगा मुझे इस स्कूल से जुड़ कर. मगर अब एक ही चिंता है. तुम पता नही कहा हो, किस हाल में हो. समझ में नही आ रहा कि किस से पता करूँ. जो भी कर सकती थी सब किया मैने, मगर कही भी कुछ पता नही चल रहा तुम्हारे बारे में. अब बहुत ही ज़्यादा चिंता हो रही है तुम्हारी. अगर घर आओ तो सीधे स्कूल आ जाना. मैं वही मिलूंगी. स्कूल बिल्कुल बस स्टॅंड के पास जो मस्ज़िद है उसके पास है. किसी से भी पूछ लेना की अब्दुल चाचा का स्कूल कौन सा है… सब बता देंगे.

कॉलेज छोड़ दिया है मैने राहुल. तुम्हारे बिना वहा जाकर करूँगी भी क्या. तुम आओगे तो फिर से जॉईन कर लेंगे हम दोनो. मगर अकेले नही जाऊंगी वहा. अब्दुल चाचा कहते रहते हैं कि कॉलेज जाओ… मगर मैं हरगिज़ नही जाऊंगी. राहुल अब इंतेहा हो चुकी है.…प्लीज़ आ जाओ अब और कितना तडपाओगे तुम. मर ही ना जाऊ कही मैं तुम्हारे इंतेज़ार में. प्लीज़……………

तुम्हारी जरीना.”

राहुल ने आखरी खत छोड कर सारे खत पढ़ लिए. हर खत में आलिया ने अपनी तड़प और बेचैनी को बखूबी लिख रखा था. वो डीटेल में स्कूल की आक्टिविटीज भी लिख रही थी. फाइनली राहुल ने आखरी खत उठाया. वो १.०४.२००३ को लिखा हुवा था. राहुल ने वो भी पढ़ना शुरू किया.

“ मेरे प्यारे **राहुल,**

धीरे-धीरे एक साल बीत गया और तुम्हारा अभी भी कुछ अता-पता नही है. सच कह रही हूँ बहुत चिंता हो रही है तुम्हारी. लेकिन मैं क्या करूँ कुछ समझ में नही आ रहा. रोज की तरह आज भी गयी थी घर. वही ताला टंगा मिला आज भी. उस ताले ने मेरी जींदगी बर्बाद कर दी है राहुल. एक साल से देख रही हूँ उस ताले को. रोज खूब भला बुरा कह कर आती हूँ उस ताले को.

वैसे बच्चो को खूब शिक्षा देती हूँ मैं कि उम्मीद का दामन नही छोडना चाहिए, मगर खुद मैं बीखर चुकी हूँ. कोई भी उम्मीद नही है जींदगी में. अगर जिंदा हूँ तो इन बच्चो की खातिर. मन लगाए रखते हैं मेरा ये. इन्हें पढ़ाने में वक्त बीत जाता है.

इतने खत लिख दिए हैं तुम्हे, जब तुम आओगे तो पढ़ते पढ़ते थक जाओगे. हां मुझे हल्की सी उम्मीद है अभी भी कि तुम ज़रूर आओगे. ये लिखते वक्त आँसू गिर रहे हैं इस काग़ज़ पर. पढ़ते वक्त तुम्हे अक्षर कुछ धुन्द्ले लगेंगे. अपने आँसू भी भेज रही हूँ इस खत के साथ उन्हे भी पढ़ना और अंदाज़ा लगाना कि किस कदर तडपी हूँ मैं तुम्हारे लिए. बस और नही लिख पाउंगी अब.

तुम्हारी जरीना”

राहुल बेचैन हो गया अब. आँसुओ की बरसात हो रही थी उसकी आँखो से. आँसू गम और खुशी दोनो रंगो में डूबे हुवे थे. गम था इस बात का कि, बहुत तडपी आलिया उसके लिए और खुशी थी इस बात की, कि अब वो अपनी आलिया से मिलने जा रहा था. उनके प्यार का इंतेहाँ अब ख़तम होने जा रहा था.

खत पढ़ते-पढ़ते आधी रात हो गयी थी. वो बेचैन हो रहा था अब्दुल चाचा के स्कूल जाने के लिए. और वो बस बिना सोचे समझे निकलने ही वाला था कि उसकी निगाह घर की हालत पर पड़ी, “शरम करो राहुल, देखो कितना गंदा हो रखा है घर. चारो तरफ धूल…मिट्टी बिखरी पड़ी है. आलिया देखेगी तो क्या कहेगी. पहले उसके स्वागत में ये घर तो चमका लो…फिर ले कर आना आलिया को.”

बस फिर क्या था राहुल पागलो की तरह जुट गया घर की सफाई में. घर के हर कोने को चमकाने में लग गया वो. रात के ३ बजे लगा था सफाई में और सफाई करते-करते सुबह के ७ बज गये. एक पल को भी नही रुका राहुल. बस लगा रहा घर को चमकाने में. आख़िर उसकी जान से प्यारी आलिया जो आ रही थी.

“मैं आ रहा हूँ आलिया आ रहा हूँ मैं. बस अब हम और नही तड़पेंगे एक दूसरे के लिए. बहुत कुछ सहा तुमने इस प्यार के लिए. मेरे लिए तो तुम ही भगवान बन गयी हो. जब प्यार ही भगवान होता है तो तुम्हे ये उपाधि दी जा सकती है क्योंकि इतना गहरा प्यार शायद ही कोई किसी को करता होगा. धन्य हो गया हूँ मैं तुम्हे अपनी ज़ींदगी में पाकर. मैं बस नहा लूँ…कही तुम कहो की बदबू आ रही है मुझसे. बस कुछ ही देर में हम मिलने वाले हैं, बहुत लंबे इंतेज़ार के बाद. मैं आ रहा हूँ आलिया बस आ रहा हूँ………

२२.०४.२००३. ९:०० सुबह

अपनी प्रेमिका से मिलने के अहसास में डूब गया था राहुल. पाँव नही टिक रहे थे उसके ज़मीन पर. तन-बदन में एक अजीब सी सेन्सेशन हो रही थी. मीठा मीठा सा अहसास हर वक्त उसे घेरे हुवे था. तड़प और बेचैनी भी उतनी ही थी.ये अहसास हर उस इंसान ने महसूस किए होंगे जिसने कभी प्यार किया होगा. अपने प्यार से मिलने की तड़प हर प्रेमी के अंदर कुछ ऐसा ही अहसास जगाती है.

राहुल नहा कर बाहर आया तो उसे समझ नही आया की क्या पहने. बेचैनी कुछ इस कदर हावी थी उसके उपर की कुछ डिसाइड करना मुश्किल हो रहा था. उसने आल्मिरा से ब्लू जीन्स निकाली और पहन ली. उसके उपर उसने वाइट शर्ट पहन ली.

"एक बार खूब तारीफ़ की थी आलिया ने इस कॉंबिनेशन की. मैं नहा कर ये कपड़े पहन कर निकला था तो वो तुरंत बोली थी, 'अरे वाह राहुल, ब्लू जीन्स और वाइट शर्ट कितनी प्यारी लग रही है तुम्हारे उपर.'

राहुल ने खुद को शीसे में देखा और बोला, "तुम दूर से देखते ही पहचान जाओगी मुझे इन कपड़ो में. आ रहा हूँ जरीना...अब और दूर नही रहेंगे हम."

बालों को खूब ध्यान से सँवारा राहुल ने. चेहरे पर अच्छे से क्रीम रगड़ ली. कोई कमी नही छोड़ना चाहता था. ये भी प्यार ही है. आप जिसे प्यार करते हैं उसके सामने सुंदर दीखने की चाहत सब में होती है.

"काश बाइक होती तो रात को भी आ सकता था तुम्हारे पास जरीना. बाइक उस दिन फॅक्टरी ही छोड आया था. चलो कोई बात नही जरीना. घर की सफाई कर दी है तुम्हारे स्वागत में. अपना दिल बिछा दिया है घर के दरवाजे पर. जब तुम प्रवेश करोगी यहा तो घर का कोना कोना महक उठेगा. तुम्हे नही पता जरीना. घर के ताले के कारण तुम ही नही तडपी...बल्कि ये घर भी तडपा तुम्हारे लिए. जब मैं इस घर में घुसा तो इस घर की तड़प महसूस की तुम्हारे लिए. बिल्कुल आलिया तुम्हारा ही तो घर है ये. हमारा घर है जहा हर कोने में हमारा प्यार बसा है. और सुकून की बात ये है की यहा अब सुख शांति है. हम दोनो चैन से रहेंगे इस घर में."

राहुल होंटो पर मुस्कान लिए घर से बाहर निकला. वो ऐसी मुस्कान थी जिस में प्यार ही प्यार बसा था. उसके घर के बिल्कुल सामने कमलेश मोदी रहते थे. उन्होने राहुल को देख लिया. तुरंत भाग कर आए उसके पास और बोले, "अरे राहुल बेटा, कहा थे तुम. सब कुशल मंगल तो है. दीखाई नही दीए काफ़ी दिन से."

"क्या आपको नही पता कि मुझ पर हमला हुवा था. मेरे घर के बाहर ही."

"नही बेटा मुझे तो कुछ नही पता. कब हुवा ये सब."

"एक साल पहले हुवा था." राहुल ने मोदी को पूरी बात बताई. मगर राहुल ने जानबूझ कर ये नही बताया कि झगड़ा आलिया के कारण हुवा था.

"ओह बहुत दुख हुवा जान कर. दरअसल उन दिनो माहोल बहुत खराब था बेटा. शाम ढलते ही घरो में घुस जाते थे हम सभी. तभी शायद किसी को पता नही चला तुम्हारे बारे में. शुक्र है कि अब सब सुख शांति है यहा. बहुत बुरा वक्त देखा है हम सभी ने यहा वडोदरा में."

"मुझे जल्दी कही जाना है अंकल बाद में मिलते हैं." राहुल ने कहा.

"हां बिल्कुल बेटा. अच्छा लगा तुम्हे इतने दिनो बाद देख कर. मिलते हैं तस्सली से तुम हो आओ. हां पर एक बात बतानी थी तुम्हे."

"हां बोलिए."

"अब्दुल खान की जो बेटी थी जरीना…उसे अक्सर देखा मैने तुम्हारे घर में कुछ डालते हुवे. वैसे अच्छा लगा उसे जींदा देख कर. उसका पूरा परिवार तो ख़तम हो गया था. बस वही बची है. कुछ दिन पहले मैने उस से बात करनी चाही मगर वो मेरे आवाज़ देने पर भाग गयी."

"ह्म्म वो डर गयी होगी अंकल…"

“वैसे तुम दोनो परिवारों में तो बिल्कुल नही बनती थी. उसका तुम्हारे घर में कुछ डालना मुझे अजीब लगा.”

“बाद में बात करूँगा अंकल. अभी बहुत जल्दी में हूँ.” राहुल एक मिनिट भी रुकने को तैयार नही था. तड़प ही कुछ ऐसी थी.

राहुल ने गली से बाहर आ कर एक ऑटो पकड़ा और चल दिया अब्दुल चाचा के स्कूल की तरफ. जैसे-जैसे स्कूल नज़दीक आ रहा था वैसे-वैसे उसकी बेचैनी बढ़ रही थी. “आखरी खत १.०४.२००३ को लिखा था उसने. १ से लेकर २१ तक कोई खत नही डाला उसने. नॉर्मली उसने हर हफ्ते एक खत डाला है. मेरी आलिया ठीक तो है ना भगवान. अब और कोई प्रॉब्लेम नही चाहिए मुझे अपनी जींदगी में. मुझे पता है आप इतने निर्दयी नही हो सकते. मगर फिर भी ना जाने क्यों दिल घबरा रहा है” अनायास ही ख्याल आ गया था राहुल को इन बातों का. दिल घबराने लगा था उसका.

ऑटो वाले ने उतार दिया राहुल को मस्ज़िद के बाहर. “कितने पैसे हुवे भैया.”

“५० रुपये.”

राहुल ने पर्स निकाल कर उसे ५० रुपये पकड़ाए और उस से पूछा, “क्या आपको अब्दुल चाचा के स्कूल का पता है कि वो कहा हैं.”

“मुझे ऐसे किसी स्कूल का नही पता. किसी और से पूछ लीजिए.” ऑटो वाले ने कहा और चला गया वहा से.

राहुल ने चारो तरफ नज़र दौड़ाई. कोई स्कूल नज़र नही आया उसे वहा. ना कोई स्कूल का बोर्ड था ना ही बच्चो का शोर. वह मस्ज़िद के पास गया और उसके बाहर खड़े एक व्यक्ति से पूछा, “भाई ये अब्दुल चाचा का स्कूल कहा है.”

“स्कूल तो मस्ज़िद के पिछली तरफ है. मगर अभी वो बंद है.”

“बंद है, क्यों बंद है भाई.”

“मुझे नही पता इस बारे में.” वो आदमी बोल कर वहा से चला गया.

राहुल को किसी अनहोनी की आशंका होने लगी. वो तुरंत गया मस्ज़िद के पीछे. एक मैदान था वहा जिसके चारो तरफ चार दीवारी थी. ८ कमरे बने थे वहा. मगर सभी पर ताले टँगे थे एक को छोड कर.”

राहुल तुरंत मुख्य द्वार खोल कर अंदर आया. कोई भी दीखाई नही दे रहा था. एक कमरा जो खुला था वो तुरंत उसकी और बढ़ा. अंदर एक कुर्सी पर एक बुजुर्ग बैठा था. उसके सामने एक टेबल रखी हुई थी.

“एकस्क्युज मी क्या ये अब्दुल चाचा का ही स्कूल है.”

“हां बिल्कुल वही स्कूल है. क्या काम है तुम्हे बेटा.”

“मुझे आलिया से मिलना है…क्या आप बता सकते हैं कि वो कहा है.”

वो बुजुर्ग तुरंत अपनी कुर्सी से उठा और बोला, “कही तुम राहुल तो नही”

“जी हां मैं राहुल ही हूँ. आप कैसे जानते हैं मुझे.”

उस बुजुर्ग ने तुरंत आगे बढ़ कर राहुल को गले लगा लिया और बोला, “अल्लाह का शुक्र है कि तुम आ गये. बेटा बहुत खुशी हुई तुम्हे देख कर. मैं ही हूँ अब्दुल चाचा और मैं ही चला रहा हूँ ये स्कूल.”

“आलिया कहा हैं…मुझे प्लीज़ उस से मिलवा दीजिए.”

“५ दिन इंतेज़ार करना होगा तुम्हे बेटा. आलिया मसूरी गयी हुई है बच्चो को लेकर. २० दिन का टूर बनाया था बच्चो के लिए.”

“मसूरी!.” राहुल उदास हो गया. मगर मन ही मन खुश था कि सब कुशल मंगल है.

“हां बेटा…५ दिन बाद लौट आएगी वहा से. वो तो जाना ही नही चाहती थी. बड़ी मुश्किल से भेजा उसे.”

“आपने बताया नही कि आप कैसे जानते हैं मुझे.”

“आलिया तो गुमसुम रहती थी बेटा. बताती नही थी कुछ. मगर रोज निकल जाती थी स्कूल से ये कह कर कि कुछ काम है. चिंता रहती थी मुझे उसकी. एक दिन गया उसके पीछे चुपचाप. गया तो पाया कि वो तुम्हारे घर जाती है चिट्ठी डालने. बहुत पूछने पर बताया उसने. बता कर बोली कि नही बताना चाहती थी क्योंकि कोई समझेगा नही. बेटा तुम दोनो के बारे में सुन कर यही लगा कि इंसानियत की मिसाल हो तुम दोनो. जो तुमने आलिया के लिए किया वो कोई आम इंसान नही कर सकता.”

“मसूरी में कहा रुके हैं वो लोग.” राहुल ने पूछा

“क्या तुम जाना चाहते हो वहा.”

“जी हां जाए बिना कोई चारा नही है. हम दोनो कुछ ऐसी हालत में हैं कि मिले बिना गुज़ारा नही है. आपको शायद ये पागल पन लगेगा मगर हमारी हालत ही कुछ ऐसी हो रही है.”

“समझ सकता हूँ बेटा. आलिया नही बताती मुझे तो कभी नही समझ पाता.”

अब्दुल चाचा ने उस जगह का अड्रेस दे दिया जहा आलिया बच्चो के साथ रुकी हुई थी.

“अच्छा मैं चलता हूँ चाचा जी. आपने मेरी अनुपस्थिति में आलिया के लिए जो भी किया उसके लिए बहुत आभारी हूँ.”

“कैसी बात करते हो बेटा. मैने कुछ नही किया. बल्कि उसके आने से स्कूल चलाने में बहुत मदद मिली मुझे. बच्चे उसके कंट्रोल में रहते हैं. बस उसी की सुनते हैं. बिल्कुल एक आइडीयल टीचर बन गयी है जरीना. बहुत मदद मिली मुझे उसके आने से.”

“ठीक है चाचा जी मैं चलता हूँ.”

“मसूरी जाओगे तुम अब.”

“जी हां और कोई चारा नही है.” राहुल ने कहा और वहा से चल दिया.

राहुल स्कूल से घर आया और एक बॅग पॅक किया. उसमें उसने कुछ कपड़े रख लिए. ज़रूरत का और समान भी रख लिया और निकल दिया वडोदरा एयर पोर्ट के लिए. दिल्ली की फ्लाइट ली उसने. शाम के ५ बजे दिल्ली पहुँच गया वो. दिल्ली से उसने मसूरी के लिए टॅक्सी की. रात के २ बजे पहुँचा वो मसूरी. उस टाइम आलिया के पास जाने का कोई मतलब नही था. और रात को अड्रेस ढूँडने में भी दिक्कत थी. टॅक्सी वाले ने साफ बोल दिया था कि वो लाइब्ररी पॉइंट पर छोड देगा. मसूरी का ज़्यादा कुछ नही पता था ड्राइवर को. लाइब्ररी पॉइंट पर बहुत सारे होटेल्स थे. रुक गया राहुल एक होटेल में.

बहुत थक गया था लंबे सफ़र से राहुल. कोमा से उठने के बाद वो बस इधर उधर भाग दौड़ में लगा था. आराम किया ही कहा था उसने. बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ गयी राहुल को.

"तुम आ गये राहुल…कितनी देर कर दी तुमने. मैं अगर मर जाती तो" आलिया मुस्कुराई.

"जरीना! ऐसा मत कहो" उठा गया राहुल सपने से. उसने लाइट जलाई और देखा की सुबह के ५ बज रहे हैं.

"पहली बार सपने में आई तुम जरीना. धन्य हो गया मैं अपने भगवान को सपने में देख कर. अब हक़ीक़त में देखने का भी वक्त आ गया है जरीना. आज हम हर हाल में मिल कर रहेंगे." राहुल फ़ौरन उठ गया बिस्तर से.

नहा धो कर सादे ६ बजे तक तैयार भी हो गया और निकल पड़ा होटेल से. उसने एक टॅक्सी पकड़ी लाइब्ररी पॉइंट से और निकल पड़ा केंप्टी फॉल्स की तरफ. उसके नज़दीक ही एक कस्बे में रुकी थी जरीना.

७ बजे पहुँच गया वो उस जगह पर. बच्चो के शोर से उसके दिल को तस्सल्ली मिली की वो सही जगह पहुँच गया है. बच्चो की आवाज़ गूँज रही थी हर तरफ. आवाज़ की तरफ उसके पाँव खींचे चले गये. एक बहुत बड़ा घर था, जिसके बाहर बहुत सारे बच्चे खेल रहे थे.

एक बुजुर्ग बैठा था कुर्सी पर और २ लड़कियाँ बच्चो को संभालने की कोशिश कर रही थी. एक का नाम जहारा था और दूसरी का नाम मलाला था. बच्चे अपने स्वाभाव के अनुसार इधर उधर भाग रहे थे. राहुल को आलिया कही नज़र नही आ रही थी. राहुल हर तरफ घूर-घूर कर देख रहा था.

जहारा की नज़र राहुल पर पड़ी तो वो उसके पास आई "क्या काम है आपको. कब से देख रही हूँ घूर-घूर कर देखे जा रहे हैं. बच्चो को अगवा करने का इरादा है क्या आपका."

"नही आप मुझे ग़लत समझ रहे हैं. मैं दरअसल आलिया को ढूंड रहा था. कहा है वो"

"आलिया को ढूंड रहे थे ? क्यों ढूंड रहे थे आलिया को. क्या काम है उस से."

"मेरा नाम राहुल है और मैं गुजरात से आया हूँ. प्लीज़ जल्दी से उसे बुला दीजिए"

"तुम राहुल हो?"

"हां क्यों? आपको कोई शक है."

"नही…हैरान हूँ आपको देख कर. आलिया को बहुत तडपाया आपने."

"क्या आप आलिया को बुला सकती हैं."

"धीरे बोलो. यहा किसी और को आलिया और तुम्हारे बारे में नही पता. मंदिर गयी है वो आज. कुछ दिनो से सोच रही थी जाने को. कह रही थी कि मंदिर में भी फरियाद लगा दू राहुल के लिए. क्या पता वो आ जाए वापिस मेरे पास."

"कहा है ये मंदिर."

"पास में ही है. आप शायद दूसरे रास्ते से आए हैं वरना आलिया रास्ते में ही मिल जाती आपको. बस अभी थोड़ी देर पहले ही निकली थी जरीना. थोड़ी देर पहले आते तो मिल ही जाती आपको."

"जहारा कौन है ये" उनको उस बुजुर्ग की आवाज़ आई जो कुर्सी पर बैठा था. उसका नाम सईद था.

"जाओ तुम अब. आलिया से बाहर मंदिर में ही मिल लो. सईद चाचा को पता चला तो तूफान मचा देंगे."

“थँक यू वेरी मच. मैं निकलता हूँ.”

राहुल मंदिर की तरफ दौड़ा. रास्ता समझ नही आ रहा था उसे. लोगो से पूछता-पूछता पहुँच ही गया मंदिर. भोले नाथ का मंदिर था वो. जब राहुल वहा पहुँचा तो आलिया सीढ़ियाँ चढ़ रही थी मंदिर की. राहुल देखते ही झूम उठा आलिया को. इस कदर खुश हुवा कि एक आदमी से टकरा गया. “ओह सॉरी भाई…माफ़ करना.”

“क्या माफ़ करना देख कर चला करो यार, मेरा प्रसाद गिरा दिया.”

“माफ़ करना भाई…मगर प्रसाद बेकार नही जाएगा. चींटियाँ खा लेंगी उसे और इसका पुन्य आपको ही मिलेगा.”

“हां ठीक है ठीक है ज़्यादा लेक्चर मत दो मुझे.”

वो आदमी बड़बड़ाता हुवा आगे बढ़ गया. राहुल फ़ौरन मंदिर की सीढ़ियों की तरफ दौड़ा. सीढ़ियाँ चढ़ कर वो उपर आया तो देखा कि आलिया कुछ असमंजस में है. वो इधर उधर देख रही थी कि क्या करे. पहली बार मंदिर आई थी वो. कैसे जान सकती थी कि मंदिर में जा कर करना क्या क्या होता है. एक लेडी ने जब मंदिर की घंटी बजाई तो उसने भी उसकी देखा देखी मंदिर की घंटी बजा दी.

राहुल ये सब देख कर पीछे ही रुक गया. आलिया को देख कर मध्यम-मध्यम मुस्कुरा रहा था. आलिया बस उस लेडी को देख कर सब कर रही थी जिसको देख कर उसने घंटी बजाई थी. जब वो लेडी भगवान के आगे हाथ जोड़ कर आँख मीच कर खड़ी हुई तो आलिया भी ये देख कर आँख मीच कर हाथ जोड़ कर खड़ी हो गयी. राहुल ये सब देख कर लोटपोट हो रहा था. मंदिर का पुजारी भी आलिया को देख कर मुस्कुरा रहा था. समझ गया था वो भी कि ये लड़की पहली बार मंदिर आई है.

मगर जब आलिया ने आँखे मीची तो उसे पता था कि क्या करना है. उसने मन ही मन में कहा, “हे भगवान. मुझे नहीं पता की आपकी पूजा कैसे की जाती है. कुछ भी नही जानती हूँ आपके बारे में. कुछ नही पता कि कैसे दुवा करूँ राहुल के लिए आपके सामने. यहा बस एक फरियाद ले कर आई हूँ. अपने अल्लाह को भी ये फरियाद कर चुकी हूँ पर अभी तक कुछ हासिल नही हुवा. सोचा कि आपके आगे भी फरियाद कर दूं. आप तो राहुल के

भगवान हो. वो आपको मानता है. बहुत प्यार करती हूँ मैं राहुल से. वो भी मुझे बहुत प्यार करता है. एक छोटी सी लड़ाई हुई थी हमारी और उसके बाद हम मिल नही पाए आज तक. राहुल का कुछ पता भी नही चल रहा है कि वो है कहा. अगर आप उसके बारे में जानते हैं तो प्लीज़ उसे भेज दीजिए मेरे पास. मेरे लिए राहुल के बिना जीना मुश्किल है. सच कह रही हूँ भगवान अगर राहुल नही आया तो मैं मर जाऊंगी. और इल्ज़ाम मेरे अल्लाह पर भी आएगा और आप पर भी आएगा. हम क्यों जुदा हैं समझ नही आता जबकि बहुत प्यार करते हैं हम दोनो. कुछ कीजिएगा हमारे लिए भगवान. प्लीज़….”

आलिया ने जब आँखे खोली तो वो चोंक गयी. उसे समझ नही आया कि ये ख्वाब है या हक़ीक़त. राहुल बिल्कुल उसके सामने खड़ा था हाथ जोड़ कर आँखे बंद किए हुवे. उसे कुछ समझ नही आ रहा था कि वो क्या करे.

राहुल ने जब आँखे खोली तो आलिया की आँखे टपक रही थी. “तुम्हारा राहुल तुम्हारे सामने है जरीना. जो सज़ा देना चाहो दे दो.”

“क्यों किया तुमने ऐसा राहुल क्यों किया. क्या कोई करता है ऐसा जैसा तुमने किया मेरे साथ” आलिया फूट-फूट कर रोने लगी.

राहुल ने आलिया का हाथ पकड़ा और बोला, “आओ एक तरफ चलते हैं. सुबह का वक्त है काफ़ी लोग आ रहे हैं मंदिर में.”

“मेरा हाथ छोडो तुम. नही करनी है कोई भी बात तुमसे.” आलिया राहुल का हाथ झटक कर वहा से भाग गयी और मंदिर की सीढ़ियाँ उतर कर मंदिर के सामने बने एक पेड़ का सहारा ले कर खड़ी हो गयी. सूबक रही थी बुरी तरह.

राहुल भी तुरंत आ गया उसके पीछे और उसके कंधे पर हाथ रख कर बोला, “क्या बिल्कुल माफ़ नही करोगी अपने राहुल को.”

“माफ़ तो करना ही पड़ेगा तुम्हे. कोई भी चारा नही है मेरे पास. इसी बात का तो फायदा उठाया तुमने.”

“बहुत गुस्से में हो…”

“गुस्सा नही आएगा क्या?”

“अच्छा एक काम करो…देखो सामने एक बड़ा पत्थर पड़ा है. उठाओ और दे मारो मेरे सर पर. जैसे घर पर गमला मारा था वैसे ही मारो”

“मैं मार भी सकती हूँ अभी. तुम्हे पता नही कि क्या कुछ सहा है मैने तुम्हारे पीछे. सब कुछ सहा सिर्फ़ तुम्हारे लिए. और तुम बिना बताए ना जाने कहा चले गये.”

“तुम्हे क्या लगता है कि मैं बेवजह तुम्हे अकेला छोड कर कही चला जाऊंगा.”

“हां मानती हूँ कि कोई वजह तो ज़रूर रही होगी. पर क्या इतनी बड़ी वजह थी कि तुम एक साल से गायब हो. कोई भी नही जानता था कि तुम कहा चले गये.”

“मैं कोमा में था जरीना.”

“क्या कोमा में!” आलिया हैरान रह गयी और मूड कर राहुल की तरफ देखा. उसे राहुल की आँखो में आँसू दीखाई दिए.

“हां मैं कोमा में था. वरना तो कोई भी ताक़त मुझे तुमसे दूर नही रख सकती थी.”

आलिया लिपट गयी राहुल से और बोली, “कैसे हुवा ये सब राहुल. किसने किया.”

“कुछ लोग तुम्हारे बारे में भला बुरा कह रहे थे. सुना नही गया मुझसे और मैं उन लोगो से भिड़ गया.” राहुल ने आलिया को पूरी बात बताई.

“बस होश आते ही निकल पड़ा मैं तुम्हारी तलाश में. देखो मसूरी की हसीन वादियों में छुपी बैठी थी मेरी जरीना.”

“राहुल दुबारा मत करना ऐसी लड़ाई किसी से. किसी के बोलने से क्या हो जाता है. देखो कितना तडपी हूँ मैं तुम्हारे लिए. अगर मैं तड़प-तड़प कर मर जाती तो. फिर तुम क्या करते.”

“चुप रहो…ऐसा नही बोलते. वैसे अच्छा लगा तुम्हे मंदिर में देख कर. मैं भी तुम्हारी मस्ज़िद जाऊंगा.”

“अगर पता होता कि मंदिर में फरियाद करने से तुम मिल जाओगे तो कब की चली आती यहा. कुछ दिन पहले अचानक ही ख्याल आया मंदिर जाने का. पर डर रही थी की मंदिर से कोई निकाल ना दे. मुझे पता भी नही था कि मंदिर में जा कर करना क्या है. मगर आज हिम्मत करके आ ही गयी. और देखो तुम मिल गये मंदिर में.”

“किसी इंसान के चेहरे पर नही लिखा होता कि वो किस धरम का है. भगवान का मंदिर हर किसी के लिए है.” राहुल ने कहा

राहुल ने अपनी जेब से एक चाबी निकाली और आलिया के हाथ में रख दी.

“ये क्या है राहुल?”

“उसी मनहूस ताले की चाबी है जिसके कारण तुम अपने ही घर में नही घुस पाई. आओ घर चलते हैं जरीना. अपने घर चलते हैं. वो घर तड़प रहा है तुम्हारे लिए. अपने हाथ से खोलना उस मनहूस ताले को.”

आलिया ने अपनी आँखो के आँसू पोंछे और बोली, “थोड़ा सा वक्त दो मुझे बस. बच्चो से मिल लूँ एक बार. अचानक उनसे मिले बिना चली गयी तो खूब हल्ला करेंगे. संभाले नही संभलेंगे किसी से.”

“ठीक है तुम मिल आओ. मैं प्लेन की टिकट बुक करा लेता हूँ.”

“वाउ…क्या हम प्लेन से जाएँगे.” आलिया झूम उठी. उसने कभी प्लेन से यात्रा नही की थी.

“हां बिल्कुल. तुम्हारे चक्कर में प्लेन में ही घूम रहा हूँ आजकल. कब तक आ सकती हो फ्री हो कर.”

“बस २ घंटे दो मुझे…मैं यही आ जाऊंगी मंदिर में फिर हम साथ चलेंगे.”

“वैसे यही घूमते हम एक साथ. मगर अभी बस तुम्हारे साथ घर जा कर ढेर सारी बाते करने का मन है. फिर कभी आएँगे मसूरी में.”

“हां वैसे भी अभी यहा सईद चाचा है साथ में. उन्होने देख लिया तो तूफान मचा देंगे. अभी यहा से चलते हैं. हमारा घर ही हमारे लिए मसूरी है…है ना राहुल.”

“बिल्कुल मेरी जान…बिल्कुल”

“तुम्हारी जान बन गयी मैं अब?”

“और नही तो क्या. तुम्हारा प्यार ना होता तो शायद कभी नही उठ पाता कोमा से. तुम्हारे प्यार ने ही मुझे गहरी नींद से जगाया है. वरना तो कोमा में बरसो पड़े रहते हैं लोग.”

एक लंबी जुदाई के बाद जब दो प्रेमी मिलते हैं तो उन्हे अपना प्यार पहले से भी और ज़्यादा गहरा महसूस होता है. जुदाई प्रेमियों को अक्सर उनके प्यार की गहराई दीखा देती है. ऐसा क्यों होता है शायद कोई नही जानता हां पर अक्सर ऐसा होता ज़रूर है.

राहुल और आलिया जुदाई में इतने तडपे थे कि उन्हे उनका प्यार समुंदर से भी ज़्यादा गहरा लग रहा था. उन दोनो के पाँव नही टिक रहे थे ज़मीन पर. होता है अक्सर ऐसा भी. प्यार इंसान को हवा में उड़ा देता है, पाँव ज़मीन पर नही टिक पाते फिर उसके.

आलिया वापिस पहुँची बच्चो से मिलने तो जहारा उसका हाथ पकड़ कर एक तरफ ले गयी.

"आज बहुत रोनक है तेरे चेहरे पे?" जहारा ने कहा.

"मेरा राहुल, मेरे पास वापिस आ गया है. मेरी जींदगी का सबसे बड़ा दिन है आज."

"वैसे वो था कहा इतने दिन"

"राहुल कोमा में था जहारा और मैं बदनसीब ऐसे वक्त में उसके पास नही थी." आलिया उसे पूरी कहानी सुनाती है.

"ओह...कितना बुरा हुवा था उसके साथ"

"हां और मुझ अभागी को पता भी नही था" आलिया की आँखे नम हो गयी बोलते हुवे.

"अब क्या करने का इरादा है तुम दोनो का."

"हम साथ रहेंगे अब बस. जहारा बस मैं बच्चो से मिलने आई हूँ. २ घंटे बाद मुझे वापिस पहुँचना है. हम अपने घर जा रहे हैं जहारा. वही घर जहा मैं रोज अपनी चिट्ठियाँ डाल कर आती थी."

"सईद चाचा को क्या कहेंगे जरीना. सुबह से कई बार पूछ चुके हैं तुम्हारे बारे में.

"मेरी मदद करो जहारा. मुझे हर हाल में २ घंटे में राहुल से मिलना है."

"बिना शादी के ही साथ जा रही हो राहुल के?"

आलिया मुस्कुराई और बोली," उसका साथ ही मेरी जींदगी है

जहारा. शादी भी कर लेंगे हम. पहले हम घर जाएँगे फिर तैय करेंगे कि आगे क्या करना है."

"चल तू ज़्यादा देर मत कर बच्चो से मिल और चुपचाप निकल जा. मैं सईद चाचा को संभाल लूँगी."

राहुल ने एक एजेंट से दिल्ली से वडोदरा की टिकट बुक करवा ली. अगले दिन सुबह १० बजे की टिकट मिली. मसूरी से दिल्ली जाने के लिए उसने टॅक्सी का इंतजाम कर लिया. सारे अरेंज्मेंट करने के बाद ठीक २ घंटे बाद वो मंदिर पहुँच गया.

राहुल थोड़ा पहले पहुँच गया. वो मंदिर के बाहर उसी पेड़ से कंधा लगा कर खड़ा हो गया जहा वो २ घंटे पहले आलिया के साथ खड़ा था.

जब उसने आलिया को आते देखा तो एक प्यार सी हँसी बिखर गयी उसके होंटो पे. उसकी निगाहे बस आलिया पर ही फिक्स हो गयी.

आलिया राहुल को अपनी तरफ एक-तक देखते हुवे शर्मा गयी. नज़रे झुकानी पड़ गयी उसे राहुल के कारण. जब वो पास आई तो राहुल से बोली, "ऐसे क्यों देख रहे थे मुझे"

"क्यों क्या मैं अपनी जान को देख नही सकता?"

"देख सकते हो पर टकटकी लगा कर देखता है क्या कोई." आलिया ने कहा.

"मैं तो अपनी आलिया को ऐसे ही देखूँगा" राहुल ने कहा.

"इस बॅग में क्या है?" आलिया की नज़र राहुल की पीठ पर टँगे बॅग पर गयी.

"है कुछ समान. हाथ आगे करो"

"क्यों क्या बात है. और तुमने क्या छुपा रखा है अपने हाथ में पीछे"

"हाथ करो ना आगे आलिया प्लीज़"

"अच्छा लो बाबा" आलिया ने हाथ आगे कर दिए.

राहुल ने एक पॉलिथीन बॅग आलिया के हाथ पर रख दिया.

"क्या है ये?"

"खोल कर देखो" राहुल ने मुस्कुराते हुवे कहा.

"वाउ जीन्स...तुम मेरे लिए जीन्स लाए." आलिया की आँखे चमक उठी.

"हां, पसंद है ना तुम्हे बहुत. यही पहन कर चलना"

"लेकिन इसके उपर क्या पहनूँगी मैं."

"उसका भी इंतजाम है." राहुल ने अपनी पीठ से बॅग उतारा और उसे खोल कर एक ब्लू कलर का टॉप आलिया को थमा दिया.

"वाउ...तुम्हारी चाय्स तो बहुत अच्छी है."

"जीन्स मुंबई में खरीदी थी. टॉप यही से लिया." राहुल ने कहा.

"पर पहनूँगी कहा ये कपड़े. कोई जगह तो होनी चाहिए."

"ओह...इस बात पर ध्यान नही दिया मैने. जीस होटेल में रुका था वहा से चेक आउट भी कर लिया."

"चलो कोई बात नही. मुझे जल्दी ले चलो घर. मैं तड़प रही हूँ उस ताले को खोलने के लिए."

"यहा से हम दिल्ली जाएँगे. एक टॅक्सी बुक करा ली है. रात दिल्ली में उसी होटेल में रुकेंगे जहा पीछले साल रुके थे. कल सुबह १० बजे की फ्लाइट है."

"ह्म्म ठीक है."

"चलें मेरी जान. लेट हो रहे हैं"

"हां चलो...पर टॅक्सी कहा है."

"टॅक्सी थोड़ी दूर खड़ी है. यहा तक नही आ सकती थी. आओ चलें." राहुल ने आलिया का हाथ थाम लिया.

"मेरा हाथ क्यों पकड़ लिया. छोडो कोई देख लेगा." आलिया ने कहा.

"देख लेने दो. अपनी जान का हाथ थामा है किसी गैर का नही."

"एक बात सुन लो. ये जीन्स उस जीन्स के बदले में है जो तुमने मेरे उपर कीचड़ उछाल कर गंदी कर दी थी. अभी बस हिसाब बराबर हुवा है."

"पता है मुझे. उस दिन के कारण जीन्स ड्यू थी मुझ पर. तुम कहोगी तो हमारी फॅक्टरी में सिर्फ़ तुम्हारे लिए जीन्स बनेगी."

"अच्छा" आलिया ने हंसते हुवे पूछा.

"हां." राहुल ने भी हंसते हुवे कहा.

कुछ ही देर में वो टॅक्सी तक पहुँच गये और बैठ गये एक दूसरे के साथ.

"आलिया एक ज़रूरी बात थी. कब से दिमाग़ में घूम रही है. पर तुमसे बाते करते हुवे इतना खो जाता हूँ कि वो बात ध्यान से निकल जाती है."

"बोलो राहुल."

"मैं कोमा से उठ कर तुम्हारी मौसी के घर गया तो उन्होने बताया कि तुम गायब हो. सलीम का भी कुछ आता पता नही किसी को. क्या बताओगी मुझे कि क्या हुवा था उस दिन. और सलीम कहा है?"

"राहुल घर चल कर बात करें" आलिया ने कहा.

राहुल समझ गया कि आलिया ड्राइवर के सामने बात नही करना चाहती.

टॅक्सी प्यार में डूबे दो दीवानो को लिए दिल्ली की ओर बढ़ रही थी. रास्ते में एक ढाबा दीखाई दिया तो राहुल ने ड्राइवर से कहा," भैया रोक दो इस ढाबे पर."

ड्राइवर ने ढाबे पर कार रोक दी.

"आओ आलिया कुछ खा लेते हैं."

"हां बिल्कुल...मुझे बहुत भूक लगी है."

बैठ गये एक टेबल पर राहुल और जरीना.

"चिकन कढ़ाई खाएँगे आज हम दोनो."

"क्या पागल हो गये हो तुम. मैं नही खाऊंगी. मैने लिखा था ना तुम्हे कि मैने नॉन-वेज छोड दिया है"

"हां तो मैने भी तो बताया था कि मैने नॉन-वेज शुरू कर दिया है."

"राहुल प्लीज़. कोई ज़रूरत नही है तुम्हे ये सब करने की. अब खाने के उपर कोई बहस नही चाहती मैं. उस दिन की लड़ाई के बाद आज मिले हैं हम. कुछ सीखना चाहिए हमें इन बातो से."

"मज़ाक कर रहा हूँ जान.हां अब हम इस बात पर लड़ाई नही करेंगे. अच्छा तुम ऑर्डर दो."

आलिया ने मिक्स वेज और दाल मखनि ऑर्डर कर दी.

"आलिया जब तक खाना आए तब तक तुम मेरे सवाल का जवाब दे सकती हो."

आलिया ने आस पास नज़र दौड़ाई.

"चिंता मत करो कोई नही सुनेगा हमारी बातें." राहुल ने कहा.

"सुनो फिर" आलिया ने कहा.

आलिया के शब्दो में:-

"मैं मौसी के घर से निकल कर छुपते-छुपाते रेलवे पहुँच गयी. मुझे बहुत डर लग रहा था. मुझे सलीम का डर था. जब ट्रेन आई तो चुपचाप चढ़ गयी मैं. मुझे लगा ख़तरा टल गया है. मैं टॉयलेट करने के लिए उठी. सोचा फ्रेश हो कर आराम से सो जाऊंगी अपनी सीट पर. लेकिन जब मैं टॉयलेट पहुँची तो मेरे होश उड़ गये. सलीम खड़ा था वहा. वो शायद दूसरे डिब्बे से आया था. मुझे देखते ही वो आग बाबूला हो गया.

"मेरी मुहब्बत को भुला कर उस काफ़िर के साथ ब्याह रचाने का प्लान है तेरा हा. तुझे जींदा नही छोडूँगा मैं. देखता हूँ कैसे जाती है तू उस काफ़िर के पास."

उसने मेरा गला दबोच लिया राहुल. मेरा दम घुटने लगा था. मेरी आँखो के आगे अंधेरा छाने लगा था. बिल्कुल दरवाजे के पास ही दबोच रखा था उसने मुझे. मगर राहुल मुझे उसके हाथो मरना मंजूर नही था. मेरी जींदगी पर तो तुम्हारा हक़ है ना राहुल.

मैने पूरा ज़ोर लगा कर उसे पीछे ढकैला. किसी को कुछ नही पता था कि वहा क्या हो रहा है. मैं अकेली जूझ रही थी उस से.

मैने उसे पूरा ज़ोर लगा कर इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वो लूड़क गया और वो संभाल नही पाया. केले का छिलका पड़ा था वहा उस पर शायद पाँव पड़ गया था उसका. वो… वो…ट्रेन से बाहर फिसल गया राहुल. मैं बस देखती रही. सब कुछ इतना अचानक हुवा कि मैं कुछ भी नही कर पाई. जब तक मैं आगे बढ़ कर उसे संभालने की कोशिश करती तब तक वो ट्रेन से नीचे गिर चुक्का था. ट्रेन फुल स्पीड पर थी. मुझे नही पता कि क्या हुवा होगा सलीम का. शायद…शायद वो…" आलिया सूबक पड़ी.

"बस….बस…जो हुवा उसके लिए खुद को दोषी मत मानो. सब होनी का खेल है."

"पर मैने उसे धक्का दिया था राहुल."

"तुम अपने आप को बचा रही थी. तुम्हारी जगह कोई भी होता तो ऐसा ही करता. हां मुझे भी दुख है सलीम के लिए. उसकी बहन से मिल कर आया था मैं. उसका घर बिखर गया है."

“मैं कातिल तो नही हूँ ना?”

“पागल हो क्या. किसी और को तो नही बताई तुमने ये बात”

“नही बस आज तुम्हे बताई है. इस बात के कारण मैने मौसी को भी कोई खत नही लिखा. डर था कि कही मुझे खूनी ना करार दिया जाए.”

“भूल जाओ सब कुछ. जो होना था सो हो गया. लो खाना आ गया. आँसू पोंछ लो अपने और खाने का आनंद लो. भगवान सब भली करेंगे. वैसे तुम यहा जीन्स पहन सकती हो. लॅडीस टॉयलेट में जाओ और चेंज करके बाहर आ जाओ.”

"देखती हूँ. पहले खाना खा लूँ."

राहुल को सब कुछ बता कर आलिया का मन हल्का हो गया. मगर वो अंदर ही अंदर इस बात से परेशान हो रही थी कि उसके कारण सलीम का परिवार बिखर गया.

“आलिया खाना ठंडा हो रहा है, छोडो भी अब, जो होना था सो हो गया. मुझे भी दुख है… पर अब हम कर भी क्या सकते हैं.”

“मेरे कारण सलीम के घर में तबाही आ गयी. मैं पूरा साल इस बात को लेकर परेशान रही हूँ कि मेरे कारण सलीम ट्रेन से नीचे गिर गया. अब जब तुमने बताया कि सलीम गायब है उसी दिन से तो अब तो ये पक्का ही है कि वो अब इस दुनिया में नही है. मैने उसे मार दिया राहुल. ये ठीक नही हुवा.”

“बहुत कुछ हुवा हम दोनो के साथ आलिया जो की ठीक नही था. मेरे पेरेंट्स ट्रेन कार्नेज में मारे गये, क्या वो ठीक था. उसके बाद दंगे भड़क गये और तुमने अपने पेरेंट्स और छोटी बहन को खो दिया..क्या वो सब ठीक था.”

“वो सब तो ठीक है पर..”

“क्या पर, हम दोनो का प्यार हुवा और फिर हम छोटी सी बात पर लड़ कर जुदा हो गये… क्या वो सब ठीक था.”

“तुम नही समझ सकते राहुल, मेरी आँखो के सामने गिरा था वो ट्रेन से नीचे और मैं कुछ भी नही कर पाई थी.”

“तो कर लेती कुछ…बचा लेती उसे…वो तुम्हारा शुक्रिया नही करता बल्कि तुम्हे मार देता. उसकी इंटेशन बिल्कुल ठीक नही थी. हां मैं मानता हूँ कि जो भी हुवा ग़लत हुवा. पर उस वक्त तुम कर भी क्या सकती थी. अपनी जान बचाने के लिए तुमने उसे धक्का दिया. तुम्हारी जगह कोई भी होता तो वो ऐसा ही करता. अब वो फिसल गया ट्रेन से तो इसमें तुम्हारी ग़लती नही है.”

“अच्छा छोडो राहुल चलो खाना खाते हैं…सच में ठंडा हो रहा है खाना.” आलिया ने मुस्कुराते हुवे कहा.

“आ गयी याद खाने की अब…” राहुल भी मुस्कुरा दिया.

“हां चलो जल्दी खाते हैं. मेरे ख्याल से काफ़ी लंबा सफ़र बाकी है अभी.”

“हां अभी तो सारा ही सफ़र बाकी है. लेकिन खाना आराम से खाते हैं.” राहुल ने कहा.

खाने खाने के बाद आलिया ने कहा, “क्या तुम भी चाहते हो कि मैं जीन्स और टॉप पहन कर चलूं.”

“हां बिल्कुल, कॉलेज में तो तुम्हे देखता ही नही था नज़र उठा कर. हां ये निरीक्षण ज़रूर किया था कि तुम अक्सर जीन्स पहन कर आती थी कॉलेज. आज तुम्हे जीन्स में देखने का मन है.”

“ठीक है मैं पहन कर आती हूँ.” आलिया उठ कर चल दी

“जल्दी आना, ज़्यादा देर मत लगाना..”

“ओके”

आलिया वॉश रूम गयी और कोई २० मिनिट बाद बाहर निकली. मगर वो जीन्स और टॉप पहन कर नही आई थी. उसी चुडीदार में वापिस आ गयी जिसमे वो अंदर गयी थी.

आलिया वापिस आकर कुर्सी पर बैठ गयी राहुल के सामने.

"क्या हुवा कुछ मायूस सी लग रही हो. जीन्स और टॉप फिट नही आई क्या?"

"नही ऐसी बात नही है"

"फिर…"

"चलो घर जाकर ही पहनूँगी."

"क्यों….. नही तुम पहन कर चलो ना अच्छा लगेगा मुझे."

"अच्छा तो मुझे भी लगेगा पर…"

"पर क्या?"

आलिया ने अपने पर्स से एक पेन निकाला और पेपर नॅपकिन पर कुछ लिख दिया. मगर लिखने के बाद वो उसे राहुल को देने से झीजक रही थी.

"क्या बात है बताओ ना."

आलिया ने काँपते हाथो से वो नॅपकिन राहुल की तरफ बढ़ाया. मगर इस से पहले की राहुल वो नॅपकिन पकड़ पाता आलिया ने अपना हाथ वापिस खींच लिया.

"अरे…क्या बात है जरीना…कुछ कहो तो सही. क्या लिखा था तुमने नॅपकिन पर वो तो पढ़ने दो." राहुल ने कहा और आलिया के हाथ को पकड़ लिया.

आलिया ने तुरंत वो नॅपकिन हाथ में दबोच लिया. बड़ी मुश्किल से निकाला राहुल ने वो नॅपकिन आलिया के हाथ से.

"छोडो ना राहुल. प्लीज़ मत पढ़ो…मैं बाद में पहन लूँगी जीन्स." आलिया गिड़गिडाई

मगर राहुल नही माना. उसने धीरे से उस नॅपकिन को फैलाया. उस पर लिखा था.

“मेरी ब्रा की स्ट्रॅप टूट गयी है. टॉप नही पहन सकती. अजीब लगेगा. सॉरी.”

आलिया तो नज़रे झुकाए बैठी थी. शर्मा रही थी वो राहुल से. उसने अपनी चुनरी से अपनी छाती को अच्छे से ढक रखा था.

राहुल ने भी एक नॅपकिन उठाया और बोला, “पेन देना अपना.”

आलिया ने बिना राहुल की तरफ देखे उसे पेन पकड़ा दिया.

राहुल ने नॅपकिन पर कुछ लिख कर आलिया की तरफ बढ़ाया. आलिया ने चुपचाप नॅपकिन पकड़ लिया.

उस पर लिखा था, “नयी खरीद लेंगे. चिंता क्यों करती हो.”

आलिया ने एक और नॅपकिन उठाया और उस पर लिख कर राहुल को थमा दिया चुपचाप.

उस पर लिखा था, “यहा हाइवे पर कहा से ख़रीदेंगे. तुम चिंता मत करो मैं दिल्ली जा कर खरीद लूँगी.”

राहुल ने पढ़ कर कहा, “चलो चलते हैं आलिया लेट हो रहे हैं.”

“हां चलो”

इस तरह खाने की टेबल पर पेपर नॅपकिन के ज़रिए दोनो में कुछ प्राइवेट बातें हुई. जो की उनके प्यार की तरह ही सुंदर थी.

राहुल ने आलिया के लिखे नॅपकिन अपनी जेब में डाल लिए और आलिया ने राहुल के लिखे नॅपकिन अपने पर्स में.

राहुल ने ढाबे के काउंटर पर बिल पे किया और आलिया के साथ वापिस कार में आकर बैठ गया.

"मसूरी में कितना अच्छा मौसम था और यहा बहुत गर्मी हो रही है." राहुल ने कहा.

"हां दिल्ली में तो आग बरस रही होगी इस वक्त." आलिया ने कहा.

"आलिया अपने स्कूल के बारे में बताओ. बच्चे तो बहुत खुश होंगे मसूरी आकर. बहुत ही सुंदर हिल स्टेशन है मसूरी"

"हां बहुत खुश हैं वो. वो तो यहा से वापिस ही नही जाना चाहते. खूब मस्ती की बच्चो ने मसूरी में." आलिया हंसते हुवे बोली.

"आएँगे हम वापिस दुबारा घूमने. अभी बस तुम्हे तुम्हारे घर ले जाने की जल्दी थी."

बातों में डूब गये दोनो प्रेमी और बातों-बातों में दिल्ली पहुँच गये वो दोनो.

दिल्ली में घुसते ही आलिया ने कहा, “राहुल कोई ज़रूरत नही है हमें उसी होटेल में जाने की. हमें एयर पोर्ट के पास ही किसी होटेल में रुकना चाहिए. बाकी तुम्हारी मर्ज़ी.”

“ह्म्म…. ठीक है. जैसा तुम कहो.”

राहुल ने टॅक्सी वाले को एयर पोर्ट के पास ही किसी होटेल में ले जाने को कहा.

ड्राइवर ने उन्हे महिपालपुर उतार दिया. आलिया ने आस पास नज़र दौड़ाई तो मायूस हो गयी. कोई भी ऐसी शॉप नही थी वहा जहा से वो ब्रा खरीद पाती. राहुल आलिया की असमंजस समझ गया. प्यार में अक्सर प्रेमी, एक दूसरे की परेशानी बिना कहे ही समझ जाते हैं.

होटेल के रूम में आकर राहुल ने कहा, “आलिया मैं अभी आता हूँ. तुम आराम करो.”

“क्यों….कहा जा रहे हो तुम?” आलिया ने हैरानी में पूछा.

“कुछ नही रीसेपशन से पूछ आता हूँ कि यहा से एयर पोर्ट कितनी दूर है ताकि हम सुबह उसी अनुसार तैयार हो जायें.”

“जल्दी आना राहुल. मेरा मन नही लगेगा अकेले यहा.”

“ओके”

राहुल आ गया कमरे से बाहर. “कहा मिलेगी ब्रा…रीसेपशन पर पता करता हूँ.”

राहुल ने रीसेपशन वाले से पूछा मगर उसे कुछ आइडिया नही था. राहुल होटेल से बाहर आया और एक ऑटो लेकर निकल पड़ा. उसने ऑटो वाले को किसी मार्केट में ले जाने को कहा. आधा घंटा लगा मार्केट पहुँचने में.

इधर आलिया परेशान हो रही थी. “कहा रह गया राहुल. रीसेपशन पर ही तो गया था.”

आलिया टीवी ऑन करके बैठ गयी. मगर उसका मन सिर्फ़ राहुल में ही अटका था.

अचानक दरवाजे पर नॉक हुई. आलिया ने दरवाजा खोला.

"राहुल ये क्या मज़ाक है. एक घंटे में लौटे हो तुम वापिस. मेरी बिल्कुल भी चिंता नही है तुम्हे."

"सॉरी…सॉरी…सॉरी…एक दोस्त मिल गया था मुझे. उसी से बात करने लग गया. वक्त का पता ही नही चला."

"कितने गंदे हो तुम...मैं यहा परेशान हो रही हूँ और तुम बाते करने में व्यस्त थे."

राहुल ने कुछ नही कहा और सीधा वॉश रूम में घुस गया. २ मिनिट बाद बाहर आ गया वो.

"आलिया तुम नहा ली क्या?"

"तुम्हारा इंतजार कर रही थी मैं. कुण्डी लगा कर कैसे जाती नहाने. तुम आते तो कौन खोलता."

"हां वो तो है…चलो नहा लो तुम पहले. फिर मैं भी नहा लूँगा. फिर हम ढेर सारी बाते करेंगे." राहुल ने हंसते हुवे कहा.

आलिया ने एक तकिया उठाया और राहुल पर फेंक कर मारा. "तुम सच में बहुत गंदे हो." वो घुस गयी भाग कर वॉश रूम में.

अंदर आ कर जैसे ही उसने कुण्डी लगाई उसे खुँती पर एक ब्रा टगी मिली. ब्रा देखते ही उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखर गयी. वो नहा कर बाहर आई तो राहुल बिस्तर पर आँखे बंद करके पड़ा था. आलिया ने बेड के पास रखी टेबल पर रखे नोट पॅड को उठाया और एक काग़ज़ पर कुछ लिख कर राहुल के पास रख दिया और अपने गले से आवाज़ की "उह…उह"

राहुल ने आँखे खोल कर देखा. "क्या हुवा गले में खरास है क्या. मैं अभी विक्क्स की गोली ले कर आता हूँ."

“खबरदार इस कमरे से बाहर निकले तुम तो.” आलिया चिल्लाई.

राहुल फ़ौरन उठ कर बैठ गया. जैसे ही वो बैठा उसे आलिया का रखा काग़ज़ का टुकड़ा दीखाई दिया. उसने वो उठाया.

उस पर लिखा था, “कहा से लाए. अच्छी है.”

राहुल हंस दिया वो पढ़ कर. राहुल ने टेबल से नोट पॅड उठाया और कुछ लिख कर उसने भी गले से आवाज़ की “उह..उह” और काग़ज़ आलिया की तरफ बढ़ा दिया. आलिया ने नज़रे झुका कर चुपचाप वो काग़ज़ पकड़ लिया.

उसमें लिखा था, “मुझे डर था कि कही तुम्हे पसंद ना आए.”

आलिया भी मुस्कुरा उठी ये पढ़ कर. वो बिस्तर के दूसरे कोने पर बैठ गयी और फिर से नोट पॅड उठा कर कुछ लिख कर राहुल की तरफ बढ़ा दिया “उह..उह.”

राहुल ने काग़ज़ पकड़ लिया और पढ़ने लगा.

उसमें लिखा था, “तुम कुछ लाओ और मुझे पसंद ना आए ऐसा कैसे हो सकता है. वैसे मेरा साइज़ कैसे पता लगा तुम्हे ??? .”

राहुल ने तुरंत लिख कर आलिया की तरफ काग़ज़ बढ़ा दिया.

उसमें लिखा था, “अंदाज़े से ले आया. शुक्र है अंदाज़ा सही निकला.”

आलिया काग़ज़ पढ़ कर मुस्कुरा दी. उसने तकिया उठाया और दे मारा राहुल के सर पर. “चलो अब उठो यहा से. ये बिस्तर मेरा है…तुम कही और इंतजाम कर लो.”

“हद होती है बेशर्मी की. पिछली बार भी होटेल में बिस्तर तुमने हथिया लिया था. इस बार भी क़ब्ज़ा करने पर तुली है. मुझे क्या बेवकूफ़ समझ रखा है.”

“राहुल जाओ ना प्लीज़. बहुत थॅकी हुई हूँ मैं. नींद आ रही है बहुत तेज. थोड़ा सा सो लेने दो ना.”

“डिनर नही करोगी क्या?”

“नही…डिनर नही करती हूँ मैं. तुम्हारे बिना २ टाइम का खाना ही मुश्किल से हजम होता था. अब तो आदत सी पड़ गयी है मुझे. डिनर किए हुवे साल बीत गया मुझे. कभी एक-दो बार खाया है मैने. पर ज़्यादातर मुझे शाम को भूक नही लगती है.”

“अब लगेगी…मैं आ गया हूँ ना.”

“देखते हैं. फिलहाल मुझे सोने दो. और जा कर नहा लो तुम.”

राहुल को बड़ा ही अजीब लगा की आलिया सोने जा रही है. उसे लगा था कि वो दोनो बैठ कर ढेर सारी बाते करेंगे. उसने आलिया को कुछ भी कहना सही नही समझा और चुपचाप नहाने के लिए वॉश रूम में घुस गया. “शायद बहुत थक गयी है मेरी जान. वैसे सफ़र था भी बहुत लंबा.” राहुल ने मन ही मन सोचा.

जब वो बाहर आया तो देखा कि आलिया कमरे की खिड़की के पास खड़ी है और बाहर झाँक रही है. राहुल तोलिये से अपने बाल सुखाता हुवा उसके पास आया और बोला, “जान किन विचारो में खोई हो. चेहरे पर बहुत चिंता ज़नक भाव हैं. और तुम तो सोने जा रही थी, यहा पर क्यों खड़ी हो.”

“ओह…तुम आ गये. राहुल कुछ बातो को लेकर परेशान हूँ.”

“कौन सी बातें?”

“हम जा तो रहे हैं गुजरात वापिस पर क्या हम सही कर रहे हैं?. क्या ये दुनिया हमारे रिश्ते को बर्दाश्त कर पाएगी.”

“अचानक ये सब दिमाग़ में कहा से आ गया?” राहुल ने पूछा.

“तुम नहाने गये थे तो मैने टीवी ऑन कर लिया. एक न्यूज़ देख कर दिल दहल उठा.”

“कैसी न्यूज़ देख ली तुमने?”

“हमारी ही तरह दो लोग प्यार करते थे बहुत. लड़का और लड़की अलग धर्मी थे. आज सुबह उन दोनो को ऑनर किलिंग के नाम पर मार दिया गया. आज कल हर किसी पर ऑनर किलिंग का भूत सवार है. मुझे डर लग रहा है राहुल. क्या हमारा वडोदरा जाना ज़रूरी है, हम अपनी छोटी सी दुनिया क्या कही और नही बसा सकते.”

“कैसी बात करती हो जरीना, हमारा घर है वहा, कारोबार है. हम दुनिया से डर कर भाग नही सकते सब कुछ छोड कर. और ये धर्मी-अधर्मी का झगड़ा गुजरात तक सीमित नही है. कहा छुपेंगे हम जाकर.”

“राहुल वहा हमें जानते हैं लोग, लोग जानते हैं कि तुम धर्मी हो और मैं अधर्मी हूँ. कही और जाएँगे तो मैं भी खुद को धर्मी बता दूँगी. बात ही ख़तम हो जाएगी सारी.किसको पता चलेगा हमारा धर्म. तुमने ही तो कहा था कि चेहरे पर धरम नही लिखा होता.”

“वो सब तो ठीक है जान पर मुझे ये आइडिया बिल्कुल पसंद नही है. तुम तो डर गयी अभी से. मौत से कितना घबराती हो तुम?”

“मौत से डर नही है कोई, बस तुम्हे खोना नही चाहती. हम मर गये तो भी तो हम जुदा ही होंगे. रूह को चैन नही मिलेगा मेरी. क्या ये सब मंजूर है तुम्हे.”

“तुम तो ये सोच कर चल रही हो कि ऐसा ही होगा. मगर जींदगी में निश्चित कुछ नही होता. मुझे यकीन है कि सब ठीक होगा हमारे साथ. क्या तुम अपने घर नही जाना चाहती.”

“बिल्कुल जाना चाहती हूँ. वो घर तो मेरे सपनो का घर है. पर राहुल अगर फिर से किसी ने तुम पर हमला किया तो मैं सह नही पाउंगी. घर जाने के लिए बेताब हूँ मैं. बस ये न्यूज़ देख कर दिल परेशान सा हो गया है. अल्लाह हमारे प्यार की हिफ़ाज़त करे.”

“बस एक बात कहूँगा. मैं आसमान से गिरने वाली बिजली से बहुत डरता था. टीवी पर एक बार देखा था कि कुछ लोग बीजली गिरने से मर गये. जब भी बारिश के दिनो में बादल गरजते थे, मेरा दिल बेचैन हो उठता था. मेरे दादा जी मेरा ये डर जान गये थे. एक बार उन्होने मुझे बैठा कर समझाया कि…आसमान से गिरने वाली बीजली कही ना कही तो

गिरेगी पर ज़रूरी नही है कि हमारे उपर ही गिरे. इस विचार से मेरा डर गायब हो गया. मानता हूँ कि हमारा रिश्ता कुछ लोगो को पसंद नही आएगा. पर एक बात समझ लो कुछ लोग हमारा साथ भी देंगे. ज़रूरी नही है कि हमारे साथ बुरा ही हो. कुछ अच्छा भी हो सकता है. तुम मेरे साथ चलो…मुझ पर यकीन रखो…जो होगा देखा जाएगा.''

''तुम पर तो अपने खुदा से भी ज़्यादा यकीन है मुझे. बस इस अनमोल प्यार में और कोई ट्विस्ट नही चाहती हूँ मैं.''

''आलिया वैसे तो जींदगी है, कुछ भी हो सकता है मगर मुझे यकीन है कि अगर हम दोनो साथ हैं तो कोई भी हमारा कुछ नही बिगाड़ सकता. हम दोनो साथ रहेंगे और वही अपने घर में रहेंगे.''

''ठीक है अब कुछ नही सोचूँगी. बस ये न्यूज़ देख कर डर गयी थी. मैं साथ हूँ तुम्हारे हर कदम पर. मेरा खुद का मन भी कहा है अपने घर से दूर रहने का.''

''अच्छा चलो छोडो ये सब. तुम ये बताओ इतनी जल्दी सोने क्यों जा रही थी. टॅक्सी में तो हम खुल कर बात ही नही कर पाए ड्राइवर के कारण. अब जाकर मौका मिला था कुछ बाते करने का और तुम सोने की बाते करने लगी. बिल्कुल अच्छा नही लगा मुझे.''

''सर में दर्द है राहुल. थका दिया इतने लंबे सफ़र ने. सर में दर्द होगा तो कैसे ढेर सारी बाते करूँगी. सोचा थोड़ा सा सो लूँगी तो ठीक हो जाएगा. पर नींद ही नही आई.''

''अरे पागल हो तुम भी. ऐसा था तो बताना था ना मुझे. मैं अभी मेडिसिन ले आता हूँ.''

''नही तुम कही मत जाओ प्लीज़. मेरे पास रहो. हो जाएगा ठीक थोड़ी देर में. मैं मेडिसिन कम ही लेती हूँ.''

''अच्छा चलो लेट जाओ आराम से. ये सर दर्द सफ़र के कारण है. आराम करने से ही दूर होगा.'' राहुल ने कहा.

''राहुल ये बताओ कि तुम मंदिर में मेरे आगे हाथ जोड़ कर क्यों खड़े थे तुम.?''

‘‘क्योंकि मेरी भगवान तो तुम ही हो अब. इसलिये तुम्हारे आगे ही हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया था.’’

‘‘हाहहाहा, मज़ाक अच्छा कर लेते हो तुम. मैं भगवान कैसे बन गयी.’’ आलिया ने कहा

जितना प्यार तुम मुझे करती हो उतना कोई फरिस्ता ही कर सकता है किसी को. पूरे एक साल तक तुमने मेरा इंतेज़ार किया. कोई और होता तो कब का मुझे भूल कर नयी दुनिया शुरू कर चुका होता. जब मुझे होश आया और पता चला कि एक साल बाद आँख खुली है मेरी तो यही लगा मुझे कि मैने अपनी आलिया को खो दिया. मगर जब तुम्हारे खत पढ़े तो अहसास हुवा कि तुम्हारे मन में मेरे प्रति प्यार कम होने की बजाय और बढ़ गया है. क्या ऐसा कोई मामूली इंसान कर सकता है. तभी तुम्हे भगवान मान लिया है मैने.’’

‘‘तुम्हारे लिए एक साल तो क्या पूरी जींदगी भी इंतेज़ार कर लेती. नयी दुनिया बसाने का तो सवाल ही नही उठता. मुझे यकीन था कि तुम आओगे एक दिन और देखो तुम आ गये. ये बस हम दोनो के प्यार की ताक़त है जिसने हमें संभाले रखा.’’

‘‘जो भी हो मेरे लिए तो तुम ही मेरी भगवान हो.’’

‘‘ठीक है फिर, वादा करो वत्स कि मेरी हर बात मानोगे.’’

‘‘वो तो वैसे भी मानता ही हूँ, इसमे वादे की क्या बात है.’’ राहुल ने कहा.

एक पल को दोनो की नज़रे टकराई तो दोनो खड़े खड़े बस एक दूसरे की निगाहों में खो गये. कुछ बहुत ही गहरी बाते हुई आँखो ही आँखो में दोनो के बीच. इन बातों को शब्दो में पिरोना मुश्किल है क्योंकि आँखो की भाषा सिर्फ़ आँखे ही बोलती हैं और आँखे ही समझती हैं. वक्त जैसे थम सा गया था.

‘‘क्या देख रहे हो मेरी आँखो में राहुल.’’

‘‘जो तुम देख रही हो मेरी आँखो में वही मैं देख रहा हूँ तुम्हारी आँखो में.’’ राहुल ने हंसते हुवे कहा.

और फिर अचानक ही राहुल आलिया की ओर बढ़ा. आलिया समझ गयी कि राहुल का क्या इरादा है वो फ़ौरन वहा से भाग कर बिस्तर पर लेट गयी करवट ले कर, “मुझे सोने दो अब. सोने से सर दर्द भाग जाएगा.”

राहुल मुस्कुराता हुवा बिस्तर के कोने पर बैठ गया और नोट पॅड उठा कर उस पर कुछ लिखने लगा. लिख कर उसने आवाज़ की, “उह…उह”

आलिया ने मूड कर देखा तो पाया कि उसके पीछे एक काग़ज़ पड़ा था.

उस पर लिखा था, “इतना प्यार करते हैं हम दोनो. पूरे एक साल बाद मिले हैं. एक चुंबन तो बनता ही है हमारा. तुम क्यों भाग आई, कितना अच्छा अवसर था एक चुंबन के लिए.”

आलिया ने बिना राहुल की तरफ देखे उसी काग़ज़ पर नीचे कुछ लिख कर राहुल की तरफ सरका दिया और करवट ले कर लेट गयी.

राहुल ने वो काग़ज़ उठाया.

उस पर लिखा था, “प्यार का मतलब क्या ये है कि हम चुंबन में लीन हों जायें. भूलो मत अभी हम कुंवारे हैं. शादी नही हुई है हमारी. ये सब शादी के बाद ही अच्छा लगता है, उस से पहले नही. प्लीज़ बुरा मत मान-ना पर ये सब अभी नही.”

राहुल ये पढ़ कर थोड़ा भावुक हो गया. उसने दूसरा काग़ज़ लिया नोट पॅड से और उस पर कुछ लिख कर आलिया के बगल में रख कर बिना आवाज़ किए वहा से उठ कर खिड़की पर आ कर खड़ा हो गया. आलिया को ये अहसास भी नही हुवा की राहुल ने कुछ लिख कर उसकी बगल में रख दिया है.

वैसे आलिया पड़ी तो थी चुपचाप करवट लिए पर वो बेसब्री से इंतेज़ार कर रही थी राहुल के जवाब का. जब काफ़ी देर तक राहुल की कोई आवाज़ उसे सुनाई नही दी तो उसने मूड कर देखा और पाया कि राहुल खिड़की के पास खड़ा है और उसकी बगल में एक काग़ज़ पड़ा है.

आलिया ने तुरंत वो काग़ज़ उठाया.

उस पर लिखा था, “सॉरी जान मैं भूल गया था कि अभी हम कुंवारे हैं. आक्च्युयली कभी ध्यान ही नही दिया इस बात पर. कुछ ज़्यादा ही अधिकार समझ बैठा तुम पर. सॉरी आगे से ऐसा नही होगा. शादी कर लेंगे जाते ही हम.”

आलिया फ़ौरन बिस्तर से उठ कर आई और राहुल के कदमो में बैठ गयी.

“अरे ये क्या कर रही हो उठो. पागल हो गयी हो क्या.”

“मुझे माफ़ कर दो राहुल. मेरी अम्मी और अब्बा ने जो मुझे संस्कार दिए हैं वो मुझपे हावी हो गये थे. तुम्हारा तो शादी के बिना भी हक़ है मुझपे. मुझसे भूल हो गयी जो कि वो सब लिख दिया. मैं अपने राहुल को ऐसा कैसे कह सकती हूँ.”

“अरे उठो पागल हो गयी हो तुम. माफी तो मुझे माँगनी चाहिए. मैं शायद बहक गया था. पहली बार हुवा है मेरे साथ ऐसा. और तुम्हारे अम्मी और अब्बा ने बहुत अच्छी शिक्षा दी है तुम्हे. अच्छा लगा ये देख कर कि तुम इतना आदर करती हो उनकी बातों का. उठो अब, ग़लती मेरी ही थी जो कि इस रिश्ते में अचानक एक झलाँग लगाने की सोच रहा था.”

आलिया उठ गयी और सुबक्ते हुवे बड़े प्यार से बोली, “मुझे चुंबन लेना आता भी नही है. तुमने अचानक ये बात करके मुझे डरा दिया.”

“अच्छा ठीक है बाबा. मेरी जान सच में बहुत मासूम है. वैसे चुंबन लेना मुझे भी नही आता. बस यू ही तुम्हारी आँखो में देखते-देखते मन बहक गया. चलो छोडो ये सब ये बताओ खाओगी क्या कुछ. मुझे तो भूक लग रही है.”

“तुम खा लो, मुझे सच में भूक नही है.”

“चलो ठीक है. मैं खा कर आता हूँ. तुम आराम करो.”

“यही मंगा लो ना खाना. मेरे पास रहो. मुझसे दूर मत जाओ प्लीज़.”

“अच्छा ठीक है, यही मंगा लेता हूँ.” राहुल ने आलिया के चेहरे पर हाथ रख कर कहा.

राहुल और आलिया के प्यार की मासूमियत होटेल के उस कमरे में हर तरफ बिखरी पड़ी थी. ये ऐसा मासूम प्यार था, जो कि बहुत कम लोगो को नसीब होता है. और जिनको ये नसीब होता है वो राहुल और आलिया की तरह प्यार के फरिस्ते बन जाते हैं.

राहुल ने रूम में ही खाना खाया. खाना खाने के बाद दोनो ने खूब बाते की. बातों में हमेशा की तरह प्यार भी था और तकरार भी. आलिया बेड पर ही सोई. बिस्तर छोडने को तैयार नही हुई वो. खैर राहुल भी नही चाहता था कि वो नीचे सोए. इसलिये चुपचाप फर्श पर चादर बीचा कर सो गया.

सुबह ६ बजे उठ गये दोनो. पहले आलिया घुस गयी नहाने. नहा कर जीन्स और टॉप पहन कर निकली बाहर.

"वाउ तुम आलिया ही हो या कोई और. बहुत प्यारी लग रही हो इन कपड़ो में." राहुल ने कहा.

"मज़ाक मत करो. जीन्स थोड़ी सी लूज है. बेल्ट भी नही है मेरे पास. दिक्कत रहेगी चलने में." आलिया ने मायूसी भरे लहज़े में कहा.

"अब अंदाज़ा हर बार तो सही नही हो सकता. तुमने कभी अपनी फिगर बताई ही नही मुझे."

"बता दूँगी लिख कर. अभी ये बताओ क्या करूँ अब मैं."

"अपना चुडीदार ही पहन लो. जीन्स पहन-ने के बहुत मोके आएँगे जींदगी में. पहली बार नही घूम रहे हम साथ. आगे भी घूमते रहेंगे. अभी पूरा भारत पड़ा है घूमने के लिए."

"क्या हम पूरा भारत घूम लेंगे." आलिया झूम उठी ये सुन कर.

"बिल्कुल. मेरी तो बचपन की इच्छा है ये. तुम्हारे साथ घूमने का मज़ा ही कुछ और होगा. चलो जल्दी से चेंज करलो. मैं नहा कर आता हूँ. नास्ते का ऑर्डर कर दिया है मैने." राहुल ने कहा और वॉश रूम में घुस गया.

ठीक ८ बजे निकल दिए वो दोनो होटेल से. एयर पोर्ट बहुत नज़दीक था महिपालपुर से. कोई २० मिनिट में ही एयर पोर्ट पहुँच गये वो दोनो.

बोरडिंग पास लेकर, सेक्यूरिटी चेक करवा कर वो बोरडिंग के इंतेज़ार में बैठ गये.

"जान मुझे विंडो सीट मिली है. पर क्योंकि तुम पहली बार सफ़र कर रही हो प्लेन से इसलिये अपनी विंडो सीट तुम्हे दे दूँगा."

“शुक्रिया आपका इस मेहरबानी के लिए. वैसे इस अहसान के लिए मुझे क्या करना होगा.” आलिया ने कहा.

“अब आप इतना अहसान मान रही हैं तो घर जाते ही सबसे पहले एक कप चाय दे देना. तरस गया हूँ तुम्हारे हाथ की चाय के लिए.”

तभी बोरडिंग की अनाउन्स्मेंट हुई और वो दोनो बोरडिंग के लिए चल दिए.

राहुल और आलिया के पास एक लेडी आ कर बैठ गयी. बैठते ही वो बोली, “क्या आप वडोदरा में ही रहते हैं.”

“जी हां, हम वही रहते हैं.” राहुल ने कहा.

“आपका शुभ नाम?”

“जी मेरा नाम राहुल है.”

“ओह शुक्र है. आक्च्युयली मैं पहली बार गुजरात जा रही हूँ. सुना है कि वहा का माहोल बहुत खराब है. ये टेररिस्ट लोग पता नही कब बक्सेंगे हम हिंदुस्तानियों को.”

“टेररिस्ट…गुजरात में कोई टेररिस्ट नही हैं.” राहुल ने कहा.

“अरे यार मासूम मत बनो. तुम जानते हो मैं क्या कह रही हूँ.”

आलिया से ये सब बर्दाश्त नही हुवा और वो बोली, “क्या आप कृपया करके शांति से बैठेंगी. हमें डिस्टर्बेन्स हो रही है.”

“ये कौन है आपके साथ. रीअॅक्ट तो ऐसे कर रही है जैसे कि मैने इसे कुछ कहा है.”

“ये मेरी पत्नी है और इसका नाम आलिया है.”

“हे भगवान.” उस लेडी ने अपने मूह पर हाथ रख लिया. उसने तुरंत एर होस्टेस्स को बुलाया और अपनी सीट चेंज करने की रिक्वेस्ट की.

उस लेडी के जाने के बाद आलिया ने कहा, “देखा राहुल, इस तरह से लेगी दुनिया हमारे प्यार को. कैसे चिड कर भाग गयी यहा से. कितनी नफ़रत है दुनिया में प्यार के लिए लोगो के दिलो में.”

“वो पागल थी और पागल की बातों को दिल से नही लगाते. उसकी मेंटल कंडीशन ठीक होती तो ऐसी बाते ही ना करती. चलो छोडो ये सब…बाहर झाँक कर देखो बादल कितनी प्यारी चित्रकारी कर रहे हैं.”

“ओह वाउ…ग्रेट. ये तो ऐसा लग रहा है जैसे की हम जन्नत में उड़ रहे हैं. बहुत सुंदर है ये नज़ारा राहुल. थँक यू वेरी मच.”

“जान ये थँक यू बोल कर तमाचा मत मारो मेरे गाल पर. तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूँ मैं.” राहुल ने कहा.

आलिया पूरे सफ़र में बस विंडो से बाहर ही देखती रही. बादलों की बनती बिगड़ती चित्रकारी में खो गयी थी वो. कभी हँसती थी कभी मुश्कूराती थी और कभी एक तक बस देखे जाती थी.

अचानक उसने खिड़की से सर लगा कर नीचे की ओर देखा और बोली,“राहुल देखो…वो नीचे क्या कोई नदी है…” पर राहुल का कोई रेस्पॉन्स नही आया. वो सो गया था.

आलिया ने राहुल को कोहनी मारी, “मुझे खिड़की पर बैठा कर सो गये, शरम नही आती तुम्हे.”

“ओह…जान नींद आ गयी थी…क्या हुवा” राहुल ने आँखे मलते हुवे कहा

“कोई नदी दीखाई दे रही थी शायद. अब तो निकल गयी वो…अब क्या फायदा.” आलिया ने गुस्से में कहा.

“हाहहाहा…एक नदी नही है भारत में. हज़ारों हैं. दूसरी आ जाएगी…परेशान क्यों हो रही हो.”

“हज़ारों हैं तो क्या एक की अहमियत कम हो जाएगी. पहली बार आकाश से देखा मैने किसी नदी को. कितनी सुंदर लग रही थी.”

“मुझे तो इस वक्त तुम बहुत सुंदर लग रही हो. बिल्कुल बच्ची बन गयी हो. लगता है बच्चो को पढ़ाते-पढ़ाते खुद भी बच्ची बन गयी तुम.” राहुल ने हंसते हुवे कहा.

“कोई बुराई तो नही है ना इसमें, ज़्यादा हँसो मत वरना दाँत तोड दूँगी तुम्हारे अभी.”

“भाई जो भी है मुझे तो डर कर रहना पड़ेगा तुमसे. एक बार गमला मार चुकी हो सर पर, एक बार हॉकी मार चुकी हो पेट में…अब मेरे दाँतों के पीछे पड़ी हो. भगवान भली करे.”

“मैं क्या इतनी बुरी हूँ. अगर ऐसा था तो क्यों आए थे वापिस मेरे पास.” आलिया ने भावुक आवाज़ में कहा.

“अरे मज़ाक कर रहा हूँ जान. तुम भी ना. तुम तो जींदगी हो मेरी. तुम्हारे पास नही आता तो कहा जाता मैं.” राहुल ने कहा.

तभी प्लेन में अनाउन्स्मेंट हुई कि प्लेन वडोदरा में लँड करने वाला है, सभी यात्री सीट बेल्ट बाँध लें.

“हरे हम पहुँच गये अपने घर.” आलिया ने कहा.

“हां बस थोड़ी ही देर में हम अपने उसी घर में होंगे जहा हमें प्यार हुवा था.” राहुल ने आलिया का हाथ थाम लिया और दोनो प्यार से एक दूसरे की तरफ देखते-देखते खो गये.

“लँडिंग के वक्त खींचाव महसूस होगा जान. घबराना मत” राहुल ने कहा.

“तुम साथ हो तो डर काहे का. बिल्कुल नही घबराऊंगी.” आलिया ने कहा.

कह तो दिया था आलिया ने की नही घबराएगी मगर लँडिंग के वक्त उसके पाँव काँपने लगे और चेहरे पर डर सॉफ दीखाई देने लगा. राहुल उसे देख कर मध्यम-मध्यम मुस्कुरा रहा था.

प्लेन से उतरने के बाद राहुल ने आलिया को छेड़ा, "तुम तो मेरे होते हुवे भी घबरा रही थी. कितनी डरपोक हो तुम."

"पहली बार आई हूँ मैं प्लेन से, मुझे नही पता था कि ऐसा होगा. ज़्यादा हसोगे तो लड़ाई हो जाएगी अब."

"अभी नही जान, घर चल कर लड़ना आराम से." राहुल ने कहा.

राहुल ने एक टॅक्सी की और आलिया को लेकर घर की तरफ चल दिया. दोनो बहुत खुश थे. पाँव ज़मीन पर नही टिक रहे थे दोनो के.

"राहुल आस-पडोस में किसी ने मुझे तुम्हारे साथ देखा तो, क्या कहोगे उन्हे मेरे बारे में."

"किसी को कुछ एक्सप्लेन करने की ज़रूरत नही है. और कहना भी पड़ा किसी को कुछ तो बोल दूँगा कि तुम मेरी पत्नी हो… सिंपल."

"काश हम शादी करके ही घर जाते. फिर कोई उंगली नही उठा पाता."

"हां ये तो है…पर जान हमें साथ रहने के लिए किसी सर्टिफिकेट की ज़रूरत नही है. और हम एक-दो दिन में ही शादी कर लेंगे, तुम किसी बात की चिंता मत करो."

"चिंता नही है किसी बात की बस यू ही सोच रही थी." आलिया ने कहा.

लेकिन ये अच्छा हुवा कि जब वो घर पहुँचे तो किसी ने उन्हे नही देखा. दोपहर का वक्त था और सभी लोग घरो में थे. आलिया ने अपने हाथ से ताला खोला और झट से अंदर आ गयी.

“ये ताला नही चाहिए मुझे अब. इसे फेंक दो. बहुत परेशान किया है इस ताले ने मुझे.” आलिया ने कहा.

“बिल्कुल फेंक दूँगा. अब जब तुम इसे खोल कर घर में प्रवेश कर गयी हो तो इसका कोई काम नही है.”

“घर तो चमका रखा है तुमने. इतनी मेहनत करने कि क्या ज़रूरत थी. मैं कर देती ना सफाई.” आलिया ने कहा और सोफे पर बैठ गयी.

“मैं अपनी जान को क्या धूल-मिट्टी से भरे घर में लाता.” राहुल ने कहा.

“चाय लावू तुम्हारे…”

“दूध नही है…चाय कैसे बनाओगी…थोड़ी देर रूको मैं मार्केट से ले आऊंगा. पहले थोड़ा बैठ लेते हैं.” राहुल ने कहा.

राहुल बैठा ही था सोफे पर की घर की बेल बज उठी.

“कौन हो सकता है?” आलिया ने पूछा.

“तुम अपने कमरे में जाओ. मैं देखता हूँ.” राहुल ने कहा.

आलिया दिल में बेचैनी सी लिए वहा से उठ गयी, “क्या किसी ने हमें देख लिया. मेरे अल्लाह हमारे प्यार में अब और कोई रुकावट मत डालना.”

राहुल ने दरवाजा खोला, “चाचा जी आप.”

“हां बेटा मैं. तुम तो बिना बताए चले आए. क्या बीती है मुझपे और तेरी चाची पर कह नही सकता.”

“आईए चाचा जी… अंदर आईए”

“अंदर तो आ जाऊंगा पहले ये बताओ कि ऐसा क्या हो गया था कि तुम हमें बिना बताए चले आए मुंबई से. ऐसा कोई करता है क्या अपनो के साथ.”

“चाचा जी आप बैठिए तो सही. मेरी कुछ मजबूरी थी, जिसके कारण मुझे तुरंत वहा से जाना पड़ा…क्या आप मुझे नही जानते. कोई कारण रहा होगा तभी मैं बिना बताए चला आया. आप मुझे कभी नही जाने देते और मेरा जाना बहुत ज़रूरी था.”

आलिया सब सुन रही थी दिल थामे.

“बेटा हमारा तो चलो कुछ नही पर अवनी का क्या.” रामदास त्रिवेदी ने कहा.

“अवनी का क्या… मतलब?” राहुल ने हैरानी में कहा.

“बेटा डॉक्टर ने कहा था कि ऐसी कोई बात ना कहें तुम्हारे सामने जिस से तुम्हे दुख पहुँचे. इसलिये अवनी का जिकर नही किया हमनें. तुम्हे ये शादी बिल्कुल पसंद नही थी. पर है तो वो तुम्हारी पत्नी ना.”

“ये आप क्या कह रहे हैं मुझे कुछ समझ नही आ रहा.” राहुल बेचैन हो उठा.

ये सब सुन कर आलिया की भी हालत खराब हो गयी. उसे अपने कानो पर विश्वास नही हो रहा था.

“बेटा जब तक तुम कोमा में थे अवनी मुंबई में ही रही हमारे पास. खूब सेवा की उसने तुम्हारी. हम सब अपने काम में बिज़ी हो जाते थे पर वो हर वक्त तुम्हारे पास बैठी रहती थी. एक तरह से वही तुम्हारी नर्स थी पूरा साल. जिस दिन तुम्हे होश आया उस से दो दिन पहले ही गयी थी वो दिल्ली अपने घर. वो वापिस आई तो तुम चले गये. बहुत रोई वो तुम्हारे लिए. देखो बेटा ७ साल हो चुके हैं शादी को. शादी के वक्त ७ साल के बाद गोने की बात हुई थी. अब वक्त आ गया है कि तुम अपनी पत्नी को घर ले आओ. भैया जींदा होते तो वो भी यही कहते जो मैं कह रहा हूँ.”

“चाचा जी…मैने उस शादी को ना तब माना था और ना अब मानूँगा. वो सब दादा जी ने कर दिया था. मम्मी, पापा भी इसके खिलाफ थे. मुझे अवनी से कोई नाराज़गी नही है पर

मैं ये बालविवाह नही निभा सकता.''

''बेटा बेशक भैया भाभी भी राज़ी नही थे इस शादी के लिए पर शादी तो हुई ना और पूरे धर्मी रिती रिवाज से हुई. तुम जल्दबाज़ी में कोई फ़ैसला मत लो. ठंडे दिमाग़ से सोच लो. अवनी बहुत अच्छी लड़की है. जितनी सेवा उसने की है तुम्हारी उतनी कोई नही कर सकता. तुम्हारे बारे में पता चलते ही वो अपनी पढ़ाई-लिखाई सब कुछ छोड कर मुंबई आ गयी थी. उसने अपना पत्नी धरम निभाया, तुम नही देख पाए लेकिन हमने देखा है. उसे ठुकराने की भूल मत करना…बहुत प्यारी बच्ची है वो. तुम्हारी जोड़ी अच्छी रहेगी.''

''बस चाचा जी प्लीज़. रहने दीजिए ये सब. मैं इस बाल-विवाह को कभी स्वीकार नही करूँगा.''

''हां बेटा मैं कौन होता हूँ, जिसकी बात तुम मानोगे.''

''नही चाचा जी आपकी हर बात मानूँगा मगर ये नही मान सकता. ७ साल पहले शादी हुई…तब मुझे होश भी नही था. बहुत बुरा लगा था मुझे उस वक्त भी कि ये क्या मज़ाक हो रहा है. पर मेरी किसी ने नही सुनी. मैने इस शादी को कभी स्वीकार नही किया और ना ही करूँगा.''

''तुम्हारे स्वीकार करने या ना करने से क्या होता है. शादी पूरे समाज के सामने हुई थी और पूरे रीति रिवाज से हुई थी. और एक बात सुन लो तुम. अवनी मुंबई अपने घर वालो से लड़ कर आई थी. किसी को उम्मीद नही थी कि तुम कोमा से निकलोगे. मगर अवनी ने उम्मीद नही छोडी. वो इतना प्यार करती है तुम्हे, पत्नी के सारे फ़र्ज़ निभाए उसने और तुम ऐसी बाते कर रहे हो. जब उसे पता लगेगा ये सब तो वो तो मर ही जाएगी. क्या कमी है उसमे जो कि तुम ऐसी बाते कर रहे हो.''

''बात कमी की नही है. मैं उस से मिलूँगा और समझा दूँगा उसे.''

''बेटा अवनी के पेरेंट्स ने किसी विश्वास के साथ भेजा था उसे मुंबई. अवनी की ज़िद्द थी वरना वो उसे कभी ना भेजते, अब तुम ऐसा बर्ताव करोगे तो तूफान आ जाएगा. वो लोग चुप नही बैठेंगे.''

“चाचा जी मुझे किसी से गिला शिकवा नही है. अवनी से मैं कभी नही मिला. बस शादी के वक्त देखा था उसे. ना ही उसके परिवार वालो से मुलाक़ात हुई बाद में कभी. मैं उनसे माफी माँग लूँगा. रिश्ते ज़बरदस्ती नही जोड़े जाते. दादा जी ने ग़लत किया था ये बाल विवाह करवा कर और मैं इस ग़लती को जींदगी भर नही धो सकता.”

“ठीक है बेटा जैसी तुम्हारी मर्ज़ी. मेरा फ़र्ज़ तो तुम्हे समझाना था. भैया भाभी जींदा होते तो वो भी यही समझाते.”

“मम्मी पापा को भी मैं यही जवाब देता. अब मैं बड़ा हो गया हूँ. २१ साल उमर है मेरी. बालिग हूँ मैं अब और अपने भले बुरे का फ़ैसला खुद कर सकता हूँ. ७ साल पहले मुझे बहला फुसला कर मंडप पर बैठाया गया था. असहाय था उस वक्त मैं पर आज नही हूँ. आज किसी के आगे नही झूकुंगा. ये मेरी जींदगी है और मैं अपने तरीके से जीने का हक़ रखता हूँ.”

“मैं चलता हूँ बेटा. खुश रहो सदा. फिर भी जाते-जाते यही कहूँगा कि एक बार सोच लेना फिर से. एक मासूम लड़की की जींदगी का सवाल है जिसने पूरा साल बिना किसी स्वार्थ के तुम्हारी सेवा की है.”

“मुझे अवनी से कोई शिकवा नही है. उसने मेरे लिए इतना कुछ किया उसके लिए आभारी हूँ. पर मैं मजबूर हूँ. मैं उस से मिलकर माफी माँग लूँगा. मुझे उम्मीद है कि वो मेरी बात समझेगी.”

“बेटा क्या तुम्हारी जींदगी में कोई और लड़की है जिसके कारण तुम अवनी को ठुकरा रहे हो. अगर ऐसा है तो जान लो..उस से बेहतर पत्नी नही मिल सकती तुम्हे. जो त्याग और समर्पण उसने दिखाया है वो हर किसी के बसकि बात नही है. सोचना दुबारा फिर से. फॅक्टरी संभाल लेना जाकर अब तुम. मेरे जो बस में था मैने किया. चलता हूँ अब.”

रामदास त्रिवेदी चेहरे पर निराशा के भाव लिए वहा से निकल गया.

रघुनाथ के जाने के बाद आलिया तुरंत भाग कर आई और बोली, “तुम शादी शुदा हो और मुझे बताया तक नही. एक महीना तुम्हारे साथ रही मैं इस घर में. अब भी लंबे सफ़र के बाद तुम्हारे साथ आई हूँ. क्या ये बात नही बता सकते थे मुझे.”

“जान…मेरे लिए उस शादी का कोई मतलब नही था. मैने कभी उस शादी को शादी नही माना. बल्कि मैं तो भूल ही गया था गुड्डे-गुड्डी के उस मज़ाक को.”

“अब क्या होगा मुझे बहुत डर लग रहा है. अवनी तुम्हारी पत्नी कैसे हो सकती है. तुम पर तो सिर्फ़ मेरा अधिकार है ना राहुल.” आलिया रोते हुवे बोली.

“हां मुझ पर और मेरी आत्मा पर सिर्फ़ तुम्हारा अधिकार है.”

“उसने बहुत सेवा की तुम्हारी. कही तुम्हारा दिल उसके लिए पिघल तो नही जाएगा.” आलिया सुबक्ते हुवे बोली.

“पागल हो क्या. तुम्हारे सिवा मेरी जींदगी में कोई नही आ सकता. तुमने सुनी ना सारी बाते. फिर क्यों परेशान हो रही हो.”

“अवनी से मिलने मत जाना…कही वो तुम्हे मुझसे छीन ले. वादा करो कि नही मिलोगे तुम अवनी से.”

“पागल मत बनो. उस से मिलना बहुत ज़रूरी है. उसकी क्या ग़लती है. उस से मिल कर अपना पक्ष रखूँगा तभी बात बनेगी वरना तो वो मुझे ग़लत समझेगी”

“क्या वो सुंदर है?” आलिया ने आँखो से आँसू पोंछते हुवे कहा.

“मैं मिला ही कहा हूँ उस से. बस शादी के वक्त देखा था. तब बहुत छोटी थी वो. रो रही थी मंडप में आते हुवे. जैसे मुझे ज़बरदस्ती लाया गया था मंडप में वैसे ही उसे भी ला रहे थे उसके पेरेंट्स. और सुंदर हुई भी तो क्या फरक पड़ता है, मेरी आलिया का मुक़ाबला कोई नही कर सकता.”

“मिल लेना उस से मगर देखना मत उसे बिल्कुल भी, ठीक है, वरना तुम्हारा खून पी जाऊंगी मैं….. मेरे अल्लाह ये सब हमारे साथ ही क्यों हो रहा है.” आलिया ने कहा.

आलिया सोफे पर बैठ गयी सर पकड़ कर. राहुल ने उसके कंधे पर हाथ रखा और बोला, “क्या हुवा जान तुम परेशान क्यों हो रही हो. मैं हूँ ना तुम्हारे साथ. तुम घबराओ मत सब

ठीक है.”

“क्या ठीक है, अब जब तक तुम्हारी पहली शादी का मामला नही निपट जाता हम शादी नही कर सकते.” आलिया ने भावुक हो कर कहा.

“क्यों तुम्हे चुंबन की जल्दी पड़ी है क्या?” राहुल मुस्कुरा कर बोला.

“राहुल मज़ाक मत करो…क्या ये सब मज़ाक लग रहा है तुम्हे. किस हक़ से रहूंगी मैं अब यहा तुम्हारे साथ बताओ. अब मुझे जाना पड़ेगा ना अपने ही घर से.”

“कैसी बात कर रही हो तुम…क्यों जाना पड़ेगा तुम्हे. शादी के बिना भी ये घर तुम्हारा ही है.”

“ये तुम जानते हो, मैं जानती हूँ पर ये समाज नही जानता. तुम्हे लोग कुछ नही कहेंगे पर मेरे चरित्र की धज्जिया उड़ाई जाएँगी. लोग मुझे ग़लत नज़रो से देखेंगे. अभी तो ये भी नही पता कि धरम के ठेकेदार हमारे रिश्ते को कैसे लेंगे, उपर से ये बालविवाह का लफडा भी आ गया.राहुल मैं कैसे रह पाउंगी यहा…नही रह पाउंगी. तुम खुद सोच कर देखो.”

आलिया की बात बिल्कुल सही थी. उसका ऐसा सोचना स्वाभाविक था. समाज के सामने शादी किए बिना उनका साथ रहना आलिया के चरित्र को कलंकित ही करेगा. ये बात आलिया समझ रही थी मगर राहुल नही समझ पा रहा था.

“तो तुम मुझे और इस घर को छोड कर चली जाओगी. बहुत बढ़िया…क्या इतनी जल्दी हार मान लोगि तुम”

“एक साल तक इंतेज़ार किया मैने तुम्हारा…पूरा एक साल. हार ना कभी मानी है और ना मानूँगी. मगर मैं नही चाहती कि मैं अपने संस्कारों की धज्जियाँ उडाऊ. मेरे अम्मी-अब्बा की रूह भटकेगी अगर मैने ऐसा किया तो. मेरी परवरिश इस बात की इज़ाज़त नही देती कि मैं यहा बिना शादी किए बिना रहूं. और शादी में तो अब रुकावट आ गयी है. जब तक पहली शादी रफ़ा दफ़ा नही करते तुम तब तक दूसरी शादी कैसे करोगे.”

“आलिया किसी ने तुम्हे देखा नही है यहा आते हुवे. तुम चुपचाप यहा रह सकती हो. क्यों इतना कुछ सोच रही हो.” राहुल ने कहा.

“राहुल मैं जाना नही चाहती हूँ यहा से…पर यहा रुकना भी बहुत अजीब लग रहा है.” आलिया सुबक्ते हुवे बोली.

राहुल आगे बढ़ा. वो आलिया को गले लगाना चाहता था. मगर आलिया पीछे हट गयी और भाग कर अपने कमरे में आ गयी और दरवाजा बंद कर लिया.

राहुल भाग कर आया उसके पीछे, “जान दरवाजा खोलो यू परेशान होने से कुछ हाँसिल नही होगा. और तुम ये घर छोड कर नही जाओगी. अगर गयी तो मैं मर जाऊंगा.”

आलिया ने दरवाजा खोला और चिल्ला कर बोली, “चुप करो ऐसी बाते नही करते. मैं नही जा रही हूँ कही. मैं बस अपने परेशानी बता रही थी. तुम एक औरत की मजबूरी नही समझ सकते.”

“समझ रहा हूँ जान मगर तुम ये घर छोड कर नही जाओगी. ऐसा करते हैं, तुम यहा किरायदार बन जाओ. मैं उपर वाला कमरा झूठ मूट में दुनिया को दीखाने के लिए तुम्हे दे देता हूँ. रहोगी तुम यही नीचे हर वक्त. किसी को क्या पता चलेगा. बस बाहर से सीढ़ियाँ डलवा देता हूँ. बाहर की सीढ़ियों से उपर जाना और पीछे की सीढ़ियों से नीचे आ जाना. मैं इस बाल-विवाह के झंझट को जल्द से जल्द ख़तम करने की कोशिश करूँगा. चाहे कुछ हो जाए तुम रहोगी यही. बस मुझे रेंट देती रहना.”

“हां ये ठीक है. इस से हम साथ भी रहेंगे और दुनिया मुझे ग़लत भी नही समझेगी. पर ये रेंट का क्या चक्कर है.” आलिया अपने आँसू पोंछते हुवे बोली.

“रेंट तो भाई तुम्हे देना ही पड़ेगा.”

“हां पर कैसा रेंट.”

“रोज इस ग़रीब को अच्छा-अच्छा खाना बना कर दे देना यही रेंट है.”

“वो तो वैसे भी मैं दूँगी ही. मैं नही बनाऊंगी तो कौन बनाएगा खाना यहा” आलिया ने कहा.

“अच्छा जान तुम आराम करो मैं मार्केट से राशन ले आता हूँ. और बाहर से सीढ़ियाँ डलवाने का काम भी कल से शुरू करवा दूँगा. एक दिन में ही हो जाएगा सारा काम. फिर ४-५ दिन उसे मजबूत होने में लगेंगे फिर तुम दुनिया की नज़रो में किरायदार बन जाना. तब तक छुप कर रहो.”

“ठीक है…क्या कुछ लाओगे”

“तुम लिस्ट बना दो मैं तब तक फ्रेश हो लेता हूँ.”

“ओके…” आलिया मुस्कुरा कर बोली.

रामदास त्रिवेदी निराश-हताश घर पहुँच गया मुंबई. उनकी बीवी उन्हे देखते ही भाग कर आई उनके पास, "क्या हुवा कुछ पता चला की राहुल कहा है."

"हां पता चला…" रघुनाथ बोलते-बोलते रुक गया क्योंकि उन्हे अवनी आती दीखाई दी उसकी ओर.

"चाचा जी क्या हुवा सब ठीक तो है?" अवनी ने कहा

"हां बेटा सब ठीक है. राहुल बिल्कुल ठीक है. आएगा तुझसे मिलने वो जल्दी ही."

"कहा हैं वो?" अवनी ने पूछा.

"गुजरात में ही है बेटा. कुछ बहुत ज़रूरी काम था उसे जिसके कारण उसे जाना पड़ा बिना बताए."

ये सुनते ही अवनी के चेहरे पर मुस्कान बिखर गयी. उसने मन ही मन कहा, "शुक्र है सब ठीक है."

"चाचा जी पापा उनसे मिलने को बोल रहे थे. उन्हे मैने बताया नही है अभी की वो यहा नही हैं. आपने मना किया था ना अभी बताने से इसलिये उन्हे कुछ नही बताया, बस यही बताया है कि उन्हे होश आ गया है. अब बतायें कि क्या कहूँ पापा को. वो तो कल ही मुंबई आने को बोल रहे हैं और वो यहा नही हैं."

"बेटा थोड़ा बैठते हैं पहले. आराम से सोचते हैं कि क्या करना है."

"ठीक है चाचा जी. आप बैठिए आराम से, मैं चाय लाती हूँ आपके लिए… इलायची वाली." अवनी ने कहा और कह कर चली गयी.

"कैसे बताऊंगा इस मासूम को कि जिसके लिए तुम इतना परेशान हो, जिसकी तुमने दिन रात सेवा की वो तुम्हे अपनाना ही नही चाहता. नही बता पाऊंगा इसे कुछ भी. ये काम राहुल को ही करना होगा.इस फूल सी बच्ची को मैं ये सब अपने मूह से नही बता सकता." रामदास त्रिवेदी ने मन ही मन कहा.

अवनी किचन में चाय बनाती हुई बस राहुल को ही सोच रही थी, “आपको नींद में ही देखा मैने पूरा साल. रोज आपके चरण छू कर दिन की शुरूवात करती थी. यही दुवा करती थी मैं कि आप इस गहरी नींद से उठ जायें और आपकी गहरी नींद मुझे लग जाए. देखना चाहती थी आपको उठे हुवे. पर आप नींद से जाग कर चले भी गये यहा से और मुझे पता भी नही चला. इस से बुरा नही कर सकते थे भगवान मेरे साथ. काश दिल्ली नही जाती तो आपको देख पाती और आपके चर्नो में बैठ कर कहती की मुझे बहुत खुशी हुई आपको जागे हुवे देख कर. पता नही आप मेरे बारे में सोचते हैं कि नही पर मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ. बचपन से ही बस आपको ही बैठा रखा है दिल में.”

“अरे अवनी चाय उबल गयी बेटा कहा खोई हो” चाची ने आवाज़ दी.

अवनी अपने विचारो से बाहर आई और तुरंत गॅस ऑफ किया, “ओह सॉरी चाची जी, ध्यान भटक गया था.”

“कोई बात नही बेटा होता है कभी-कभी. वैसे क्या सोच रही थी तुम. ज़रूर राहुल के बारे में ही सोच रही होगी.”

अवनी का चेहरा शरम से लाल हो गया ये सुन कर. उसने बात को टालते हुवे कहा, “आप चलिए मैं चाय लाती हूँ.”

“इतनी सुंदर और सुशील बहू हमें ढूँढे नही मिलती. अच्छा हुवा जो कि तुम बचपन में ही हमारे राहुल की बीवी बन गयी.” चाची ने कहा.

“चलिए ना चाची जी मैं चाय ला रही हूँ.” अवनी शरमाते हुवे बोली.

“हां ले आओ बेटा…” चाची ने कहा और चली गयी

चाची के साथ ही आरजु खड़ी थी. वो राहुल के चाचा, चाची की, इक-लौति संतान थी. चाची के जाने के बाद वो अवनी के पास आई और बोली, “भाभी बड़ी खुश लग रही हो. खुशी-खुशी में चाय खराब तो नही कर दी.”

“चल भाग यहा से…तुझे कौन सा चाय पीनी होती है. खराब भी हुई तो तुझे क्या फरक पड़ेगा.” अवनी ने कहा.

“वैसे भैया को ना आप देख पाई उठने के बाद और ना मैं. आप दिल्ली चली गयी और मुझे अपने कॉलेज की ट्रिप पे जाना पड़ा.” आरजु ने कहा.

“अच्छी बात ये है कि वो ठीक हैं, इन बातों से कोई फरक नही पड़ता है.” अवनी ने कहा.

“हां ये तो है…भाभी तुमने कितनी सेवा की है भैया की. कोई और इतना नही कर सकता था.”

“बस-बस…चल ये बिस्कट ले कर जा मैं चाय की ट्रे लाती हूँ.” अवनी ने कहा.

अवनी चाय लेकर आई ड्रॉयिंग रूम में तो रघुनाथ ने कहा, “बेटा मैं सोच रहा हूँ कि पहले तुम राहुल से मिल लो. दोनो मिल कर डिसाइड कर लो कि गोना कब करना है. फिर अपने पापा को बुला लेना.”

“नही चाचा जी कैसी बात कर रहे हैं आप. मैं कुछ डिसाइड नही कर सकती. सब कुछ मम्मी,पापा ही डिसाइड करेंगे.” अवनी ने कहा.

“वो तो ठीक है बेटा. पर वक्त बदल गया है अब. तुम दोनो एक दूसरे से मिल कर सब कुछ तैय करोगे तो अच्छा रहेगा.”

अवनी कुछ परेशान सी हो गयी ये सुन कर और चाय रख कर चली गयी वहा से.

“आप भी ना. वो कैसे करेगी बात राहुल से, वो भी अपने गोने के बारे में. क्या देखा नही आपने कि वो कितना शरमाती है. ज़्यादा बाते करनी आती भी नही उसे. ये बातें तो आपको ही करनी होंगी अवनी के घर वालो से. ये बच्चे क्या डिसाइड करेंगे.” चाची ने कहा

“तुम्हे नही पता भाग्यवान. आजकल के बच्चे बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हैं. हम जो डिसाइड करेंगे शायद वो इन्हे अच्छा ना लगे.” रघुनाथ ने धीरे से कहा.

“ऐसा क्यों बोल रहे हैं आप.” चाची ने पूछा.

रघुनाथ ने पूरी बात बता दी अपनी बीवी को.

“हे भगवान! ऐसा सोच भी कैसे सकता है राहुल. ऐसा हुवा तो अनर्थ हो जाएगा. मैं बात करूँगी उस से. दिमाग़ खराब हो गया है उसका जो कि ऐसी बाते कर रहा है.”

“बहुत समझाया मैने उसे मगर उसने मेरी एक नही सुनी” रघुनाथ ने कहा.

“अच्छा तभी आप दोनो को मिलने को बोल रहे थे.”

“हां मैं चाहता हूँ कि जो भी बात करनी है राहुल खुद करे अवनी से. मैं अपने मूह से उसे ये सब नही बता सकता.”

“राहुल को समझाऊंगी मैं. वो मेरी बात ज़रूर मानेगा. और अवनी को देखा नही है उसने अब तक. एक बार मिल लेगा तो पता चलेगा उसे कि वो किसे ठुकराने की सोच रहा है.”

“भगवान से यही दुवा है की अवनी के साथ कोई अनर्थ ना हो. राहुल का कुछ नही बिगड़ेगा… वो लड़का है, सब कुछ अवनी का ही बिगड़ेगा.”

“ऐसा कुछ नही होगा आप शांत रहें. आपको अवनी की बहुत चिंता हो रही है…बिल्कुल अपनी आरजु की तरह मानते हैं आप उसे.”

“हां मेरी बेटी ही है अवनी. देख नही पाऊंगा उसके साथ ये अनर्थ होते हुवे.” रघुनाथ ने कहा.

राहुल ने घर के बाहर सीढ़ियाँ डलवा दी और आस-पड़ोस में ये क्लियर भी कर दिया कि आलिया उसके यहा किरायदार बन कर रह रही है.

"सोच रहा हूँ कि तुम्हारे घर की भी मरम्मत करवा दूं." राहुल ने कहा.

"रहने दो सबको शक हो जाएगा. ये काम शादी के बाद करेंगे. बल्कि दोनो घरो को जोड़ कर एक बना देंगे हम." आलिया ने कहा.

"आलिया चाचा जी का टेलीग्राम आया था आज फॅक्टरी में. तुरंत बुलाया है उन्होने मुझे मुंबई अवनी से मिलने के लिए. तुम बताओ क्या करूँ."

आलिया ने गहरी साँस ली और बोली, "जाना तो पड़ेगा ही तुम्हे. इस समस्या का हल तो करना ही है ताकि हम सुख शांति से रह सकें."

"हां बहुत ज़रूरी है इस उलझन को दूर करना तभी हम अपने प्यार में आगे बढ़ पाएँगे."

आलिया रह तो रही थी किरायदार के रूप में मगर आस-पड़ोस के लोग फिर भी उसे घूर-घूर कर देखते थे. जिसके कारण वो गुमसूम और परेशान रहती थी. राहुल के मुंबई जाने के ख्याल से वो और ज़्यादा परेशान हो गयी थी

"राहुल मुझे भी ले चलो साथ मुंबई. मैं यहा अकेली नही रह पाउंगी. तुम देख ही रहे हो कैसा माहोल है यहा. घूर-घूर कर देखते हैं लोग मुझे. लगता है लोगो को शक हो गया है हमारे बारे में."

"आलिया चिंता मत करो..मैं मुंबई जा रहा हूँ ना. सब ठीक करके आऊंगा और आते ही हम शादी कर लेंगे. ज़्यादा दिन नही सहना होगा तुम्हे ये सब. फिर देखता हूँ कि कौन घूर कर देखता है तुम्हे. आक्च्युयली मैं प्रॉब्लेम ये है कि किसी को बर्दाश्त नही हो रहा होगा कि एक अधर्मी लड़की धर्मी के घर रह रही है."

"हां यही मैं प्रॉब्लेम है. पता नही जब हम शादी करके रहेंगे फिर किस तरह रीअॅक्ट करेंगे ये लोग."

“तब की तब देखेंगे. हमें जो करना है करना है.”

“राहुल मुझे भी अपने साथ मुंबई ले चलो प्लीज़. मैं यहा अकेली क्या करूँगी.”

“चलना चाहती हो तुम?”

“हां…ले चलोगे ना?”

“तुम्हारे लिए कुछ भी करूँगा जान. चलो समान पॅक करलो, तुम्हे मुंबई घुमा कर लाता हूँ.” राहुल ने कहा.

“बहुत खर्चा करवा रही हूँ तुम्हारा.”

“पागल हो क्या. सब तुम्हारा है. और फॅक्टरी ठीक चल रही है. और ध्यान दूँगा तो और ज़्यादा तरक्की करेंगे.”

“राहुल तुम बहुत अच्छे हो” आलिया ने कहा और कह कर किचन की तरफ चल दी.

“रूको कहा जा रही हो?”

“खाना बनाना है…” आलिया हंसते हुवे बोली और किचन में आ गयी.

राहुल भी उसके पीछे पीछे आ गया.

“राहुल पता नही क्यों पर डर सा लग रहा है मुझे. पता नही ये समस्या कैसे और कब दूर होगी और कब मुझे तुम्हारी पत्नी कहलाने का हक़ मिलेगा.”

“वो हक़ तो तुम्हे कब से है. फिर भी एक काम और किए देता हूँ अगर कोई डाउट है तुम्हे तो” राहुल ने चाकू उठाया और इस से पहले कि आलिया कुछ समझ पाती झट से अपने दायें हाथ का अंगूठा चीर दिया.

“ये क्या किया राहुल…पागल हो गये हो क्या.”

राहुल ने कुछ कहे बिना आलिया की माँग भर दी और बोला, "अब मत कहना कि तुम मेरी पत्नी नही हो. जब दिल से मान चुके हैं हम एक दूसरे को पति-पत्नी तो और क्या रह गया है."

आलिया राहुल के कदमो में बैठ गयी, "राहुल मेरा वो मतलब नही था. हम दोनो तो ये जानते ही हैं. बात समाज की हो रही है."

"छोड़ो आलिया हटो अब. हद होती है किसी बात की. बेकार के झंझट पाल रखें हैं तुमने अपने मन में. कितना समझाऊ तुम्हे." राहुल आलिया को किचन में छोड कर बाहर आ गया. आलिया वही बैठी हुई सुबक्ती रही.

आलिया   खाना बना कर राहुल के पास आई.

"खाना खा लो राहुल."

"नही मुझे भूक नही है. तुम खा लो."

"अच्छा सॉरी बाबा…आगे से ऐसा नही कहूँगी…खाना खा लो प्लीज़…वरना मैं भी नही खाऊंगी. वैसे बहुत सुंदर लग रही है मेरी माँग भरी हुई."

"मैने अपने खून से माँग भर दी तुम्हारी फिर भी पता नही कौन सी दुविधा में हो. कोई मज़ाक नही किया था मैने. बहुत मान्यता है इस बात की हमारे लिए."

"मैं जानती हूँ राहुल. इसी देश में पली-बढ़ी हूँ मैं. अच्छा आगे से ऐसा कुछ नही कहूँगी जिस से तुम्हे दुख पहुँचे."

राहुल आलिया के करीब आया और आलिया के चेहरे पर हाथ रख कर बोला, "जान मैं तुम्हारी हर परेशानी समझता हूँ. पर तुम्हे परेशान नही देख सकता."

"सॉरी आगे से ऐसा नही होगा…चलो खाना खाते हैं." आलिया मुस्कुरा कर बोली.

राहुल और आलिया के लिए फिर से ये इम्तिहान का दौर था. पहले इम्तिहान में वो दोनो फैल हो गये थे मगर उसके बाद दोनो ने कुछ ऐसा सीखा था जो कि उन्हे जीवन भर काम आएगा. फेल्यूर कभी बेकार नही जाता. कुछ तो वो भी दे ही जाता है. ये अच्छी बात थी कि ऐसे मुश्किल दौर में दोनो एक साथ खड़े थे. यही प्यार की सबसे बड़ी डिमांड रहती है अगर आप प्यार के सफ़र पर चल रहे हैं तो.

दोनो ने शांति से खाना खाया. और खाना खाने के बाद राहुल ने हंसते हुवे कहा, "अब एक स्वीट डिश हो जाए."

"स्वीट डिश नही बनाई…अभी बना कर लाती हूँ कुछ."

"नही…नही रूको मैं मज़ाक कर रहा था. वैसे कहते हैं कि चुंबन स्वीट होता है."

"श्रीमान वो भी उपलब्ध नही है इस समय. थोड़ा वक्त लगेगा." आलिया मुस्कुरा कर वापिस किचन की ओर चल दी.

"कितना वक्त लगेगा तैयार होने में.?" राहुल ने पूछा.

"क्या स्वीट डिश या…" आलिया ने मूड कर पूछा.

"दोनो के बारे में बता दो."

"स्वीट डिश अभी १० मिनिट में बना देती हूँ. उसमे कितना टाइम लगेगा पता नही." आलिया हंसते हुवे किचन में घुस गयी.

"ओह आलिया कितनी प्यारी हो तुम. ऐसी ही रहना हमेशा. मुझे चुंबन की जल्दी नही है जान. बस मज़ाक कर रहा हूँ तुमसे. तुम मेरी अपनी हो ना इतना मज़ाक तो कर ही सकता हूँ. बुरा मत मान-ना." राहुल ने मन ही मन कहा.

"राहुल मुझे शरम आने लगी है अब तुम्हारे साथ. थोड़ा डर भी लगने लगा है तुमसे. पर सब कुछ अच्छा भी लग रहा है. तुम यू ही रहना हमेशा मेरे लिए. चुंबन अगर बहुत ज़रूरी है तो ले लो. पर नाराज़ मत होना मुझसे. जी नही पाउंगी तुम्हारे बिना." आलिया की आँखे नम हो गयी सोचते सोचते.

ये भी प्यार का अजीब सा रूप है. बिन कहे बहुत सारी बाते होती हैं और समझी भी जाती हैं. आलिया और राहुल लगभग एक सी बाते सोच रहे थे.

अगले दिन राहुल और आलिया मुंबई के लिए रवाना हो गये. दोपहर ३ बजे पहुँच गये वो मुंबई. कोलाबा में घर था राहुल के चाचा जी का. इसलिये वही एक होटेल में रुक गये राहुल और जरीना. कुछ देर आराम करने के बाद राहुल ने कहा, "जान मैं मिल आता हूँ अवनी से. तुम यही रूको."

"हां मिल आओ और शांति से काम लेना. उसकी कोई ग़लती नही है. कुछ भला बुरा मत बोल देना उसे. बहुत सेवा की है उसने तुम्हारी. अपना पत्नी धरम निभाया है. मुझे यकीन है कि तुम सब ठीक करके लोटोगे. काश मैं भी चल पाती तुम्हारे साथ." आलिया ने कहा

"पहले माहोल देख लूँ वहा का. फिर तुम्हे भी ले चलूँगा. चाचा चाची से तो तुम्हे मिलवाना ही है." राहुल ने कहा.

राहुल आलिया को होटेल में छोड कर चाचा जी के घर की तरफ चल दिया. पैदल ही चल दिया वो. बस कोई १५ मिनिट की वॉकिंग डिस्टेन्स पर था उसके चाचा जी का घर. दिल में बहुत सारे सवाल घूम रहे थे. चेहरे पर शिकन सॉफ दीखाई दे रही थी. आलिया से ये सब छुपा रखा था उसने, क्योंकि उसे परेशान नही करना चाहता था. मगर अब उसके दिलो-दिमाग़ को चिंता और परेशानी ने घेर लिया था. उसे खुद नही पता था कि कैसे हँडल करना है सब कुछ, हां बस वो इतना जानता था की उसे हर हाल में इस समस्या का समाधान करना है.

राहुल घर पहुँचा और बेल बजाई तो उसकी चाची ने दरवाजा खोला.

"नमस्ते चाची जी" राहुल ने पाँव छूते हुवे कहा.

"नमस्ते तो ठीक…तुम ये बताओ समझते क्या हो तुम खुद को. बिना बताए भाग गये थे यहा से…कान खींचने पड़ेंगे तुम्हारे लगता है?" चाची बहुत गुस्से में दिख रही थी.

"चाची जी मुझे माफ़ कर दीजिए…मेरी कुछ मजबूरी थी." राहुल गिड़गिदाया.

"आओ अंदर..देखती हूँ क्या मजबूरी थी तुम्हारी." चाची ने कहा.

राहुल अंदर आ गया चुपचाप. चाची ने कुण्डी लगा कर आवाज़ दी, "अजी सुनते हो राहुल आ गया है."

उस वक्त अवनी कमरे में सोई हुई थी. चाची की आवाज़ सुनते ही उठ गयी, "आप आ गये…"

अवनी के साथ आरजु भी थी कमरे में. अवनी ने आरजु को कंधे पर हाथ रख कर हिलाया, "उठो तुम्हारे भैया आ गये हैं."

"राहुल भैया आ गये?" आरजु ने आँखे मलते हुवे कहा.

"हां आ गये हैं. जाओ मिल लो जाकर?" अवनी ने कहा.

"अरे सबसे पहले आपको मिलना चाहिए…चलिए अभी मिलवाती हूँ आप दोनो को. बल्कि आप यही रुकिये मैं भैया को खींच कर लाती हूँ यही." आरजु ने कहा.

"नही रूको मिल लेंगे…इतनी जल्दी क्या है?"

"कैसी बाते करती हो भाभी…ज़्यादा नाटक मत किया करो." आरजु कह कर कमरे से बाहर आ गयी.

राहुल चुपचाप चाचा चाची के साथ सोफे पर बैठा था. चाची डाँट पे डाँट पीलाए जा रही थी उसे, घर से चले जाने की बात को लेकर.

"मम्मी क्यों डाँट रही हो भैया को…आओ भैया भाभी इंतेज़ार कर रही है तुम्हारा." आरजु ने कहा.

राहुल से कुछ भी कहे नही बना. उसके तो जैसे पैरो के नीचे से ज़मीन निकल गयी ये सुन कर.

"आरजु तुम जाओ. राहुल अभी आएगा थोड़ी देर में" रघुनाथ ने गंभीर आवाज़ में कहा.

“पापा बात क्या है…आप सब लोग गुमसूम क्यों हैं. भैया आपने मुझसे ठीक से बात भी नही की. सब ठीक तो है ना.”

“तुमसे कहा ना राहुल आ रहा है. जाओ यहा से.” रघुनाथ ने आरजु को डाँट दिया.

आरजु मूह लटका कर वहा से चली गयी.

आरजु के जाने के बाद चाची ने कहा, “बेटा क्या ये सच है कि तुम गोना नही करना चाहते. अवनी को छोड देना चाहते हो.”

“चाची जी मैने चाचा जी को सब बता दिया है.”

“हां इन्होने बताया है मुझे…मगर मैं तुमसे सुन-ना चाहती हूँ.”

“हां ये सच है. मैं ये बाल-विवाह नही निभा सकता. मैने कभी इस शादी को शादी नही माना.”

“मतलब हम सब बडो की कोई परवाह नही तुम्हे. तुम्हारे मम्मी, पापा जींदा होते तो पता नही क्या हाल होता उनका ये सब सुन कर. क्या तुम्हे अंदाज़ा भी है कि क्या ठुकराने जा रहे हो तुम. अरे हीरा है अवनी हीरा. लाखो में एक है वो.”

“मैं किसी और से प्यार करता हूँ और उसे अपनी पत्नी मानता हूँ. मैं ये गुड्डे-गुडियों का खेल नही निभा सकता.” राहुल ने कहा.

“ये सुनते ही चाचा और चाची की आँखे फटी रह गयी.”

“मुझे तो पहले से ही शक था इस बात का. बहुत बढ़िया बेटा.” चाचा ने कहा.

“कौन है वो करम जली जो हमारी अवनी का घर उजाड़ने पर तुली है.” चाची ने कहा.

चाची बहुत गुस्से में थी इसलिये राहुल ने चुप रहना ही सही समझा.

“मतलब की तुम्हारा फ़ैसला अटल है.” चाचा ने कहा.

“जी हां…मैं शादी करूँगा तो अपनी मर्ज़ी से और वो भी उस से जिसे मैं बहुत प्यार करता हूँ.इस बाल-विवाह को मैं नही मानता.” राहुल ने कहा.

“जाओ बेटा ये सब खुद ही कहो अवनी से जाकर. हम ये सब नही बोल पाएँगे.” रघुनाथ ने कहा और आरजु को आवाज़ दी ज़ोर से “आरजु!”

आरजु मूह लटकाए वापिस आई वहा और बोली, “जी पापा.”

“राहुल को ले जाओ अवनी के पास. ये कुछ ज़रूरी बात करना चाहता है उस से.”

“आओ भैया…” आरजु ने कहा.

राहुल चुपचाप उठ कर चल दिया वहा से.

“भैया कौन सी ज़रूरी बात है?” आरजु ने पूछा.

“छोड वो सब…तेरी पढ़ाई कैसी चल रही है.”

“अच्छी चल रही है. लीजिए आ गया भाभी का कमरा. आप दोनो बात करो मैं मम्मी, पापा के पास बैठती हूँ.” आरजु कह कर चली गयी.

राहुल कमरे में दबे पाँव दाखिल हुवा. उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था. अवनी बेड के पास खड़ी थी नज़रे झुकाए. अंजाने में ही राहुल की निगाह अवनी के चेहरे पर पड़ी. वो देखता ही रह गया उसे. एक आकर्षक नयन नक्स पाया था अवनी ने. चेहरे पर प्यारी सी मासूमियत थी.

राहुल ने उसके कदमो की तरफ देखा और बोला, “कैसी हैं आप.”

“मैं ठीक हूँ. आप कैसे हैं.” अवनी भी राहुल के कदमो को ही देख रही थी.

“क्या खेल खेला ना किस्मत ने. कितनी जल्दी हम दोनो की शादी हो गयी थी. उस उमर में हमें शादी का मतलब भी नही पता था. बहुत रो रही थी आप, याद है मुझे. पता नही क्या

ज़रूरत थी इतनी जल्दी ये सब करने की." राहुल ने अपनी बात कहने के लिए भूमिका तैयार की.

"हां हमारे अपनो ने बचपन में ही हमें इस रिश्ते में बाँध दिया."

"आप ही बतायें बाल-विवाह कहा तक जायज़ है. गैर क़ानूनी है ये. फिर भी हम लोग नही मानते."

"बाल-विवाह बिल्कुल जायज़ नही है."

"तो आप मानती हैं कि हम लोगो के साथ ग़लत हुवा. देखिए अब हम बड़े हो चुके हैं. और हमें अपना जीवन साथी चुन-ने का हक़ होना चाहिए. मैं अब घुमा फिरा कर नही कहूँगा. मैं ये बाल-विवाह नही निभा सकता हूँ. आप भी इस बंधन से खुद को आज़ाद समझिए."

ये सुनते ही अवनी के पैरो के नीचे से जैसे ज़मीन निकल गयी. बहुत कुछ कहना चाहती थी वो मगर कुछ नही बोल पाई. होन्ट जैसे सिल गये थे उसके. राहुल का दिल भी बहुत ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था. वो फ़ौरन वहा से भाग जाना चाहता था.

"मुझसे कोई भूल हुई हो तो मुझे माफ़ कर दीजिएगा प्लीज़. चलता हूँ मैं." राहुल मूड कर जाने लगा

"सुनिए…" अवनी ने हिम्मत करके आवाज़ दी.

राहुल वापिस मुड़ा और बोला, "कहिए…मैं आपकी बात सुने बिना नही जाऊंगा यहा से."

"बेशक बाल-विवाह ग़लत है और रहेगा. उस वक्त मैने भी वो खेल एंजाय नही किया. मगर मेरी परवरिश कुछ इस तरह की गयी कि आपको एक देवता बना कर मेरे दिल में बैठा दिया गया. बचपन से यही सिखाया गया कि पति परमेश्वर होता है इसलिये राहुल तुम्हारा परमेश्वर है. मैं सब कुछ स्वीकार करती गयी खुले मन से. कब आपसे प्यार हो गया…पता ही नही चला. और इतना प्यार कर बैठी आपसे कि अपने पेरेंट्स से लड़ बैठी आपके लिए. वो नही चाहते थे कि मैं आपके लिए मुंबई आउ. मगर मैं अपनी ज़िद पर अडी रही और उन्हे मुझे भेजना पड़ा आपके पास. मुझे एक मौका तो दे दीजिए प्लीज़. बाल-विवाह तो

ग़लत है मगर मेरा प्यार ग़लत नही है. शादी चाहे जैसे भी हुई हो मगर मैं आपको तन,मन धन से अपना पति मानती हूँ."

"ये सब कह कर तो गुनहगार बना दिया आपने मुझे. काश ये धरती फट जाए और मैं इसमें समा जाऊ." राहुल सर पकड़ कर बैठ गया बिस्तर पर.

अवनी तुरंत कदमो में बैठ गयी राहुल के और बोली, "नही प्लीज़ ऐसा मत बोलिए. मैने कुछ ग़लत कहा तो उसके लिए माफी चाहती हूँ आपसे पर आप अपने लिए ये सब ना बोलिए."

"अवनी उठ जाओ प्लीज़. मेरे कदमो में बैठ कर और गुनहगार मत बनाओ मुझे. सारी ग़लती मेरी ही है. काश इस शादी को मैं भी आपकी तरह शादी स्वीकार कर लेता तो आज ये दिन नही देखना पड़ता.

बहुत सुंदर हो आप. उस से भी ज़्यादा सुंदर आपका व्यक्तित्व है. कोई भी इंसान आपके जैसे जीवन साथी को पाकर खुद को धन्य महसूस करेगा. मगर मैं आज ऐसी जगह खड़ा हूँ जहा मैं चाह कर भी आपको स्वीकार नही कर सकता."

"ऐसा क्यों है क्या बता सकते हैं मुझे.?" अवनी ने पूछा.

"जिस तरह आपने मुझे अपने दिल में बैठा रखा है उसी तरह मैने अपने दिल में आलिया को बैठा रखा है…और मैं उसके बिना जी नही सकता. वो मेरी जींदगी है. अब तुम ही बताओ मैं क्या करूँ. तुम्हार साथ बचपन में शादी हुई थी. आलिया के साथ प्यार ने शादी करवा दी मेरी. खून से माँग भरी है मैने उसकी. तुम मुझे अपना पति मानती हो. और मैं आलिया को पत्नी मानता हूँ. तुम ही बताओ अब क्या किया जाए."

तभी अचानक राहुल की चाची दाखिल हुई कमरे में. चाची को देख कर अवनी फ़ौरन राहुल के कदमो के पास से उठ कर खड़ी हो गयी.

"मैं बताती हूँ क्या करना है. चलो अभी वापिस गुजरात. मिलना चाहती हूँ मैं इस आलिया से. देखूं तो सही क्या बला है वो, जो कि किसी और का घर उजाड़ने पर तुली है."

"उसकी कोई ग़लती नही है चाची. सारी ग़लती मेरी है. और वो मेरे साथ ही आई है मुंबई. "

“तो लेकर आओ उसे. या फिर हम चलते हैं होटेल में.”

“उसका इस सब से कोई लेना देना नही है. उसकी कोई ग़लती नही है.”

“बेटा जिसे तुम पत्नी मानते हो और जिस से शादी करना चाहते हो क्या उसे हमसे नही मिलवाओगे.?”

अवनी एक तरफ खड़ी चुपचाप सब सुन रही थी.

“मैं भी चाहता हूँ कि आप सब मिलें उस से. और हमारे प्यार को स्वीकार करें.” राहुल ने कहा.

“तो जाओ बेटा उसे अभी इसी वक्त ले आओ. हम मिलना चाहते हैं उस से.” चाची ने कहा.

“हां भैया ले आओ उसे. देखें तो सही कौन है वो जो हमारी प्यारी भाभी की जगह लेना चाहती है.” आरजु ने कहा.

“बाद में मिल लेना शांति से अभी नही.” राहुल ने कहा.

“ले आईए उन्हे. मैं भी उनसे मिलना चाहती हूँ.” अवनी ने कहा.

राहुल ने अवनी की आँखो में देखा और बोला, “क्या आप सच में मिलना चाहती हैं उस से.”

“हां..जिस से आप इतना प्यार करते हैं, उस से मिलना सौभाग्य होगा मेरे लिए.” अवनी ने कहा.

“ठीक है मैं अभी उसे लेकर आता हूँ. आप सभी को मेरी आलिया से मिल कर खुशी होगी.” राहुल उठ कर चल दिया.

राहुल के जाने के बाद चाची ने अवनी को गले से लगा लिया और बोली, “बेटा तुम चिंता मत करो. आने दो इस करम जली को. अकल ठिकाने लगाऊंगी मैं उसकी. हमारे सीधे

साधे राहुल को फँसा लिया. सोचा होगा अच्छा पैसा है, फॅक्टरी है और क्या चाहिए. तू फिकर मत कर राहुल तेरा ही रहेगा. नाम से तो कोई अधर्मी लगती है. अधर्मी लड़की को तो अब बनाएँगे हम अपने घर की बहू.''

''पर चाची क्या फायदा इस सब का. वो उसे प्यार करते हैं मुझे नही''

''पागल मत बनो तुम पत्नी हो राहुल की और तुम्हे अपने हक़ के लिए लड़ना होगा. कयी बार अपना हक़ लड़ कर ही मिलता है.'' चाची ने कहा.

''हां भाभी मम्मी ठीक कह रही हैं. हमें पता है कि भैया सिर्फ़ आपके साथ खुश रहेंगे. ये लड़की ज़रूर कोई चालबाज़ है जो कि खाता पीता घर देख कर एक शादी शुदा लड़के के पीछे पड़ गयी और अपने प्रेम जाल में फँसा लिया. देखो बेशरमी की भी हद कर दी..भैया के साथ यहा चली आई. ज़रूर उसके परिवार वाले भी शामिल होंगे उसके साथ.'' आरजु ने कहा.

''मुझे कुछ समझ नही आ रहा…पता नही ऐसा मेरे साथ ही क्यों हो रहा है.''

''सब ठीक हो जाएगा बस हिम्मत मत हारना.'' चाची ने कहा.

आलिया बेसब्री से इंतेज़ार कर रही थी राहुल के लौटने का. बार बार यही दुवा कर रही थी कि सब ठीक ठाक रहे. जब रूम की बेल बजी तो तुरंत भाग कर दरवाजा खोला उसने.

''राहुल तुम आ गये…सब ठीक है ना.'' आलिया ने एक साँस में पूछा.

''हां लग तो सब ठीक ही रहा है. चलो तुम्हे लेने आया हूँ मैं. सब तुमसे मिलना चाहते हैं.'' राहुल ने कहा.

आलिया थोड़ा परेशान सा हो गयी ये सुन कर. ''मुझसे मिलना चाहते हैं…पर क्यों?''

''अरे मम्मी पापा के बाद अब चाचा, चाची ही मेरे सब कुछ हैं. उनसे तो मिलना ही पड़ेगा ना. हां थोड़ा गुस्से में हैं सभी. पर थोड़ा गुस्सा तो सहना ही पड़ेगा हमें. दिल के अच्छे हैं वैसे मेरे चाचा चाची. मुझे उम्मीद है कि वो हमारे प्यार को समझेंगे.'' राहुल ने कहा.

“राहुल वो तो ठीक है…पर मुझे डर सा लग रहा है.”

“अरे डरने की क्या बात है, मैं हूँ ना. मेरे होते हुवे काहे का डर.”

“ठीक है मैं थोड़ा बाल-वाल संवार लू. तुम ५ मिनिट इंतजार करो.” आलिया ने कहा.

५ मिनिट बाद आलिया राहुल के साथ उसकी चाची के घर की तरफ जा रही थी.

“तुमने क्या बताया मेरे बारे में उन्हे.” आलिया ने कहा.

“कुछ नही बस इतना ही के तुम्हे बहुत प्यार करता हूँ. ज़्यादा कुछ बताने का वक्त ही नही मिला. चाचा चाची गुस्से में हैं. हो सकता है कुछ उल्टा सीधा बोल दे. तुम शांत रहना. चुपचाप सब सुन लेना. ज़्यादा देर गुस्सा नही रहेंगे वो.” राहुल ने कहा.

“वैसे मुझे गुस्सा आ जाता है बहुत जल्दी अगर कोई मुझे कुछ कहे तो. पर तुम्हारे लिए और इस प्यार के लिए सब सह लूँगी.” आलिया ने कहा.

“द्याट’स लाइक माइ जरीना. देखो जान वक्त हमें बहुत बुरी तरह आजमा रहा हैं. लेकिन ये वक्त बेकार नही जाएगा. कहते हैं की शांत समुंदर में नाव चला कर कोई अच्छा नाविक नही बन सकता. अच्छा नाविक बन-ने के लिए अशांत समुंदर की ज़रूरत होती है. जोखिम रहता है मानता हूँ मगर जोखिम के बिना इंसान जीना नही सीख पाएगा. भगवान किस्मत वालो को ही आजमाते हैं."

“वो तो ठीक है…इतना भी ना आजमाया जाए हमें कि टूट कर बिखर जायें हम.”

बाते करते-करते जल्दी ही पहुँच गये दोनो घर. चाची ने ही दरवाजा खोला इस बार भी.

“ह्म्म…तो तुम हो जरीना. सुंदर हो. बल्कि बहुत सुंदर हो. लगता है अपने चेहरे को ही हथियार बनाया है तुमने हमारे राहुल को जाल में फँसाने के लिए.” चाची ने कटाक्ष किया.

आलिया ने राहुल की तरफ देखा. राहुल ने आलिया को पाँव छूने का इशारा किया.

आलिया पाँव छूने के लिए झुकी ही थी कि चाची दो कदम पीछे हट गयी और बोली, “बस-बस नाटक मत करो … आओ अंदर.”

आलिया अंदर आ गयी चुपचाप राहुल के साथ. राहुल के चाचा सोफे पर बैठे थे.

“आलिया ये हैं मेरे चाचा जी” राहुल ने चाचा की तरफ हाथ से इशारा करके कहा.

आलिया उनके पाँव छूने के लिए उनकी तरफ बढ़ी पर उन्होने उसे हाथ का इशारा करके पीछे ही रोक दिया, “इसकी कोई ज़रूरत नही है.”

“चाचा जी ऐसा क्यों कह रहे हैं?” राहुल ने मायूसी भरे भाव में कहा.

“राहुल तुम अपने चाचा जी के पास बैठो हमे आलिया से अकेले में कुछ बात करनी है.” चाची ने कहा.

“चाची जी जो बात करनी है मेरे सामने कीजिए. ये कही नही जाएगी. मैं यहा आलिया को आप लोगो से मिलवाने लाया हूँ पर ये देख कर दुख हो रहा है कि आप लोग अपमान कर रहे हैं मेरे प्यार का. मेरे सामने ही इतना कुछ हो रहा है तो अकेले में तो सितम ढा देंगे आप लोग. चलो आलिया वापिस चलते हैं. किसी से कोई बात करने की ज़रूरत नही है.” राहुल ने कहा.

“भैया हमें बात तो करने दीजिए. हम कोई राक्षस नही हैं जो कि खा जाएँगे इन्हे. यू गुस्सा होने से बात नही बनेगी. किसी समस्या का हाल बात चीत से ही निकलता है.” आरजु ने कहा.

“तो बात चीत मेरे सामने कीजिए ना. अकेले में क्या कोई सीक्रेट बात करनी है.” राहुल ने कहा.

“भैया हम सब आपका भला चाहते हैं. प्लीज़ हमें बात करने दीजिए इनसे. और इनका और अवनी का मिलना ज़रूरी है. ये दोनो मिल कर इस बात का हल निकाले तो ज़्यादा अच्छा रहेगा.” आरजु ने कहा.

“हां राहुल आओ तुम यहा बैठो मेरे पास. ये लोग इस से कुछ बात करना चाहते हैं तो तुम्हे क्या दिक्कत है. ऐसे बच्चो की तरह बिहेव नही किया करते.” रघुनाथ ने कहा.

“ठीक है कर लो बात चीत. मगर मेरे प्यार का अपमान मत करना. मेरी जींदगी है ये और अगर इसकी आँखो में आँसू आए तो मेरा दम निकल जाएगा.” राहुल ने कहा.

आलिया के चेहरे पर अजीब कसम्कश थी. राहुल उसकी ओर देख कर उसकी हालत समझ गया और उसके चेहरे पर हाथ रख कर बोला, “सुन लो क्या कहते हैं ये लोग. हम हर हाल में एक हैं और एक रहेंगे.किसी बात की चिंता मत करना.”

जरीना, आरजु और चाची के साथ उस कमरे में आ गयी जिस मे अवनी थी. अवनी बिस्तर पर टांगे सिकोड कर घुटनो पर सर रख कर बैठी थी जब वो लोग अंदर आए.

“ये है अवनी, मेरी प्यारी भाभी. भाभी ये है जरीना.” आरजु ने दोनो को इंट्रोड्यूस करवाया.

आलिया और अवनी ने एक दूसरे को देखा मगर कुछ बोले नही. आरजु ने एक कुर्सी दे दी आलिया को बैठने के लिए.

“थँक यू.” आलिया ने कुर्सी पर बैठते हुवे कहा. आरजु भी आलिया के साथ ही एक दूसरी कुर्सी खींच कर बैठ गयी. चाची बिस्तर पर टाँग लटका कर बैठ गयी.

“क्या तुम अधर्मी हो?” चाची ने पूछा.

“जी हां” आलिया ने जवाब दिया.

“एक तो खून ख़राबा मचा रखा है तुम लोगो ने देश में. कभी भी कही भी बॉम्ब लगा देते हो. अब हमारे रिश्तो में भी दरार डालने लग गये तुम लोग. चाहती क्या हो तुम.” चाची ने कटाक्ष किया.

आलिया को बहुत गुस्सा आया ये सुन कर. चेहरा गुस्से से लाल हो गया उसका. गुस्सा स्वाभाविक भी था क्योंकि उसके अस्तित्व पर चोट की गयी थी. मगर वो चुप रही. कुछ

नही कहा. वादा जो किया था राहुल से सब कुछ शांति से सुन ने का. प्यार में क्या कुछ नही सहना पड़ता.

“कब से जानती हो उनको” अवनी ने पूछा.

“ कॉलेज में थे साथ और हम दोनो के घर भी साथ साथ थे.” आलिया ने कहा.

“तो क्या तुम्हे नही पता था कि वो शादी शुदा हैं.” अवनी ने पूछा.

“ये पता होता तो मैं आज यहा नही बैठी होती और ना ही आपको ये सवाल करने की ज़रूरत पड़ती.” आलिया ने अवनी की आँखो में देखते हुवे कहा.

“झूठ कह रही हो तुम. भैया की पड़ोसी हो कर तुम उनकी शादी के बारे में नही जानती ऐसा कैसे हो सकता है” आरजु ने कहा.

“हमारे परिवारों में बनती नही थी. कभी एक दूसरे के बारे में जान-ने का मौका ही नही मिला.” आलिया ने कहा.

“फिर ये प्यार का नाटक कैसे हो गया तुम दोनो के बीच. जब ऐसा था तो” चाची ने कहा.

“प्यार की शायद कोई वजह नही होती और जहा वजह ढुंडी जाती है वहा प्यार नही होता.” आलिया ने जवाब दिया.

“वजह तो बहुत बढ़िया है तुम्हारे पास प्यार की. राहुल के पेरेंट्स तो मारे गये ट्रेन हादसे में. अब उसका घर और कारोबार सब कुछ तुम्हारे हाथ में आ सकता है. इन बातों के लिए इस बात को आसानी से इग्नोर किया जा सकता है की राहुल पहले से शादी शुदा है.” चाची ने कहा.

“क्या हम यहा इस समस्या का हल करने के लिए बैठे हैं या फिर ‘मूड स्लिंगिंग’ के लिए.” आलिया ने कहा.

“तुम्हारे हिसाब से क्या हल है इस समस्या का” अवनी ने पूछा.

“मुझे नही पता…बस इतना जानती हूँ कि राहुल मेरी जींदगी है.”

“तुम्हे शरम नही आती मेरे सामने ऐसी बाते करते हुवे. मेरे पति को अपनी जींदगी बताती हो. क्या ऐसी बाते करके हल धुंडोगी तुम इस समस्या का.” अवनी भड़क गयी.

“हल तुम बता दो अवनी… मुझे सच में कुछ नही पता.” आलिया ने कहा.

“हल सिर्फ़ एक ही है. मेरे पति का पीछा छोड दो. तुम्हे पहले नही पता था उनकी शादी के बारे में मान लेती हूँ मैं. मगर अब तो पता है ना. सब कुछ जान ने के बाद भी तुम क्यों हमारे बीच आना चाहती हो.” अवनी ने कहा.

“क्योंकि जीना नही छोड सकती मैं. राहुल मेरी जींदगी है.” आलिया ने जवाब दिया.

“बेशर्मी की हद है ये तो. क्या यही संसकार दिए हैं तुम्हारे पेरेंट्स ने तुम्हे. और कैसे पेरेंट्स हैं तुम्हारे जिन्होने तुम्हे भैया के साथ अकेले मुंबई भेज दिया. वो सब भी लगता है इस खेल में शामिल हैं.” आरजु ने कहा.

आलिया ने आरजु की तरफ देखा. कुछ कहना चाहती थी मगर इतना भावुक हो गयी थी अपने अम्मी अब्बा की बात पर कि आँखे टपक गयी उसकी, “अब क्या कहूँ तुम्हे.” आलिया बस इतना ही बोल पाई.

“सच कड़वा होता है ना जरीना…वरना तुम रोने की बजाए आरजु की बात का जवाब देती.” अवनी ने कहा.

“हां बताओ कैसे भेज दिया तुम्हारे घर वालो ने तुम्हे राहुल के साथ अकेले. ये तो वही लोग कर सकते हैं जिनकी कोई इज़्ज़त नही होती. दफ़ा हो जाओ हमारे राहुल की जींदगी से वरना वो हाल करेंगे तुम्हारा की याद रखोगी जींदगी भर. हमारे होते हुवे अवनी का हक़ कोई नही छीन सकता.”

“बस!.. बंद करो तुम सब ये बकवास.” आलिया ज़ोर से चिल्लाई. आलिया की आवाज़ बाहर रघुनाथ और राहुल को भी सुनाई दी.

“क्या जानते हो तुम लोग मेरे बारे में. पंचायत लगा कर बैठ गये हो सिर्फ़ मुझे नीचा दिखाने के लिए. मेरे पेरेंट्स और मेरी बहन दंगो में मारे गये थे. अकेली हो गयी थी मैं…बिखर चुकी थी. राहुल ने संभाला मुझे और जीने की उम्मीद दी. कब प्यार हो गया मुझे राहुल से पता ही नही चला. मगर छोडो अब ये सब. रखो अपने राहुल को अपने पास. मुझे नही चाहिए कुछ भी. आप सब खुश रहें.” आलिया उठ कर चल दी वहा से. मगर राहुल को दरवाजे पर खड़ा देख कर रुक गयी और रोने लगी.

“तो आप लोगो ने रुला ही दिया मेरी…..” राहुल अपना सेंटेन्स पूरा नही कर पाया क्योंकि आलिया ने थप्पड़ जड़ दिया था उसके गाल पर. थप्पड़ इतनी ज़ोर का था कि सभी को उसकी गूँज सुनाई दी.

“क्यों नही बताया मुझे कि तुम शादी शुदा हो. बता देते एक बार तो कभी ये प्यार ना करती मैं.” आलिया ने बहुत भावुक अंदाज में कहा.

राहुल नज़रे झुकाए खड़ा रहा. कुछ भी नही कह पाया आलिया को.

“संभालो अपनी बीवी को राहुल. मेरे पीछे मत आना आज के बाद. अगर आए तुम तो मेरा मरा मूह देखोगे. नही चाहिए मुझे तुम्हारा प्यार.” आलिया निकल गयी कमरे से बाहर.

राहुल इतना शॉक्ड था कि समझ नही पाया कि क्या करे. वही मूर्ति की तरह खड़ा रहा. राहुल की तरह अवनी, आरजु और चाची भी शॉक्ड थे.

राहुल चलने ही लगा था आलिया के पीछे की चाची ने उसका हाथ थाम लिया. “जो हुवा अच्छा हुवा राहुल. यही हल था इस दुविधा का. जाने दो उसे.”

“मैं मर जाऊंगा चाची जी. जी नही पाऊंगा उसके बिना. प्लीज़ छोड़िए मुझे.” राहुल ने कहा.

“ऐसा क्या जादू कर दिया है उसने तुम पर की तुम ये सब बोल रहे हो.”

“चाची जी मैं बाद में बात करूँगा आकर. पहले उसे रोक लूँ. अगर वो कही खो गयी तो मैं कही का नही रहूँगा.” राहुल ने कहा और बाहर की तरफ भागा.

राहुल भाग कर घर से बाहर आया मगर उसे आलिया कही दीखाई नही दी. राहुल सीधा होटेल पहुँचा. मगर आलिया वहा भी नही थी.

"कहा चली गयी तुम जरीना…क्या फिर से हम जुदा हो गये. क्या पहली बार की लड़ाई से हमने कुछ नही सीखा. तुम ऐसे छोड कर नही जा सकती मुझे." राहुल ने कहा.

होटेल से निकल कर राहुल ने आलिया को हर तरफ देखा. कोलाबा का चप्पा चप्पा छान मारा मगर वो उसे कही नही मिली. थक हार कर वो वापिस चाचा के घर आ गया ये सोच कर कि क्या पता वो वापिस आ गयी हो गुस्सा थूक कर. ऐसा सोचना था तो अजीब मगर प्यार हर उम्मीद का दामन थाम लेता है.

जब राहुल घर आया तो अवनी वहा से जाने की तैयारी कर रही थी. राहुल को देख कर तुरंत आई उसके पास, "कहा है जरीना, वो ठीक तो है ना."

"कुछ कह नही सकता. मुझे वो कही नही मिली. कोलाबा का चप्पा चप्पा छान मारा मगर उसका कही पता नही चला. होटेल भी नही पहुँची वो."

"हे भगवान सब मेरी वजह से हुवा है. मैने भी बहुत कुछ बोल दिया उसे. आप दोनो के प्यार की पूरी कहानी नही जानती मगर इतना ज़रूर समझ गयी हूँ कि आप दोनो का प्यार इतना अनमोल है कि उसमे किसी छेड़ छाड़ की गुंजाईश नही है. मैं पापी बन गयी हूँ आप दोनो के प्यार में तूफान खड़ा करने के कारण. आप दोनो मुझे माफ़ कर दीजिएगा. मैं जा रही हूँ वापिस. अब इस बाल-विवाह नामक कृति से मैं भी आज़ाद होना चाहती हूँ. कोई शिकवा नही है आप दोनो से. बल्कि खुशी है कि इतना अनमोल प्यार देखने को मिला मुझे. आपको आलिया मिले तो मेरी तरफ से माफी माँग लेना उस से.मैने बहुत दिल दुखाया है उसका."

"कैसे जा रही हो दिल्ली…टिकट बुक करवा रखी है क्या?" राहुल ने कहा.

"नही टिकट तो मिल ही जाएगी एयर पोर्ट से. दिल्ली मुंबई की ढेर सारी फ्लाइट्स होती हैं."

“हां वो तो है. आपको छोडने चलता मगर आलिया के लिए परेशान हूँ. मुझे माफ़ कर दीजिएगा आप.मुझे यकीन है की बहुत अच्छा लाइफ पार्ट्नर मिलेगा आपको.”

“आप से अच्छा नही मिल सकता जानती हूँ. पर आपकी अभिलाषा नही करूँगी अब क्योंकि वैसा करना पाप होगा. आप आलिया के हैं और आलिया आप की है. दुख बहुत है आपको खोने का मगर आप दोनो का प्यार देख कर ये दुख खुशी में बदलता जा रहा है.

मुझे यकीन है कि आलिया जल्द मिल जाएगी आपको.”

“हां वो गुस्से में बैठी होगी कही छुप कर. मैं उसे ढूंड ही लूँगा. वापिस होटेल जा कर देखता हूँ, हो सकता है वो आ गयी हो.”

राहुल होटेल पहुँचा तो उसकी खुशी का ठीकाना नही रहा. रीसेपशन से उसे पता चल गया की आलिया कमरे में है.

राहुल खुश था कि आलिया कमरे में है. तुरंत भाग कर आया वो कमरे पर. मगर आलिया का थप्पड़ और उसकी कही बातें बार-बार उसके कानो में गूँज रही थी. राहुल ने रूम की बेल बजाई. आलिया उस वक्त बिस्तर पर पड़ी थी पेट के बल. आँखो से आँसुओं की नदिया बह रही थी. बेल को अनसुना कर दिया आलिया ने और ज्यों की त्यों पड़ी रही बिस्तर पर. राहुल बार-बार बेल बजाता रहा मगर आलिया ने दरवाजा नही खोला.

“आलिया दरवाजा खोलो…मैं बहुत परेशान हूँ. मुझे और परेशान मत करो. प्लीज़ दरवाजा खोलो…मेरा दिल बैठा जा रहा है…तुम ठीक तो हो ना…मुझे चिंता हो रही है तुम्हारी.” राहुल ने कहा.

आलिया धीरे से उठी बिस्तर से और लड़खड़ाते कदमो से दरवाजे की तरफ बढ़ी और दरवाजा खोला.

“क्यों आए हो यहा…अपनी बीवी के पास नही रह सकते क्या…कहा था ना मैने की मेरे पीछे आए तो मेरा मरा मूह देखोगे.?”

“आलिया प्लीज़…ऐसी बाते मत करो. तुम्हारे बिना नही जी सकता ये तुम अच्छे से जानती हो.”

“पर अब तुम्हे जीना होगा. तुम कहते हो कि तुम वो शादी नही निभा सकते और मैं कहती हूँ कि मैं ये प्यार नही निभा सकती. प्लीज़ चले जाओ यहा से. नही चाहिए तुम्हारा प्यार मुझे.”

“ये क्या पागल पन है जरीना…और…और ये हाथ में खून कैसा है.” राहुल की नज़र आलिया के दायें हाथ से टपकते खून पर गयी.

“सज़ा दी है खुद को तुम्हे थप्पड़ मारने की.” आलिया ने सुबक्ते हुवे कहा.

“तुम कौन होती हो खुद को यू सज़ा देने वाली. दीखाओ मुझे…ऊफफ्फ कितना खून बह रहा है.” राहुल ने आलिया का हाथ पकड़ने की कोशिश की.

“खबरदार जो मुझे छुवा तो…कोई हक़ नही है तुम्हारा मेरे उपर अब.”

“अगर कोई हक़ नही है तो फिर क्यों सज़ा दी तुमने खुद को. पागल मत बनो दीखाओ मुझे…कितना खून बह रहा है.”

“आइ कॅन टेक केर ऑफ माइसेल्फ मिस्टर राहुल. तुम अपनी बीवी को सम्भालो जाकर और अपने परिवार में खुश रहो.”

“ये क्या बकवास कर रही हो. अब मैं थप्पड़ मारूँगा तुम्हे अगर यू ही बकवास करती रही तो.”

“तो मारो ना रोका किसने है. मुझे जान से मार डालो. तुमने ही बचाया था मुझे एक दिन मरने से, तुम्हे हक़ है मुझे मारने का.”

“क्या सिर्फ़ इसलिये हक़ है क्योंकि तुम्हे मैने बचाया था. क्या प्यार का हक़ नही है.”

“वो प्यार अब बिखर चुका है राहुल. वो हक़ नही दूँगी तुम्हे मैं.”

“ग्रेट…तुम सच में पागल हो गयी हो. अरे अब सब कुछ ठीक हो चुका है. अवनी समझ गयी है हमारे प्यार को. वो हमारे बीच से हट गयी है.”

“मुझे ये मंजूर नही है राहुल.”

“क्यों मंजूर नही है तुम्हे क्या जान सकता हूँ.”

“तुमने मुझसे इतनी बड़ी बात छुपाई और अब पूछ रहे हो कि क्यों मंजूर नही है. क्या ग़लती है अवनी की?.... और क्या ग़लती है मेरी? … सब तुम्हारी ग़लती है. मुझसे इतनी बड़ी बात ना छिपाते तो ये दिन नही देखना पड़ता. मेरे चरित्र को छलनी छलनी कर दिया गया आज. कभी मुझे मेरे मज़हब के कारण जलील किया गया तो कभी मुझे लालची लड़की की संगया दी गयी जो की तुम्हारी दौलत के पीछे पड़ी है. चलो ये सब भी सह लिया. मगर मेरे अम्मी, अब्बा का क्या कसूर था. बिना सोचे समझे उन्हे भी भला बुरा कहा गया. बहुत गहरी चोट लगी है दिल पे मेरे आज…जिनके घाव कभी नही भर पाएँगे. काश उन दंगो में अपने अम्मी, अब्बा और फातिमा के साथ मैं भी मर जाती तो ये दिन तो नही देखना पड़ता.”

“जरीना!” राहुल चिल्लाया और थप्पड़ जड़ दिया आलिया के गाल पर.

“तुम नही जानते राहुल क्या बीती है मेरे दिल पर आज. तुम मेरी जगह होते तो समझते. अवनी का हक़ पहले है तुम पर. वो पहले आई थी तुम्हारी जींदगी में.”

“क्या नही समझा तुम्हारे बारे में जान जो ये सब बोल रही हो. तुम्हारे दिल में उठी हर हलचल मेरे दिलो दिमाग़ में तूफान मचा देती है. तुम ना भी कहो तब भी समझ सकता हूँ तुम्हारे दर्द को…क्योंकि हम जुड़ चुके हैं एक दूसरे से. जो चोट तुम्हारे दिल पर लगी है आज वही चोट मेरे दिल पर भी लगी है. खुद को मुझसे जुदा करके मत देखो. हम दो जिस्म एक जान है जरीना. तुम मुझसे दूर गयी तो मर जाऊंगा. मान लो की अवनी को अपना भी लूँ तो भी कभी उसे खुश नही रख पाऊंगा. घुट-घुट कर जीएगी वो मेरे साथ. क्योंकि मेरी आत्मा तुम हो जान. मेरे दिल के मंदिर में तुम्हे भगवान बना कर बैठा चुका हूँ. उस मंदिर में किसी और की तस्वीर नही लगा पाऊंगा. अवनी और मेरा रिश्ता इस समाज ने बनाया था पर तुम्हारा और मेरा रिश्ता भगवान ने बनाया है. भगवान के फ़ैसले का ही आदर करना होगा हमें. और अवनी अब समझ गयी है. उस से मेरी बात हो गयी है. अब कोई रुकावट नही है हमारी शादी में.”

“उसकी आँखो में बेईंतेहा प्यार देखा है मैने तुम्हारे लिए. अभी हम किसी बंधन में नही बँधे हैं. तुम आराम से उसके साथ अपनी जींदगी की शुरूवात कर सकते हो.” आलिया ने कहा.

“मेरी आँखो में देख कर कहना ज़रा ये बात.” राहुल ने कहा.

“राहुल तुम कुछ भी कहो…पर मैं ये प्यार नही निभा सकती. किसी के पति को छीन-ने का इल्ज़ाम नही लेना चाहती अपने सर पर. ना ही ये इल्ज़ाम लेना चाहतीं हू की किसी लालच के कारण पड़ी हूँ मैं पीछे तुम्हारे.”

“बंद करो ये बकवास तुम.”

“ये बकवास नही है. अपने दिल पर पत्थर रख कर बोल रही हूँ.”

“मुझे खुद से दूर करने की बजाए एक खंजर गाढ दो मेरे सीने में तो ज़्यादा अच्छा होगा. अरे मैं कैसे निभा लूँ शादी अवनी से जबकि मेरे मन मंदिर में तुम हो. तुम मेरी जींदगी हो जान. नही जी सकता हूँ तुम्हारे बिना. मर जाऊंगा तुमसे अलग हो कर तो पता चलेगा तुम्हे की क्या हो तुम मेरे लिए.”

आलिया कदमो में बैठ गयी राहुल के और रोने लगी, “मैं भी कहा जी सकती हूँ तुम्हारे बिना. सोच कर भी डर लगता है.पता नही ये उलझन क्यों आ गयी हमारे जीवन. बड़ी मुश्किल से तो एक साल बाद मिले थे. अभी शांति से प्यार के मीठे दो बोल भी नही बोल पाए थे एक दूसरे को की ये सब हो गया. ऐसा क्यों हो रहा है हमारे साथ राहुल.”

“उठो पहले तुम. मेरे कदमो में अच्छी नही लगती तुम.” राहुल ने आलिया को कंधे से उठाते हुवे कहा.

“क्या हम अवनी के गुनहगार नही बन जाएँगे. उस से मिली नही थी तो कुछ फरक नही पड़ता था. उस से मिली तो उसकी आँखो में तुम्हारे लिए प्यार देखा. खुद को एक लुटेरा महसूस कर रही हूँ. जिसने अचानक तुम्हारी जींदगी में आकर तुमको अवनी से छीन लिया. मैं मर जाना चाहती थी आज. पर पता नही क्यों रुक गयी. क्योंकि मेरी जींदगी पर तुम्हारा हक़ है इसलिये शायद खुद को मार नही पाई.”

“जान अगर मैं भी अवनी को चाहता तो तुम्हारा सोचना सही होता. मैने कभी इतने सालो में अवनी को सोचा तक नही…चाहने की तो दूर की बात है. अब वो मुझसे प्यार कर बैठी तो इसमे मेरा तो कोई कसूर नही है. मैं तो उस से मिला तक नही. और एक बात बता दूं. मम्मी, पापा की मौत के बाद मैं भी बिखर चुका था. तुम मिली मुझे तो जीने का हौसला सा हुवा. हम दोनो की हालत एक जैसी थी जब हम मिले थे. हम मिले और दो कदम साथ चल कर हमें एक दूसरे से प्यार हो गया. जान हम किसी कीमत पर जुदा नही हो सकते. ये तुम भी जानती हो और मैं भी जानता हूँ.”

आलिया राहुल के सामने थी और राहुल की आँखो में देख रही थी. दोनो खो गये थे एक दूसरे में. कब आँसू टपक गये दोनो के एक साथ उन्हे पता ही नही चला.

“बोलो आलिया क्या जी पाओगी मेरे बिना?”

“ऐसा सोच भी नही सकती राहुल….मत पूछो ऐसी बात.” आलिया सुबक्ते हुवे बोली.

“फिर क्यों भाग आई थी मुझे छोड कर वहा से तुम.”

“मरने के लिए निकली थी वहा से…जीने के लिए नही.”

राहुल ने आगे बढ़ कर बाहों में जाकड़ लिया आलिया को, “ओह जान कभी छोड कर मत जाना मुझे चाहे कुछ हो जाए. नही जी सकता हूँ तुम्हारे बिना ये बात समझ लो अच्छे से आज.”

“मैं भी कहा जी सकती हूँ तुम्हारे बिना. क्या हाल हुवा मेरा तुम्हे थप्पड़ मार कर सिर्फ़ मैं ही जानती हूँ. मुझे माफ़ कर दो प्लीज़.”

“माफी ऐसे नही मिलेगी”

“क्या करना होगा मुझे?”

राहुल ने आलिया के चेहरे को अपने दोनो हाथो में थाम लिया. आलिया सिहर उठी. वो समझ गयी थी कि राहुल क्या करना चाहता है. उसने अपनी आँखे बंद कर ली. उसके होन्ट

खुद-ब-खुद थिरकने लगे.

राहुल आलिया के थिरकते होंटो को देख कर मुस्कुरा उठा, “क्या चूम लूँ इन थिरकते लबों को.”

“मुझसे मत पूछो…कुछ भी नही कह पाउंगी.” आलिया आँखे बंद किए हुवे ही बोली.

राहुल ने बिना वक्त गवायें अपने होन्ट आलिया के थिरकते लबों पर टीका दिए. आलिया सर से लेकर पाँव तक सिहर उठी… ऐसा लग रहा था जैसे की राहुल ने सितार के तार छेड़ दिए हों.

दोनो के होन्ट दहक्ते अंगारों की तरह एक दूसरे से टकरा रहे थे. दोनो के प्यार का पहला चुंबन उनके प्यार की ही तरह अद्बित्य और सुंदर था. वक्त जैसे थम सा गया था. बहुत देर तक दीवानो की तरफ चूमते रहे दोनो.

दोनो को ऐसा चुंबन करने का पूरा अधिकार था. प्यार जो करते थे बेईंतेहा एक दूसरे को. होंटो की भाषा भी बहुत प्यारी होती है. इसे भी होन्ट ही बोलते हैं और होन्ट ही सुनते हैं. चुंबन के उन पलों में दोनो के होन्ट बहुत कुछ कह रहे थे एक दूसरे को. लबों की हर हरकत कुछ कहती थी जिसे दोनो अपनी आत्मा की गहराई तक महसूस कर रहे थे.

वैसे तो कुछ भी और कहना मुश्किल हो रहा है दोनो के इस पहले चुंबन के बारे में. मगर इतना ज़रूर कह सकता हूँ की प्यार ही प्यार था दोनो के बीच चुंबन के उन पलों में जो की दोनो के प्यार को एक और गहराई दे रहा था. ये बात किस करते वक्त दोनो ही बखूबी समझ रहे थे.

चुंबन में लीन आलिया और राहुल दीन दुनिया सब कुछ भूल गये थे. वक्त का अहसास भी खो गया था. वो चुंबन किसी मेडिटेशन से कम नही था. जिस तरह मेडिटेशन में लीन हो कर हम अपने अंदर बहुत गहराई में उतर जाते हैं ठीक उसी तरह आलिया और राहुल अपने अंदर भी उतर गये थे और एक दूसरे की आत्मा को भी छू रहे थे. ये एक अद्बिद्य घटना थी. वैसे ये प्यार करने वालो के साथ रोज होती है.

जब दोनो की साँसे उखाड़ने लगी तो एक दूसरे से अलग हुवे. दोनो की आँखे नम थी और साँसे बहुत तेज चल रही थी. एक दूसरे की बाहों में बने हुवे थे दोनो और बड़े प्यार से एक दूसरे को देख रहे थे. साँसे एक दूसरे से टकरा रही थी.

"आलिया चाहे कुछ हो जाए…मुझसे जुदा होने की बात सोचना भी मत. तुम जानती हो ना…मर जाऊंगा तुम्हारे बिना मैं."

"ओह राहुल प्लीज़ ऐसा मत कहो….."

दोनो ने एक दूसरे की आँखो में देखा. आँखो ही आँखो में जाने क्या बात हुई. दोनो की आँखे नम हो गयी देखते-देखते और अचानक दोनो के होन्ट फिर से खुद-ब-खुद एक दूसरे से जुड़ गये.

किसी ने सच ही कहा है, भावनाओ में बह कर दो प्रेमियों में जो प्यार होता है वो होश में रहकर कभी नही हो सकता. प्यार की गहराई में उतरने के लिए दीवानेपन की बहुत ज़रूरत होती है.

अचानक राहुल को कुछ ध्यान आया और उसने आलिया के होंटो से अपने होन्ट हटा लिए. "हाथ पर क्या किया तुमने?"

"चाकू से चीर दिया था."

"पागल हो गयी थी क्या तुम… रूको मैं अभी आता हूँ."

"राहुल कही मत जाओ प्लीज़…हो जाएगा ठीक अपने आप."

राहुल ने आलिया की बात को अनसुना कर दिया और कमरे से बाहर आ गया. कुछ देर बाद वो वापिस आ गया. वो केमिस्ट से मरहम-पट्टी ले आया था.

"लाओ हाथ आगे करो."

“नही डेटॉल मत लगाना बहुत जलन होती है इस से….प्लीज़” आलिया छोटे बच्चे की तरह गिड़गिडाई.

“हाथ चीरते वक्त सोचना चाहिए था ये…ये लगाना ज़रूरी है. लाओ हाथ आगे करो.”

“नही प्लीज़…” आलिया गिड़गिडाई.

राहुल ने हाथ पकड़ा ज़बरदस्ती और घाव को डेटॉल से सॉफ किया.

“आअहह….धीरे से बहुत जलन हो रही है.”

“दुबारा ऐसा मत करना कभी…समझी”

“समझ गयी.” आलिया ने मासूमियत से कहा.

डेटॉल से घाव साफ करने के बाद राहुल ने लोशन लगा कर पट्टी बाँध दी हाथ पर. “सब ठीक हो जाएगा.”

“राहुल मैं अवनी से मिलना चाहती हूँ.”

“छोडो अब जरीना…क्या अपनी और ज़्यादा बेज़्जती करवाना चाहती हो.”

“अवनी ने मुझे कुछ नही कहा ऐसा राहुल. मुझे उस से मिलकर सॉरी तो बोलना चाहिए ना. प्लीज़ कुछ करो…मैं उस से मिलना चाहती हूँ.”

“वो तो दिल्ली के लिए निकल रही थी. शायद एयर पोर्ट पहुँच भी गयी हो.”

“तो हम एयर पोर्ट ही चलते हैं. वही मिल लेंगे.”

“ठीक है फिर चलो जल्दी…वैसे तुम्हारा सॉरी बोलना नही बनता है क्योंकि सारी ग़लती मेरी है. फिर भी तुम कहती हो तो चलो.”

दोनो तुरंत होटेल से बाहर आए और एयर पोर्ट के लिए टॅक्सी लेकर चल दिए. जैसे ही वो दोनो एयर पोर्ट पहुँचे अवनी अपनी टॅक्सी से उतर रही थी. राहुल की नज़र उस पर पड़ गयी.

"वो रही अवनी. अच्छा हुवा की यही बाहर ही मिल गयी..आओ जल्दी" राहुल ने आलिया से कहा.

वो दोनो तुरंत टॅक्सी से निकल कर अवनी की तरफ बढ़े.

"अवनी!" राहुल ने आवाज़ दी.

अवनी चोंक कर रुक गयी और पीछे मूड कर देखा. आलिया और राहुल उसकी तरफ बढ़े आ रहे थे.

"अवनी…क्या थोड़ी देर रुक सकती हो, आलिया तुमसे कुछ बात करना चाहती है." राहुल ने कहा

अवनी ने आलिया की तरफ देखा. दोनो ने आँखो ही आँखो में कुछ कहा. आलिया की आँखो में रिक्वेस्ट थी और अवनी की आँखों में उस रिक्वेस्ट के लिए मंज़ूरी.

"हां शुवर…" अवनी ने कहा.

आलिया ने राहुल को वहा से दूर जाने का इशारा किया. राहुल बात समझ कर वहा से हट गया.

आलिया अवनी के करीब आई और बोली, "मुझे माफ़ कर दो अवनी. तुम्हारा हक़ अंजाने में छीन लिया मैने. अगर कोई सज़ा देना चाहो तो दे दो मुझे. खुशी-खुशी सह लूँगी. अपने प्यार की कसम खा कर कहती हूँ कि मरने के लिए निकली थी वहा से. पर पता नही क्यों मर नही पाई. ये जींदगी राहुल ने दी है मुझे. उसे ही हक़ है इसे लेने का. हां पर एक हक़ तुम्हे भी है. मुझे जो सज़ा देना चाहे दे दो. पर प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो.

मुझे सच में नही पता था कि राहुल पहले से शादी शुदा है वरना मैं हरगिज़ दिल नही लगाती राहुल से. और अवनी मैं किसी लालच के कारण राहुल के साथ नही हूँ. बस एक ही लालच है, वो है अपनी जींदगी का. जी नही सकती राहुल के बिना. इसलिए आज मरने जा रही थी. अब तुम बताओ मेरी क्या सज़ा है"

अवनी ने आलिया के चेहरे पर हाथ रखा और बोली, "तुम्हे आज इतना कुछ सुन-ना पड़ा वहा उस कमरे में. वो सज़ा क्या कम थी जो और माँग रही हो. तुम जब राहुल को थप्पड़ मार कर वहा से गयी तो मुझे रीयलाइज़ हुवा की हम लोग क्या पाप कर रहे थे. कितना गिर गये थे हम सब. मुझे खुद ना जाने क्या हो गया था. शायद चाची जी और आरजु की बातों का असर था मुझ पर. माफी तो मुझे माँगनी चाहिए तुमसे. मेरे कारण तुम्हे इतना अपमान सहना पड़ा. क्या कुछ नही सुना तुमने आज.

"अवनी तुम्हे मेरे दुख का अहसास हुवा और मुझे क्या चाहिए. मगर इस से मेरा गुनाह कम नही हो जाता. अंजाने में ही सही पर गुनाह तो हुवा है मुझसे. पता नही मैं कैसे माफ़ करूँगी खुद को." आलिया ने कहा.

"प्यार करती हो ना राहुल से…तो खुद को गुनहगार मत मानो तुम. प्यार खुदा की देन है और ये किसी भी हालत में गुनाह नही हो सकता. तुम अपने दिल से ये बात निकाल दो कि मेरा कुछ छीन लिया तुमने. हां पहले-पहले मुझे भी यही लग रहा था. मगर आज जब तुम दोनो का प्यार देखा तो समझ में आया कि असल में प्यार क्या है. मैं तो राहुल से एक तरफ़ा प्यार करती हूँ. राहुल की आँखो में मैने अपने लिए कुछ नही देखा. बल्कि मेरे लिए उतनी परेशानी भी नही देखी जितनी तुम्हारी आँखो में है. ऐसे में मैं उनके गले में पड़ जाऊ ७ साल पहले हुई शादी का वास्ता दे कर तो बिल्कुल ग़लत होगा. ज़बरदस्ती रिश्ते निभाए जा सकते हैं आलिया कोई बड़ी बात नही है. ऐसा बहुत लोग कर रहे हैं दुनिया में. मगर ज़बरदस्ती बनाया हुवा रिश्ता कभी प्यार का वो फूल नही खिला पाएगा जिसकी कि एक पति पत्नी के रिश्ते में संभावना होती है. राहुल की नज़रो में तुम्हारे लिए बेईंतेहा प्यार देखा है मैने. तुम दोनो का साथ लिखा है भगवान ने. जाओ दोनो खुश रहो. भगवान मेरी सारी खुशीया तुम दोनो को दे दे." आँखे टपक गयी अवनी की ये आखरी कुछ शब्द बोलते हुवे.

आलिया ने फ़ौरन अवनी के होंटो पर हाथ रख दिया, "बस…तुम्हारी और कोई खुशी नही चाहिए हमें. जितना लिया है…वही बहुत ज़्यादा हो गया है. दुवा तो मैं करती हूँ कि मेरे हिस्से की सारी खुशीया अल्लाह तुम्हे दे दे."

“बस-बस अब और मत रुलाओ मुझे. जाओ अपने राहुल के पास. और तुम दोनो मुझे भूल मत जाना. मिलते रहना मुझसे. तुम दोनो से कोई गिला शिकवा नही है अब. बल्कि प्यार है तुम दोनो से. जाओ अब मैं बहुत भावुक हो रही हूँ.”

आलिया ने अवनी को गले लगा लिया और बोली, “काश दंगो में मर जाती मैं तो तुम्हे कोई भी तकलीफ़ नही होती.”

“बस थप्पड़ मारूँगी तुम्हे मैं अब. दुबारा मत कहना ऐसा.”

राहुल ये सब देख कर रोक नही पाया खुद को और आ गया दोनो के पास.

राहुल को देख कर अवनी बोली, “आप आलिया का ख्याल रखना. पता नही कैसा नाता जुड़ गया है इसके साथ. इसे हमेशा खुश रखना. ये खुश रहेगी तो मैं भी खुश रहूंगी. कोई तकलीफ़ नही होनी चाहिए मेरी आलिया को.”

ये सुन कर राहुल की आँखे नम हो गयी और वो भावुक आवाज़ में बोला, “थँक यू अवनी. थँक यू वेरी मच…कुछ नही सूझ रहा कि क्या कहूँ तुम्हे.”

“कुछ कहने की ज़रूरत नही है. ये बताओ की शादी कर चुके हो या करने वाले हो?”

जरीना, अवनी से अलग हुई और बोली, “ये तुम तैय करोगी अब कि हम कब शादी करें.”

“मेरी तरफ से तो आज कर लो…”

“अवनी तुम्हारे पेरेंट्स तो कोई समस्या नही करेंगे ना. कोई क़ानूनी उलझन तो पैदा नही करेंगे ना.”

“वो सब मुझ पर छोड दो. और क़ानूनी अड़चन कोई नही है तुम्हारे सामने. बाल-विवाह को कोर्ट नही मानता. सिर्फ़ एक अप्लिकेशन से सेटलमेंट हो जाएगा. तुम दोनो बिना किसी चिंता के शादी करो. कोई दिक्कत नही आने दूँगी मैं. बाल-विवाह का कोई लीगल स्टेटस नही है.”

“बहुत जानकारी है लॉ की तुम्हे?” राहुल ने कहा.

“लॉ स्टूडेंट हूँ ना. इसलिये” अवनी ने हंसते हुवे कहा.

“चाचा, चाची छोड़ने नही आए?”

“नही वो लोग आ रहे थे पर मैने ही मना कर दिया. अच्छा मैं लेट हो रही हूँ. कही फ्लाइट मिस ना हो जाए.” अवनी ने कहा

“हां-हां तुम निकलो…हम मिलते रहेंगे.” आलिया ने कहा.

अवनी ने आलिया के माथे को चूमा और बोली, “गॉड ब्लेस्स यू. हमेशा खुश रहना. किसी बात की चिंता मत करना.”

अवनी ने राहुल की तरफ देखा और बोली, “आप भी अपना और आलिया दोनो का ख़याल रखना.”

“बिल्कुल आपका हुकुम सर आँखो पर.” राहुल ने हंसते हुवे कहा.

अवनी चल पड़ी दोनो को वही छोड कर. राहुल और आलिया दोनो उसे जाते हुवे देखते रहे.

अवनी और आलिया की ये मुलाक़ात और उनकी वो बातें किसी चमत्कार से कम नही थी. कई बार चमत्कार हमें वहा देखने को मिलता है जहा पर उसकी उम्मीद तक नही होती. अवनी चली गयी थी एयर पोर्ट के अंदर. मगर जाते जाते आलिया और राहुल के लिए एक सुकून भरी जींदगी छोड गयी थी. वो दोनो अब बिना गिल्ट के साथ रह सकते थे. अवनी ने ना बल्कि दोनो को माफ़ किया था बल्कि खुले दिल से दोनो के प्यार को स्वीकार भी किया था. ये किसी चमत्कार से कम नही था.

जींदगी में जब तूफान आता है तो इंसान का सुख चैन सब कुछ छीन कर ले जाता है. मगर तूफान हमेशा नही रहता. तूफान के बाद शांति भी आती है.

अवनी के जाने के बाद आलिया और राहुल कुछ देर तक एक दूसरे की तरफ देखते रहे. दोनो की आँखो में सुकून था और चेहरे पर शांति के भाव थे. तूफान के थमने के बाद

अक्सर इंसान को एक अद्भुत शांति की अनुभूति होती है. कुछ ऐसा ही आलिया और राहुल के साथ हो रहा था.

“चले होटेल वापिस…मेरे होन्ट बेचैन हो रहे हैं.”

“क्या मतलब?” आलिया ने हैरानी में पूछा.

“हमारी पहली किस कितनी प्यारी थी ना. खो गये थे हम एक दूसरे में.” राहुल ने मुस्कुराते हुवे कहा.

“प्लीज़ ऐसी बाते मत करो वरना तुम्हारे साथ होटेल जाना मुश्किल हो जाएगा.” आलिया शर्मा गयी किस की बात पर. उसके चेहरे पर उभर आई शरम की लाली देखते ही बनती थी.

“कितनी देर तक किस की थी हमने. तुम्हारे होन्ट तो अंगरों की तरह तप रहे थे. तुम्हारे होंटो की तपिस से मेरे होन्ट झुलस गये हैं क्या तुम्हे खबर भी है.”

“प्लीज़ राहुल और कुछ मत कहो मैं सुन नही पाउंगी.” आलिया ने अपने सीने पर हाथ रख कर कहा.

“ये नया रूप देखा तुम्हारा जो की बहुत सुंदर है. मुझे नही पता था कि मुझे गमले और हॉकी से मारने वाली शर्मा भी सकती है.” राहुल ने आलिया को कोहनी मार कर कहा.

“राहुल अब बस भी करो.”

“ठीक है…मैं टॅक्सी बुलाता हूँ. डिनर होटेल में ही करेंगे.”

राहुल ने एक टॅक्सी रोकी और दोनो उसमें बैठ कर होटेल की तरफ चल दिए. रास्ते भर आलिया गुमसूम रही. कभी-कभी राहुल की तरफ देख कर हल्का सा मुस्कुरा देती थी. मगर ज़्यादातर वो चुपचाप और खोई-खोई सी रही. राहुल जान गया था की कोई बात आलिया को परेशान कर रही है. पर उसने टॅक्सी में कुछ पूछना सही नही समझा. उसने तैय किया की वो होटेल जा कर ही आलिया से बात करेगा.

प्यार में एक दूसरे के चेहरे पर हल्की सी शिकन भी बर्दाश्त नही कर पाते प्रेमी. यही वो चीज़ है जो रिश्ते में और ज़्यादा गहराई और सुंदरता लाती है. एक दूसरे की चिंता और फिकर ही वो इंसानी जज़्बा है जो प्रेमी जोड़ो में कूट-कूट कर भरा होता है.

होटेल के रूम में घुसते ही राहुल ने आलिया का हाथ पकड़ लिया और बोला, "तुम कुछ परेशान सी हो जान. बात क्या है?. क्या मुझसे कोई भूल हो गयी है."

"नही राहुल तुमसे कोई भूल नही हुई है. बस वक्त ही कुछ अज़ीब है." आलिया ने कहा.

"मैं कुछ समझा नही जान…खुल कर बताओ ना क्या बात है."

"राहुल…मैं शादी किए बिना वापिस अपने घर नही जाना चाहती. लोगो की नज़रो का सामना और नही कर सकती मैं. ऐसा लगता है जैसे की मैं कोई गुनहगार हूँ."

"अरे अब तो सब सॉल्व हो गया. शादी में ज़्यादा देरी नही होगी. मैं गुजरात पहुँचते ही किसी वकील से मिल कर कोर्ट में अप्लिकेशन लगवाऊंगा."

"कोर्ट के फ़ैसले कितनी जल्दी आते हैं ये तुम भी जानते हो और मैं भी. जब तक ये क़ानूनी अड़चन दूर नही होगी हमारी शादी नही हो सकती. तब तक अपने ही घर में रहना मेरे लिए मुश्किल रहेगा. तुम नही जानते मैं कैसे लोगो की नज़रो का सामना करती हूँ. एक तो मेरा अधर्मी होना ही गुनाह है उपर से लड़की हूँ…लोगो की नज़रो में नफ़रत और गली होती है मेरे लिए. तुम ही बताओ कैसे वापिस जाऊंगी मैं वहा." आलिया सूबक पड़ी बोलते-बोलते.

"समझ सकता हूँ जान. तुम्हारे किसी भी दर्द से अंजान नही हूँ मैं. जो बात तुम्हे दुख पहुँचाती है वो मेरे तन बदन में भी हलचल मचा देती है. तुम चिंता मत करो सब ठीक हो जाएगा."

"पर सब ठीक होने तक मैं कैसे रह पाउंगी तुम्हारे साथ."

"तो क्या मुझे छोड कर जाना चाहती हो कही."

"नही ऐसा तो मैं सपने में भी नही सोच सकती. रहूंगी तुम्हारे साथ ही चाहे कुछ हो जाए."

“इस दुनिया की चिंता करेंगे तो जीना मुश्किल हो जाएगा. छोडो इन बातों को. मैं दिल्ली जा कर आउट ऑफ कोर्ट सेटल्मेंट की बात करूँगा अवनी के घर वालो से. शायद बात बन जाए. अवनी तो हमारे साथ है ही.”

“हां कुछ ऐसा करो की हम जल्द से जल्द शादी के बंधन में बँध जायें.”

“मैं तुम्हे तुम्हारे अब्दुल चाचा के यहा छोड कर दिल्ली चला जाऊंगा.”

“अकेले तो तुम्हे कही नही जाने दूँगी मैं. चाहे कुछ हो जाए.”

“अच्छा बाबा तुम भी साथ चलना.”

“वो तो चलूंगी ही.”

“अरे यार हमने ये सब पहले क्यों नही सोचा. हम अवनी के साथ ही दिल्ली जा सकते थे. चलो कोई बात नही कल चल देंगे हम दिल्ली. सही कहा तुमने ये मामला कोर्ट में अटक गया तो हमारी शादी अटक जाएगी...कोर्ट के बिना ही ये मसला हल करना होगा. अब जबकि अवनी हमारे साथ है तो कोई ज़्यादा दिक्कत नही होनी चाहिए.”

आलिया हल्का सा मुस्कुराई मगर अगले ही पल उसके चेहरे पर फिर से शिकन उभर आई.

“अब क्या हुवा जान. कोई और बात भी है क्या जो तुम्हे परेशान कर रही है.”

“नही और कुछ नही है चलो खाना खाते हैं.”

“नही कुछ तो है. तुम्हारे चेहरे पर ये शिकन इशारा कर रहा है कि कुछ और बात भी है जो की तुम्हे अंदर ही अंदर खाए जा रही है.”

“नही तुम्हे दुख होगा रहने दो.”

“बोलो ना क्या बात है जान. इस प्यारे रिश्ते में अब कोई भी बात पर्दे के पीछे नही रहनी चाहिए. बोलो ना प्लीज़ क्या बात है?”

“हमारे बीच शादी से पहले ही सेक्स शुरू हो गया. मेरे अम्मी-अब्बा ज़िंदा होते आज अगर और उन्हे इस बारे में पता चलता तो वो मुझे जान से मार देते.” आलिया नज़रे झुका कर बोली.

“क्या कहा तुमने सेक्स शुरू हो गया हाहहहाहा….. इस से ज़्यादा लोटपोट कर देने वाला चुटकुला नही सुना मैने कभी. अरे पागल हमने भावनाओं में बह कर बस किस ही तो की है एक दूसरे को. वो किस सेक्स के दायरे में नही आती.”

“तुम्हे क्या मैं बेवकूफ़ लगती हूँ या फिर तुम्हे ये लगता है कि मेरा दिमाग़ खिसका हुवा है. मेरे मज़हब ने मुझे शादी से पहले किसी बात की इज़ाज़त नही दी. किस तो बहुत बड़ी बात होती है.”

“हां मानता हूँ जान. शादी से पहले सेक्स में उतर जाना ग़लत है. पर हमारी किस पवित्र थी. उस पर कोई इल्ज़ाम बर्दाश्त नही करूँगा मैं.”

“सॉरी राहुल मेरी परवरिश ऐसे माहोल में हुई है जहा शादी से पहले सेक्स से जुड़ी हर चीज़ को ग्लानि से देखा जाता है.” आलिया ने कहा.

“तो क्या तुम हमारी किस को अब ग्लानि से देख रही हो?”

“नही मैं ये पाप भी नही कर सकती क्योंकि इस प्यार में वो अब तक का सबसे हसीन पल था मेरे लिए. ऐसा लग रहा था जैसे मैं तुम्हारे बाहुत करीब पहुँच गयी हूँ.”

“और क्या तुमने एक बात नोट की.”

“कौन सी बात.”

“तुमने कहा था कि मुझे चुंबन लेना नही आता मगर तुम्हारे होन्ट तो खूबसूरत चुंबन की एक दास्तान लिख रहे थे मेरे होंटो पर.”

आलिया का चेहरा लाल हो गया ये सुन कर. वो कुछ देर खामोश रही. फिर अचानक नज़रे राहुल के कदमो पर टिका कर बोली, “हमने कुछ ग़लत तो नही किया ना राहुल.”

“मैं तो इतना जानता हूँ आलिया कि प्यार भगवान है. अगर इस प्यार में बह कर हम कुछ कर बैठे तो वो हरगिज़ ग़लत नही हो सकता. बल्कि मैं तो बहुत खुश हूँ उस चुंबन के बाद. रह रह कर मेरे होंटो पर मुझे अभी तक तुम्हारे होंटो की छुवन महसूस हो रही है. बहुत प्यारा अहसास मिला है जींदगी में ये.”

“अच्छा खाना मँगा लो. भूक लग रही है.”

“एक बात तो तुम्हे बतानी ही पड़ेगी. चुंबन लेना कहा से सीखा तुमने.”

“हटो…मैं इस बात को लेकर परेशान हूँ और तुम्हे मज़ाक सूझ रहा है.”

“उस वक्त तो तरह-तरह से मेरे होंटो से खेल रही थी अब परेशान हो रही हो हहेहहे. मेरी आलिया गिरगिट की तरह रंग बदलती है.”

“राहुल अब तुम्हारी खैर नही…” आलिया ने कहा. प्यार भरा गुस्सा था उसकी आवाज़ में.

राहुल भाग कर टॉयलेट में घुस्स गया और कुण्डी लगा ली.

“निकलो बाहर. तुम्हारी जान ले लूँगी मैं आज.”

“उस से पहले खाना खिला दो मुझे. खाने का ऑर्डर कर दो. मैं नहा कर ही निकलूंगा बाहर अब हाहहाहा.”

आलिया पाँव पटक कर रह गयी.

प्यार हमें हर तरह के रंग दीखता है. लड़ाता भी है, हँसाता भी है, रुलाता भी है और कभी-कभी प्यारी सी नोक झोंक पैदा कर देता है रिश्ते में. प्यार का हर रंग अनमोल और अद्विद्या है. चुंबन का भी अपना ही महत्व है. चुंबन तो बस एक बहाना है प्यार का मकसद हमें ऐसी जगह ले जाना है जहा हम बस एक दूसरे में खो जायें. क्योंकि प्यार एक दूसरे में खो कर ही होता है…अपने आप में होश में रह कर नही………

राहुल नहा कर चुपचाप दबे पाँव बाहर निकला वॉशरूम से. आलिया बिस्तर पर आँखे बंद किए पड़ी थी.

“खाने का ऑर्डर कर दिया क्या?”

“हां कर दिया…आता ही होगा?” आलिया ने कहा.

राहुल आलिया के पास आकर बैठ गया और बोला, “क्या हुवा फिर से चेहरे पर १२ बजा रखे हैं…अब कौन सी नयी समस्या है तुम्हारी.”

“कुछ नही…बस सोच रही थी की अवनी के घर वाले मान तो जाएँगे ना.”

“बातचीत करने से हर मसला हाल हो जाता है जरीना. हम एक कोशिश करेंगे बाकी भगवान की मर्ज़ी.”

“राहुल तुम मुझे चिढ़ा क्यों रहे थे…तुम्हे शरम नही आती ऐसा बोलते हुवे. मैं तुमसे नाराज़ हूँ.”

“उफ्फ अभी तक नाराज़ हो. जाओ नहा कर आओ फटाफट… दीमाग ठंडा हो जाएगा. और किसी बात की चिंता मत करो सब ठीक होगा.” राहुल ने कहा.

अगली सुबह राहुल और आलिया मुंबई एयर पोर्ट के लिए निकल पड़े. दोपहर १२ बजे वो दिल्ली में थे. अवनी कारोल बाग में रहती थी. उन्होने कारोल बाग में ही एक होटेल में रूम ले लिया.

कुछ घंटे रेस्ट करने के बाद आलिया को होटेल में ही छोड कर राहुल अवनी के घर आ गया. अवनी घर में सब कुछ बता चुकी थी इसलिये राहुल का कोई ख़ास स्वागत नही हुवा.

"तो तुम अब जले पर नमक छिड़कने आए हो" अवनी के पापा ने कहा. अवनी एक तरफ खड़ी सब सुन रही थी.

"जी नही मैं माफी माँगने आया हूँ. आप मुझे माफ़ कर दीजिए. अवनी ने आपको सब कुछ बता ही दिया है. हम सभी के लिए यही अच्छा है कि हम बैठ कर आपस में ही इसका हल निकाल लें. कोर्ट जाने से हमारा वक्त ही बर्बाद होगा. मानता हूँ मेरा स्वार्थ है इसमें पर इसमें आप लोगो का भी भला ही है"

अवनी के पापा कुछ बोले बिना उठ कर चले गये. अवनी ने राहुल को इशारा किया मैं समझाती हूँ इन्हे तुम चिंता मत करो.

राहुल चुपचाप वही बैठा रहा. कोई एक घंटे बाद अवनी अवनी कमरे में दाखिल हुई.

"आप अभी जाओ…कल इसी वक्त आ जाना तब तक मैं पापा को मना लूँगी. वो मेरी बात नही टालेंगे."

"ठीक है अवनी…सॉरी तुम लोगो को डिस्टर्ब करने के लिए पर मेरे पास कोई चारा नही था. ये मामला कोर्ट में पता नही कब तक लटका रहेगा. तुम तो लॉ स्टूडेंट हो ये बात बखूबी समझ सकती हो."

"हां मैं समझ रही हूँ. पापा भी समझ जाएँगे. कल से आगे नही जाएगी बात."

"थँक यू अवनी…चलता हूँ मैं."

"आलिया कहा है?"

“साथ ही आई है. होटेल में छोड कर आया हूँ. वो अकेले मुझे कही जाने ही नही देती.”

“ये तो अच्छी बात है ना. उसे दिल्ली घूमाओ आप आज. कल आएँगे तो निराश नही जाएँगे यहा से.”

“जानता हूँ. आपके होते हुवे निराशा हो ही नही सकती. चलता हूँ मैं.” राहुल घर से बाहर निकल आया.

अगले दिन जब राहुल अवनी के घर पहुँचा तो अवनी के पापा ने उसे देख कर गहरी साँस ली और बोले, “ठीक है मैं कुछ लोगो को बुलाता हूँ. आज ही ये किस्सा निपटा देते हैं. और ये मैं तुम्हारे लिए नही बल्कि अपनी बेटी के लिए कर रहा हूँ. इसका भी इस बंधन से आज़ाद होना ज़रूरी है ताकि हम इसका घर बसाने की सोच सकें तुमने तो उजाड़ने में कोई कसर नही छोडी.”

राहुल ने चुप रहना ही सही समझा.जब आप मूह तक पानी में डूबे हों तो मूह बंद ही रखना चाहिए वरना दिक्कतें और ज़्यादा बढ़ सकती हैं. राहुल ये बात बखूबी समझ रहा था.

कुछ लोग इकट्ठा हुवे उस घर में और स्टॅम्प पेपर पर राहुल और अवनी को वैवाहिक संबंध से आज़ाद कर दिया. स्टॅम्प पेपर की एक कॉपी अवनी के पापा ने रख ली और एक राहुल को थमा दी.

राहुल अपनी खुशी छुपा नही पाया और अवनी के पापा के पाँव छू लिए आगे बढ़ कर, “ये अहसान मैं जींदगी भर नही भूलूंगा.”

“हम भी तुम्हे जींदगी भर नही भूलेंगे.”

राहुल को अवनी कही दीखाई नही दे रही थी. वो उसे बाइ करना चाहता था जाने से पहले. उसने अवनी के बारे में पूछना सही नही समझा क्योंकि माहोल गरम था. वो स्टॅम्प पेपर को लेकर चुपचाप बाहर आ गया.

बाहर आकर उसने पीछे मूड कर देखा तो पाया की अवनी छत पर खड़ी थी. जैसे ही दोनो की नज़रे टकराई अवनी ने हंसते हुवे हाथ हिला कर अलविदा कहा.

राहुल की आँखे नम हो गयी अवनी को देख कर. "मुझे माफ़ करना अवनी. तुम्हारे सच्चे प्यार को ठुकरा दिया मैने. लेकिन कोई चारा नही था अवनी. मेरे रोम-रोम में आलिया बस चुकी है. मैं चाहूं तो भी खुद को आलिया से जुदा नही कर सकता क्योंकि मर जाऊंगा उस से जुदा होते ही. यही दुवा करता हूँ की हमेशा खुश रहो तुम. जींदगी में कोई भी गम या दुख तुम्हारे पास भी ना भटक पाए. हे भगवान अवनी को हमेशा खुश रखना."

राहुल आँखो में नमी लिए आगे बढ़ गया. होटेल तक पहुँचते-पहुँचते आँखो की नमी सूख चुकी थी और धीरे-धीरे उनमें एक अद्भुत चमक उभरने लगी थी. अब राहुल और आलिया की शादी में कोई रुकावट नही थी. राहुल ये बात सोच-सोच कर झूम रहा था. पाँव ज़मीन पर नही टिक रहे थे उसके.राहुल होटेल की तरफ बढ़ते हुवे ये गीत गुनगुना रहा था

राहुल ने जब होटेल के कमरे की बेल बजाई. आलिया ने भाग कर दरवाजा खोला.

"क्या हुवा राहुल?"

"तुम्हे क्या लगता है…"

"जल्दी बताओ ना प्लीज़…मेरी साँसे अटकी हुई हैं जान-ने के लिए."

राहुल ने जेब से निकाल कर स्टॅम्प पेपर दिखाया और बोला, "अब हमारी शादी में कोई रुकावट नही है जान. हम जब जी चाहे शादी कर सकते हैं."

"सच!" आलिया उछल पड़ी ये बात सुन कर.

"हां अब तुम जी भर कर खेलना मेरे होंटो से…जितना जी चाहे उतना झुलसा देना इन्हे अपने अंगरो से. मैं उफ्फ तक नही करूँगा. तुम्हारी किस का कोई जवाब नही."

"राहुल तुम मार खाओगे अब मुझसे."

"अपने होने वाले पति को मारोगी तुम."

"पागल हो क्या…मज़ाक कर रही हूँ."

“पता है मुझे…अब ये बताओ कब बनोगी मेरी दुल्हनिया.”

“आज, अभी…इसी वक्त…बनाओगे क्या बोलो.”

“खुशी-खुशी……बस एक बात बात बताओ धर्मी रीति रिवाज से शादी करना चाहोगी या फिर अधर्मी रीति रिवाज से.”

“उस से कुछ फरक पड़ेगा क्या?”

“बिल्कुल भी नही?”

“फिर क्यों पूछ रहे हो.”

“यू ही तुम्हारा व्यू लेना चाहता था इस बारे में.”

“मेरा कोई व्यू नही है इस बारे में सच कह रही हूँ मैं. तुम मुझे जैसे चाहो अपनी दुल्हन बना लो. वैसे तुम्हारे भगवान के मंदिर में शादी करना चाहती हूँ मैं तुमसे. तुम मुझे एक साल बाद मंदिर में ही तो मिले थे.”

“पक्का…”

“हां पक्का.”

“ठीक है फिर. हम दिल्ली से ही शादी करके चलते हैं. तुम अब अपने घर में मेरी दुल्हन बन कर ही प्रवेश करोगी.”

“आज जाकर दिल को सुकून मिला है. अल्लाह अब कोई और मुसीबत ना डाले हमारी शादी में.”

“कोई मुसीबत नही आएगी. बी पॉज़िटिव. जींदगी में उतार चढ़ाव तो चलते रहते हैं. तुम्हारी मौसी को भी बुला लेंगे हम.”

‘‘नही…नही मौसी को मत बुलाओ. किसी को वहा भनक भी लग गयी तो तूफान मचा देंगे लोग. तुम नही जानते उन्हे. जीतने कम लोग हों उतना अच्छा है.’’

‘‘ह्म्म बात तो सही कह रही हो.’’

‘‘जान बस और इंतजार नही होता मुझसे. मैं अभी सब इंतजाम करके आता हूँ. हम कल सुबह शादी कर लेंगे’’

‘‘हां राहुल बस अब और नही. मुझे मेरा हक़ दे दो ताकि दुनिया के सामने सर उठा कर जी सकूँ.’’

राहुल निकल तो दिया होटेल से शादी का इंतजाम करने के लिए पर उसे इस काम में बहुत भाग दौड़ करनी पड़ी. मंदिरों के पुजारी तैयार ही नही थे शादी करवाने के लिए.राहुल दरअसल हर जगह आलिया का नाम ले कर ग़लती कर रहा था. आलिया का नाम सुनते ही पुजारी मना कर देते थे. लेकिन दुनिया में हर तरह के लोग रहते हैं. एक जगह पुजारी ना बल्कि तैयार हुवा शादी करवाने को बल्कि बहुत खुश भी हुवा धर्मी-अधर्मी का ये प्यार देख कर.

‘‘बेटा मैं तो सौभाग्य समझूंगा अपना ये शादी करवा कर. तुम लोग सुबह ठीक ११ बजे आ जाना यहा.’’

‘‘पंडित जी हम दोनो यहा किसी को नही जानते. कन्या दान कैसे होगा..कोन करेगा.’’

‘‘उसका इंतजाम भी हो जाएगा. मेरे एक मित्र हैं वो खुशी खुशी कर देंगे ये काम. तुम चिंता मत करो बस वक्त से पहुँच जाना. दोपहर बाद मुझे एक पाठ करने जाना है.’’

‘‘धन्यवाद पंडित जी. आप चिंता ना करें. हम वक्त से पहुँच जाएँगे.’’

मंदिर में शादी का इंतजाम करने के बाद राहुल कपड़ो के शोरुम में घुस गया और आलिया के लिए लाल रंग की एक साडी खरीद ली. सारी लेकर वो खुशी खुशी होटेल की तरफ चल दिया.

होटेल पहुँच कर उसने आलिया को सारी दीखाई तो आलिया ने कुछ ख़ास रेस्पॉन्स नही दिया.

"क्या हुवा…क्या सारी पसंद नही आई?"

"मैं ये नही पहन सकती. ये शेड मुझे पसंद नही"

"हद है इतने प्यार से लाया हूँ मैं आलिया और तुम ऐसे बोल रही हो." राहुल सारी को बिस्तर पर फेंक कर वॉशरूम में घुस गया.

राहुल वॉशरूम से बाहर आया तो आलिया उस से लिपट गयी.

"नाराज़ क्यों होते हो राहुल. मेरी ज़ींदगी का इतना बड़ा दिन है और मैं अपनी पसंद का कुछ पहन-ना चाहती हूँ तो क्या ये ग़लत है. ये दिन जींदगी भर याद रहेगा हमें. देखो याद रखो कोई लड़ाई नही करनी है हमें. लड़ाई का परिणाम देख चुके हैं हम."

"लड़ाई तो बेशक करेंगे जान पर एक दूसरे को छोड कर नही जाएँगे. अब हम शादी के बंधन में बँधने जा रहे हैं. ये बात गाँठ बाँध लेते हैं की कभी एक दूसरे का साथ नही छोडेंगे. क्योंकि छोडेंगे भी तो पछताना भी हमें ही पड़ेगा."

"हां ये तो हम देख ही चुके हैं. दूसरी साडी ले लेते हैं ना राहुल…प्लीज़."

"अरे पागल प्लीज़ क्यों बोल रही हो. एनिथींग फॉर यू. चलो अभी लेकर आते हैं तुम्हारी मन पसंद सारी. मेरी आलिया दुल्हन बन-ने जा रही है कोई मज़ाक नही है"

"राहुल बहुत खर्चा करवा रही हूँ तुम्हारा. शरम सी तो आती है पर क्या करूँ. १० लाख की एफडी है मेरे नाम…वो दहेज में दे रही हूँ तुम्हे. पूरी भरपाई कर लेना."

"ये क्या बकवास कर रही हो जरीना. तुम्हारा मेरा क्या अलग-अलग है."

"मुझे ताना दिया गया था इस बात का राहुल. बहुत बुरा लगा था मुझे. मैं कोई तुम्हारी दौलत के पीछे नही हूँ. तुम तो जानते ही हो ना, मेरे अब्बा का भी तो अच्छा कारोबार था. दंगो ने सब तबाह कर दिया."

‘‘मैं जानता हूँ जान. दुनिया तो कुछ भी कहती है. सचाई तो हम जानते हैं ना. चलो अब तुम्हारे लिए प्यारी सी सारी लेकर आते हैं.’’

‘‘तुम भी तो कुछ नया खरीद लो ना. शादी में पुराने कपड़े नही पहने जाते.’’ आलिया ने कहा.

‘‘ऐसा है क्या…चलो फिर मैं भी खरीद लेता हूँ.’’

शादी हो रही थी दोनो की. ये बात सोच कर ही झूम उठते थे दोनो. बहुत मुश्किल से ये खुशी पाने जा रहे थे दोनो. एक लंबा इंतेज़ार किया था दोनो ने. आलिया ने अपनी मन पसंद साडी खरीदी. राहुल ने भी अपने लिए एक नयी पँट शर्ट ले ली. ख़ुसनसीब थे दोनो जो की एक साथ अपनी शादी की शॉपिंग कर रहे थे. ये अवसर हमारे समाज में हर किसी को नही मिलता.

शॉपिंग करने के बाद वो जब होटेल की तरफ जा रहे थे तो एक अज़ीब सी सुंदर सी मुस्कुराहट थी दोनो के चेहरे पर. चेहरे के ये भाव उनके दिलो में बसी खुशी का इज़हार कर रहे थे.

होटेल पहुँच कर दोनो बिस्तर पर गिर गये. राहुल एक कोने पर था और आलिया दूसरे कोने पर. बहुत थक गये थे दोनो.

‘‘जरीना!’’

‘‘हां राहुल’’

‘‘आइ लव यू सो मच.’’

‘‘आइ लव यू टू.’’

‘‘शादी तो कर रहा हूँ तुमसे मगर अब एक चिंता सता रही है.’’ राहुल ने कहा.

ये सुनते ही आलिया के चेहरे पर चिंता की लकीरे उभर आई. वो राहुल की तरफ मूडी और बोली, "कैसी चिंता राहुल."

"रहने दो तुम्हे बुरा लगेगा" राहुल ने कहा.

"बोलो राहुल प्लीज़…मेरा दिल बैठा जा रहा है." आलिया ने कहा.

"उस दिन के चुंबन से मेरे होन्ट अभी तक झुलस रहे हैं. शादी के बाद मेरा क्या होगा जरीना. कैसे झेलूँगा मैं तुम्हारे अंगारों को. यही चिंता सता रही है."

"राहुल मैं मारूँगी तुम्हे तुमने दुबारा ऐसा मज़ाक किया तो. अब से कोई चुंबन नही होगा हमारे बीच."

"क्यों नही होगा!...ऐसा क्यों बोल रही हो."

"बोल दिया तो बोल दिया."

राहुल ने आलिया का हाथ थाम लिया और उसे अपने तरफ झटका दिया. दोनो बहुत करीब आ गये. चेहरे बिल्कुल आमने सामने थे. साँसे टकरा रही थी दोनो की.

"छोडो मुझे राहुल."

"तुम्हारे होंटो के अंगारों से झुलस जाना चाहता हूँ मैं. रख दो ये अंगारे मेरे होंटो पर जान मैं फिर से उसी अहसास को जीना चाहता हूँ."

"ना मेरे होन्ट अंगारे हैं और ना मैं इन्हे कही रखूँगी छोडो मुझे."

"उफ्फ गुस्से में तो तुम और भी ज़्यादा सुंदर लगती हो. मन तो कर रहा है तुम्हारे होंटो पर होन्ट रखने का पर तुम्हारी मर्ज़ी के बिना नही रखूँगा."

"मेरी मर्ज़ी कभी नही होगी अब. तुम मज़ाक उड़ाते हो मेरा. छोडो मुझे."

"कभी सपने में भी नही सोचा था कि इस नकचाढ़ि को प्यार करूँगा और इसके होंटो पर अपने होन्ट रखूँगा. कॉलेज टाइम में ऐसा विचार भी आता तो मुझे उल्टी आ जाती. इतनी नापसंद थी तुम मुझे."

"ये…ये..ये…तुम बड़े मुझे पसंद थे. सर फोड़ने का मन करता था तुम्हारा.उस वक्त तुमसे प्यार का सोचने से पहले सुसाइड कर लेती मैं. बहुत ज़्यादा बेकार लगते थे तुम मुझे."

"आज ऐसा क्या है आलिया कि हम एक साथ इस बिस्तर पर पड़े हैं एक दूसरे के इतने करीब."

"तुमने ज़बरदस्ती रोक रखा है मुझे अपने करीब. कौन तुम्हारे करीब रहना चाहता है."

"चलो फिर छोड दिया तुम्हारा हाथ. जाओ जहा जाना है." राहुल ने आलिया का हाथ छोड दिया.

आलिया राहुल के पास से बिल्कुल नही हिली. आँखे बंद करके वही पड़ी रही.

"क्या हुवा जान…जाओ ना. मैने तुम्हारा हाथ छोड दिया है."

आलिया ने राहुल की छाती में ज़ोर से मुक्का मारा.

"आउच…इतनी ज़ोर से क्यों मारा." राहुल कराह उठा.

"तुम्हे पता है ना कि मैं तुमसे दूर नही रह सकती इसलिये ये सब मज़ाक करते हो." आलिया ने कहा.

"अफ जान निकाल दी मेरी. बहुत ख़तरनाक हो तुम." राहुल ने कहा.

आलिया ने राहुल की छाती पर हाथ रखा और उसे मसल्ते हुवे बोली, "ज़्यादा ज़ोर से लगी क्या?"

"तुम जब मारती हो तो ज़ोर से ही मारती हो."

“तुम मुझे यू सताते क्यों हो फिर. शरम भी आती है किसी को ये बाते सुन कर.”

“किसको शरम आती है? इस कमरे में तुम्हारे और मेरे सीवा भी कोई है क्या.”

“राहुल तुम इतने शैतान निकलोगे मैने सोचा नही था.” आलिया ने कहा.

“ऐसा तो नही था कभी. तुमने दीवाना बना दिया मुझे जान. तुम मेरा पहला प्यार हो."

“जानती हूँ मैं. मेरा तो इंटेरेस्ट ही नही था किसी से दोस्ती करने में. मैं भी बस तुम्हे जानती हूँ. मेरा पहला और आखरी प्यार तुम ही हो.”

“इतनी प्यारी बात कर रही हो. एक प्यारी सी किस दे दो ना और जला दो मेरे होंटो को एक बार फिर से.”

“जल कर राख हो जाओगे रहने दो.” आलिया ने हंसते हुवे कहा.

“तुम मुझे खाक में मिला दो तो भी चलेगा. तुम्हारे हुस्न की आग में जलना चाहता हूँ मैं.”

“अच्छा.”

“हां.”

“तुम कही झुटि तारीफ़ तो नही करते मेरी.”

“लो कर लो बात. कॉलेज में तुम मशहूर थी अपने हुस्न के लिए. तुम्हारी ही चर्चा हुवा करती थी हर तरफ लड़को में. ये बात और थी की तुम मुझे बिल्कुल पसंद नही थी.”

“क्या मैं इसलिये पसंद नही थी कि मैं अधर्मी थी?”

“आलिया कैसी बात कर रही हो.”

“बोलो ना राहुल मैं नापसंद क्यों थी तुम्हे.”

‘‘ये तो मैं भी पूछ सकता हूँ कि क्या तुम मुझसे नफ़रत इसलिये करती थी क्योंकि मैं धर्मी था.’’

‘‘पहले मेरे सवाल का जवाब दो ना प्लीज़. पहले मैने सवाल किया है.’’

‘‘हां आलिया झूठ नही बोलूँगा. उस वक्त अधर्मी लोगो से चिढ़ता था मैं. देश में कही भी टेररिस्ट अटॅक होता था तो बहुत गालिया देता था मैं. काई बार मन में ख़याल आता था कि मेरे पड़ोस में भी टेररिस्ट रह रहे हैं. तुम लोगो से लड़ाई और ज़्यादा नफ़रत पैदा करती थी तुम्हारे प्रति.’’

‘‘झूठ नही बोल सकते थे…इतना कड़वा सच बोलने की क्या ज़रूरत थी.’’ आलिया रो पड़ी बोलते-बोलते.

‘‘जान…तुमने सवाल सच जान-ने के लिए किया था या फिर झूठ. अब तुम बताओ कि तुम क्यों नफ़रत करती तू मुझसे.’’

‘‘मुझे कभी किसी धर्मी के नज़दीक जाने की इच्छा नही होती थी, क्योंकि मुझे यही लगता था कि ये लोग हमें दबाते हैं इस देश में. माइनोरिटी होने के कारण हमारे साथ हर जगह भेदभाव होता है. कॉलेज में मेरे सभी अधर्मी फ्रेंड्स ही थे. और हम लोगो के परिवारों का लड़ाई झगड़ा होने के कारण तुमसे नफ़रत और ज़्यादा बढ़ गयी थी.’’

‘‘शुक्र है शादी होने से पहले ये राज खुल गये.’’ राहुल ने कहा.

‘‘तो क्या अब हम शादी नही करेंगे.’’ आलिया ने बड़ी मासूमियत से पूछा.

‘‘तुम बताओ क्या इरादा है तुम्हारा?’’

एक पल को खामोशी छा गयी दोनो के बीच. दोनो बहुत करीब पड़े थे एक दूसरे के. कुछ कहने की बजाए दोनो एक दूसरे की आँखो में झाँक रहे थे. कब उनके होन्ट मिल गये एक दूसरे से उन्हे पता ही नही चला. दोनो के होन्ट एक साथ हरकत कर रहे थे. १० मिनिट तक बेतहाशा चूमते रहे दोनो एक दूसरे को. जब उनके होन्ट जुदा हुवे तो बड़े प्यार से देख रहे थे दोनो एक दूसरे को.

“मिल गया जवाब.” राहुल ने हंसते हुवे पूछा.

“हां मिल गया. यही कह सकती हूँ कि प्यार के आगे ये बातें कुछ मायने नही रखती.”

“हां हम एक दूसरे के करीब आए तो हम जान पाए एक दूसरे को. वरना तो जींदगी भर नफ़रत बनी रहती.हम एक महीना साथ रहे तो धरम की झूठी दीवार गिर गयी. दीवार गिरने के बाद हम उसके पीछे खड़े असली इंसान को देख पाए. काश इस देश में हर कोई ऐसा कर पाए. मैं अपने पहले के विचारों के लिए शर्मिंदा हूँ.”

“मैं भी शर्मिंदा हूँ राहुल. अच्छा हुवा जो कि हमें प्यार हुवा और हम एक दूसरे को जान पाए. प्यार में बहुत ताक़त होती है ना राहुल.”

“हां बहुत ज़्यादा ताक़त होती है. ये प्यार आलिया जैसी लड़की को भी किस करना सीखा देता है. ऑम्ग फिर से बहुत प्यारा चुंबन दिया तुमने.”

“हटो छोड़ो मुझे…तुम फिर से शैतानी पर उतर आए.”

राहुल और आलिया बिस्तर पड़े हुवे प्यार के उस कोमल अहसास को पा रहे थे जिसके लिए ज़्यादा तर लोग जीवन भर तरसते हैं. दोनो की आँखों में बहुत सारे सपने थे आने वाली जींदगी के लिए और दिलों में ढेर सारी उमंग थी.

जब दिल में बहुत ज़्यादा खुशी हो तो अक्सर आँखो की नींद खो जाती है. दिल हर वक्त बेचैन सा रहता है. ऐसा ही कुछ हो रहा था राहुल और आलिया के साथ.एक तो चुंबन की खुमारी थी उपर से होने वाली शादी की खुशी. दोनो पर अजीब सा नशा कर दिया था प्यार ने.

अचानक आलिया को कुछ ख़याल आया, “राहुल हम जब से मार्केट से आयें हैं यही पड़े हैं. क्या हमने खाना खाया?”

“अरे खा लेंगे खाना भी. जब तुम पास हो तो भूक प्यास किस कम्बख़त को लगती है.”

“अरे कैसी बात कर रहे हो. खाना खा कर हमे जल्दी सो जाना चाहिए. सुबह जल्दी उठ कर हमें तैयार भी तो होना है.” आलिया ने कहा.

“मैं तो किसी भी वक्त उठ कर मॅनेज कर लूँगा. तुम लड़कियों को ही वक्त लगता है तैयार होने में.”

“मेरी शादी हो रही है…तैयार होने में वक्त तो लगेगा ना.”

“अच्छा बाबा मैं ऑर्डर देता हूँ. तुम एक गरमा गरम चुंबन तैयार रखो. खाने के बाद स्वीट डिश की तरह काम आएगा.”

“जी हां जनाब बिल्कुल. मेरा तो यही काम रह गया है. चलिए अपना रास्ता देखिए… मुझे और भी बहुत काम हैं.”

“काम कैसा काम?”

“मुझे बहुत कुछ सोचना है कल के बारे में. मुझे ये भी नही पता अभी कि शादी के लिए तैयार कैसे होना है.”

“हो जाएगा सब…तुम चिंता मत करो…मैं खाने का ऑर्डर देता हूँ…क्या लोगि तुम.”

“मँगा लो कुछ भी ज़्यादा भूक तो है नही.”

“ओके.” राहुल ने फोन उठा कर खाने के लिए बोल दिया.

खाना खाने के बाद आलिया बिस्तर पर पसर गयी और बोली, “अब यहा कोई भी आने की जुर्रत ना करे. हमें नींद आ रही है.”

“हहहे….झूठ बोल रही हो तुम.नींद नही आने वाली आज…चाहे कुछ कर लो तुम. मेरी बाहों में रहोगी तो शायद नींद आ भी जाए. अकेले तो बिल्कुल भी नही सो पाओगी तुम”

“कुछ भी हो यहा नही आओगे तुम अब.”

“कोई बात नही जान. आज रात छोड देता हूँ तुम्हे अकेला. कल से देखता हूँ कैसे भगोगी मुझे तुम बिस्तर से.”

“कल की कल देखेंगे.” आलिया ने होंटो पर प्यारी सी मुस्कान बिखेर कर कहा.

प्यार ने धीरे धीरे एक हसीन कामुक रस भर दिया था दोनो की जींदगी में. इन्ही बातों के कारण आलिया राहुल से शरमाने लगी थी. हर पल उनका रिश्ता नया रूप ले रहा था और नये रंग में रंग रहा था. प्यार हर तरह के रंग भरने की कोशिश करता है प्रेमियों की जींदगी में. आलिया खुश थी मगर अपने संस्कारों के कारण झीजक और शरम उसके अस्तित्व को घेरे हुवे थी. ये बातें उसके चरित्र की सुंदरता को और ज़्यादा बढ़ाती थी. राहुल भी अंजान नही था अपनी आलिया के इस स्वाभाव से. मन ही मन मुस्कुराता था वो आलिया की इन बातों पर. तभी तो उसे छेड़ता था बार बार. काम रस भी प्रेमियों की जींदगी में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की प्रेम रस.

आलिया करवटें बदलती रही रात भर. बड़ी मुश्किल से आँख लगी थी उसकी. यही हाल राहुल का भी था. आलिया तो सुबह ५ बजे ही उठ गयी. ६ बजे राहुल की आँख खुली तो उसने देखा कि आलिया गुमसुम और उदास बैठी है बिस्तर पर. राहुल आलिया के पास आया और बोला, "क्या हुवा जान…इतनी परेशान सी क्यों लग रही हो?"

"राहुल दुल्हन की तरह सजना मुझे आता ही नही. समझ में नही आ रहा की क्या करूँ."

"हे जान परेशान क्यों होती हो. तुम तो बिना सजे सँवरे ही मेरे दिल पर सितम ढाती हो. ज़्यादा कुछ करने की ज़रूरत नही है. थोड़ा बहुत सज लो काम बन जाएगा."

"मज़ाक मत करो. जींदगी भर हमारे साथ मेमोरी रहेगी इस दिन कि. मैं दुल्हन की तरह दिखना चाहती हूँ राहुल."

"अच्छा मैं कुछ करता हूँ तुम चिंता मत करो." राहुल ने कहा.

राहुल ने होटेल रीसेपशन पर इस बारे में बात की. रीसेपशनिस्ट ने एक लड़की को फोन मिलाया, "हाई पम्मी…यहा एक लड़का लड़की ठहरे हुवे हैं होटेल में. दोनो आज मंदिर में शादी कर रहे हैं. क्या तुम लड़की को दुल्हन की तरह सज़ा दोगि आकर."

"दोनो घर से भागे हुवे हैं क्या?" पम्मी ने पूछा.

"उस से कुछ फरक पड़ेगा क्या?"

“नही वैसे ही पूछ रही हूँ. मैं आ रही हूँ ३० मिनिट में.”

“ओके थँक यू सो मच.” रीसेपशनिस्ट ने कहा.

“बात बन गयी…वो आ रही है आधे घंटे में.”

“थँक यू सो मच डियर. आपका नाम क्या है.”

“आइ आम मनीष फ्रॉम शिमला. हमारे होटेल की ब्रांच शिमला में भी है. शादी के बाद हनिमून के लिए आप वहा आ सकते हैं. हम आपके लिए स्पेशल कन्सेशन देंगे.”

“सो नाइस ऑफ यू मनीष जी. कभी वक्त लगा तो ज़रूर आएँगे.”

राहुल वापिस कमरे में आ गया और बोला, “सब इंतजाम हो गया है. तुम्हे सजाने के लिए एक लड़की आ रही है, पम्मी नाम है उसका.मैं नहा धो कर तैयार हो जाता हूँ जल्दी से वो आएगी तो मुझे बाहर जाना होगा.”

“हां हां तुम जल्दी करो कही हम लेट ना हो जायें. ११ बजे मंदिर पहुँचना है याद है ना.”

“जानेमन मैं तो तैयार हो जाऊंगा अभी…सारा वक्त तो तुम्हे ही लगना है.” राहुल मुस्कुराता हुवा वॉशरूम में घुस्स गया.

राहुल नहा कर नये कपड़े पहन कर बाहर आया तो देखा कि सोफे पर एक लड़की बैठी है.

“राहुल ये पम्मी है. अब तुम बाहर जाओ जल्दी मुझे भी तैयार होना है.

राहुल ने पम्मी को गुड मॉर्निंग विश किया और चुपचाप बाहर आ गया. कोई १० बजे पम्मी रूम से बाहर निकली और बोली, “तुम्हारी दुल्हन तैयार है…जाओ देख लो जाकर. तुम्हे ऐतराज ना हो तो क्या शादी में मैं भी आ सकती हूँ.”

“मुझे भला क्यों ऐतराज़ होगा. हम वैसे भी अकेले हैं. कोई साथ होगा तो अच्छा ही लगेगा.” राहुल ने पम्मी को उस मंदिर का पता बता दिया जहा शादी होने जा रही थी.

“थँक्स…मैं पूरे ११ बजे वहा पहुँच जाऊंगी. बाइ.” पम्मी ने कहा.

राहुल कमरे में आया तो आलिया को देखता ही रह गया, “ऑम्ग.... मेरी आलिया आज कतल कर देगी मेरा. अफ क्या लग रही हो तुम.”

आलिया ने अपना चेहरा हाथो में छुपा लिया शरम के मारे, “मुझे छेड़ो मत ऐसे नही तो शादी नही करूँगी तुम्हारे साथ.”

“अच्छा” राहुल शरारती अंदाज़ में आलिया की तरफ बढ़ा.

“छूना मत मुझे… सारा मेक अप खराब हो जाएगा.” आलिया पीछे हट-ते हुवे बोली.

“प्लीज़ जान थोड़ा करीब तो आने दो. बहुत प्यारी लग रही हो तुम. सच में बहुत सुंदर सजाया है पम्मी ने तुम्हे. तुम्हे मेरी नज़र ना लग जाए.” राहुल ने कहा.

आलिया बस हल्का सा मुस्कुरा दी राहुल की बात पर और बोली, “हमें चलना चाहिए राहुल. कही हम लेट ना हो जायें. दिल्ली के ट्रॅफिक का कोई भरोसा नही है.”

“एक मिनिट ज़रा जी भर कर देख तो लेने दो मुझे अपनी दुल्हनिया को.” राहुल ने कहा.

“उफ्फ तुम्हारे देखने के चक्कर में हमारी शादी ना डीले हो जाए.”

“क्या बात है बड़ी जल्दी में हो शादी की. लगता है मुझे जला कर राख करने की जल्दी है तुम्हे. अच्छी बात है. मैं खुद तड़प रहा हूँ खाक में मिल जाने के लिए.” राहुल ने कहा.

“राहुल तुम मुझे बार-बार इन बातों में मत उलझाया करो. हम लेट हो रहे हैं और तुम्हे मज़ाक सूझ रहा है.”

“ओके ओके जान अब गुस्सा मत करो. तुम वैसे ही बहुत प्यारी लग रही हो. गुस्सा करोगी तो जान निकल जाएगी मेरी. गुस्से में तो तुम और ज़्यादा प्यारी लगती हो. चलो चलते हैं. मैने एक टॅक्सी कर ली है मंदिर तक जाने के लिए.”

“ठीक है चलो अब ज़्यादा देर मत करो.”

आलिया और राहुल हंसते मुस्कुराते होटेल से बाहर आए और टॅक्सी में बैठ कर मंदिर की तरफ चल दिए. जब वो मंदिर पहुँचे तो हैरान रह गये. मंदिर सज़ा हुवा था.

“लगता है कोई और कार्यक्रम भी है मंदिर में.” राहुल ने कहा.

“राहुल कोई गड़बड़ तो नही होगी ना.”

“अरे नही पागल कोई गड़बड़ नही होगी. मंदिर के पंडित जी मुझे भले व्यक्ति लगे. ज़्यादा ओल्ड नही हैं वो. यंग पुजारी हैं. तभी शायद उन्होने हमारे प्यार को समझा.” राहुल ने कहा.

राहुल और आलिया मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़े ही थे कि उन्हे पंडित जी मिल गये.

“नमस्कार पंडित जी” राहुल ने कहा. आलिया ने भी सर हिला कर नमस्कार किया.

“आओ राहुल आओ. हम तुम्हारा ही इंतेज़ार कर रहे थे. तुम कह रहे थे कि तुम्हारा यहा कोई नही मगर देखो भगवान की क्या लीला है. तुम दोनो की कहानी सुन कर बहुत लोग इकट्ठा हो गये हैं यहा पर. मुझे उम्मीद है तुम दोनो को बुरा नही लगेगा.”

“नही पंडित जी कैसी बात कर रहे हैं आप.”

“आओ मैं सभी से तुम्हारा परिचय करवाता हूँ.”

“अपना परिचय भी दे दीजिए पंडित जी.” राहुल ने कहा.

“मेरा नाम रवि है राहुल. आओ बाकी मित्रो से भी मिल लो.” रवि ने कहा.

“आओ जरीना.” राहुल ने आलिया से कहा. आलिया थोड़ी घबराई सी लग रही थी.

अगले ही पल उन्हे बहुत सारे लोगो ने घेर लिया.

“ये हैं आलोक जी. इन्हे जैसे ही मैने बताया कि तुम दोनो की शादी है कल तो मेरे बोलने से पहले ही कन्यादान के लिए तैयार हो गये.ये ही कन्यादान करेंगे.” रवि ने कहा.

“और मैं खुद को ख़ुसनसीब समझूंगा.” आलोक ने कहा.

“ख़ुसनसीब तो हम समझेंगे खुद को आलोक जी.” राहुल ने कहा.

आलिया और राहुल ने आलोक को हंस कर हाथ जोड़ कर नमस्कार किया.

“ये हैं जावेद जी. ये यहा हैं तो चिंता की कोई बात नही है. ये तो तुम दोनो को फरिश्ता मानते हैं”

राहुल और आलिया ने जावेद को हंस कर हाथ जोड़ कर नमस्कार किया.

“ये है गुड्डी.”

गुड्डी ने आगे बढ़ कर आलिया को गले लगा लिया और बोली, “मैं तुम्हारी तरफ से हूँ शादी में. खुद को अकेली मत समझना.”

“थँक यू गुड्डी.” आलिया ने कहा.

“ये हैं विवेक जी. तुम दोनो की कहानी सुन कर बहुत भावुक हो गये थे. दिल के बहुत अच्छे हैं. बिज़ी होने के बावजूद भी ये यहा आने से खुद को रोक नही पाए.”

“ये हैं सिकंदर जी. ये यहा खुशी खुशी केटरिंग का इंतजाम कर रहे हैं.”

“केटरिंग.” राहुल हैरान रह गया.

“हां केटरिंग. तुम दोनो की शादी है..पार्टी तो होनी ही चाहिए ना.”

“जी हां सरकार खाने पीने का अपनी तरफ से अच्छा प्रबंध किया है.”

राहुल और आलिया ने हाथ जोड़ कर सिकंदर का शुक्रिया किया.

"ये हैं जगदीश दा. इन्होने कोल्ड ड्रिंक का प्रबंध किया है यहा पर. इतनी गर्मी में कोल्ड ड्रिंक सभी को थोड़ी राहत देगी."

"राहुल और आलिया ने जगदीश का भी हाथ जोड़ कर शुक्रिया अदा किया.

"ये हैं प्रीतम जी. इतने खुश हैं आपकी शादी से की सुबह से यही के चक्कर काट रहे हैं."

राहुल और आलिया ने प्रीतम को हंसते हुवे हाथ जोड़ कर प्रणाम किया.

"ये हैं भानु जी. इतने खुश है ये तुम दोनो की शादी से कि संगीत का आयोजन कर दिया है इन्होने यहा. हल्का-हल्का मध्यम म्यूज़िक चलता रहेगा ताकि मंदिर में किसी को तकलीफ़ ना हो."

राहुल और आलिया ने हाथ जोड़ कर भानु को भी नमस्कार कहा.

"ये हैं मनविंदर जी. इन्होने शादी के फोटो खींचने का जिम्मा ले लिया है." रवि ने कहा.

राहुल और आलिया ने मनीष को भी हाथ जोड़ कर नमस्कार कहा.

"ये हैं रोहन जी. राजनीति में अच्छी पकड़ है इनकी मगर फिर भी इलेक्शन हार गये. ये भी खुशी खुशी आए हैं यहा"

राहुल और आलिया ने रोहन को भी हाथ जोड़ कर नमस्कार किया.

"लास्ट बट नोट द लिस्ट ये हैं रोहित. बहुत बिज़ी थे ये भी. लेकिन शादी में आने से खुद को रोक नही पाए."

राहुल और आलिया ने रोहित को भी हाथ जोड़ कर नमस्कार किया.

"वैसे आप इन सबको कैसे जानते हैं पंडित जी." राहुल ने पूछा.

“यू ही एक दिन अचानक मिल गये थे सभी. कब दोस्ती हो गयी पता ही नही चला. चलो अब शुभ मुहूरत का वक्त निकला जा रहा है. आओ जल्दी से पहले तुम दोनो के फेरे करवा दूं बातें तो होती रहेंगी.” रवि ने कहा.

रवि उनको मंडप की तरफ ले जा ही रहा था कि पम्मी भी आ गयी. साथ में होटेल के रीसेपशनिस्ट मनीष भी थे.

रवि राहुल और आलिया को मंडप में ले आया और उन दोनो को अग्नि के सामने बैठने को कहा. आलिया और राहुल ने एक दूसरे की तरफ देखा. दोनो की ही आँखे नम थी. ये खुशी के आँसू थे. राहुल ने आलिया का हाथ थाम लिया और उसे बैठने का इशारा किया.

पूरा एक घंटा लगा पूरे प्रोसेस में. सभी लोग उन दोनो के हर फेरे पर ताली बजा रहे थे. राहुल और आलिया ने सोचा भी नही था कि इतनी रोनक लग जाएगी उनकी शादी में. उनकी शादी धूम धाम से हो रही थी. फेरो के बाद सभी ने मंदिर के एक कोने में इकट्ठा हो कर स्वादिष्ट खाने का आनंद लिया.

खाना इतना था कि मंदिर में आ रहे दूसरे लोग भी खाना खा सकते थे. कुछ खा भी रहे थे. राहुल और आलिया ने मंदिर के बाहर बैठे ग़रीब लोगो को अपने हाथो से खाना दिया. बहुत खुश थे दोनो इसलिये भगवान के हर बंदे के साथ अपनी खुशी बाँटना चाहते थे.

सभी का हाथ जोड़ कर शुक्रिया करके राहुल और आलिया टॅक्सी में बैठ कर होटेल की तरफ चल दिए.दोनो के चेहरे पर सुकून था और एक प्यारी सी मुस्कान हर वक्त उनके चेहरे पर चिपकी हुई थी.

“कितने अच्छे लोग थे सभी. आलोक भैया तो बहुत इमोशनल हो रहे थे कन्यादान के वक्त.” आलिया ने कहा.

“हां इन लोगो के आने से जो रोनक लगी उसे हम जींदगी भर नही भूल पाएँगे. हम तो तन्हा चले थे होटेल से लोग जुड़ते गये कारवाँ बनता गया.”

“राहुल बहुत खर्चा किया लोगो ने हमारे लिए. हमें कुछ तो देना चाहिए था उन्हे.”

“मैने पंडित जी से पूछा था पर उन्होने मना कर दिया. उन्होने कहा कि हमारे प्यार के बदले में तुम हमें कुछ दोगे तो ये व्यापार बन जाएगा. प्लीज़ इसे प्यार ही रहने दो.”

“ह्म्म बहुत अच्छा लगा इन लोगो का साथ.”

“हां सही कहा.”

अचानक बाते करते करते आलिया बिल्कुल खामोश हो गयी. उसने अपना चेहरा खिड़की की तरफ घुमा लिया.

“क्या हुवा जान…अचानक चुप क्यों हो गयी.”

आलिया ने राहुल की तरफ मूड कर देखा. उसकी आँखे नम थी. वो खुशी के आँसू नही लग रहे थे.

राहुल ने आलिया के हाथ पर हाथ रखा और बोला, “क्या बात है जान…क्या मुझसे कोई भूल हो गयी.”

“नही राहुल तुमसे कोई भूल नही हुई. बस यू ही उदास हूँ.”

राहुल ने टॅक्सी में होने के कारण कुछ और पूछना सही नही समझा. जब वो होटेल पहुँचे तो कमरे में आते ही आलिया फूट पड़ी. रोते हुवे वो सोफे पर बैठ गयी.

“क्या हुवा जान…कुछ बताओ तो सही.”

“अम्मी-अब्बा और फातिमा की याद आ रही है आज राहुल. अपने अम्मी-अब्बा के गले लग कर रोना चाहती थी मैं आज पर वो इस दुनिया में नही हैं. कितनी बदनसीब हूँ मैं.”

राहुल आलिया के सामने फर्श पर बैठ गया और उसका हाथ थाम कर बोला, “जान तुम्हारा दर्द समझ सकता हूँ. हम दोनो ने अपने पेरेंट्स को एक साथ खोया है. अगर तुम्हारे अम्मी अब्बा और मेरे मम्मी पापा जींदा होते तो बहुत ज़्यादा नाराज़ होते हम दोनो से. मगर मुझे यकीन है कि हम एक ना एक दिन मना ही लेते उनको.”

“हां राहुल वही तो. वो नाराज़ रहते मगर इस दुनिया में तो रहते. कभी ना कभी हम उन्हे मना ही लेते. तुम्हे नही पता कैसे संभाला मैने खुद को मंदिर में. ये दंगे क्यों होते हैं राहुल. कोई इन्हे रोकता क्यों नही.”

“भीड़ जब पागल हो जाती है तो उसे रोकना बहुत मुश्किल हो जाता है. और जब भीड़ किसी के बहकावे में आ जाए तो स्थिती और भी गंभीर हो जाती है. ये दंगे क्यों होते हैं नही कह सकता क्योंकि इतना ज्ञानी नही हूँ मैं. हां इतना ज़रूर कह सकता हूँ क़ि दंगे इंसान को हैवान बना देते हैं. मैने तुम्हे बताया था ना कि जब मुझे अपने मम्मी पापा की मौत का पता चला तो मेरा खून खोल उठा था. मेरे अंदर बदला लेने की आग भड़क उठी थी. मैं भी भीड़ में शामिल हो जाना चाहता था. लेकिन फातिमा का रेप नही देख पाया जरीना. मुझे यही लगा कि किसी के साथ ऐसा नही होना चाहिए. ५ लोग भूके भेड़ियों की तरह नोच रहे थे उसे.”

“बस राहुल बस प्लीज़ चुप हो जाओ…नही सुन सकती ये सब. बहुत प्यार करती हूँ मैं फातिमा से. उसके बारे में ऐसा कुछ नही सुन सकती.”

“सॉरी जान तुमने सवाल किया तो बातों बातों में ये बात आ गयी ज़ुबान पर. छोडो अब ये सब. मैं हूँ ना तुम्हारे साथ.”

“हां तुम हो तभी तो जींदा हूँ राहुल.”

“आज इतने खुशी के दिन क्या ऐसे उदास रहोगी.”

“सॉरी अचानक ख़याल आया तो रोक नही पाई मैं खुद को. मंदिर में सब लोग थे तो खुद को संभाले हुवे थी. सबके सामने नही रोना चाहती थी. तुम्हारे सामने खुद को संभाल नही पाई क्योंकि पता है मुझे की तुम संभाल लोगे मुझे.”

“मुझ पर इतना विश्वास रखने के लिए शुक्रिया आपका. अब अगर आपका वीदाई वाला रोना धोना बंद हो गया हो तो मैं अपना कार्यक्रम शुरू करूँ.”

“कौन सा कार्यक्रम?” आलिया ने अपने आँसू पोंछते हुवे कहा.

“मज़ाक कर रहा हूँ. मैं ये चाहता हूँ कि बीती बातें भूल जाओ अब. बड़ी मुश्किल से ये खुशी पाई है हमने. इसे जी भर कर जीना चाहिए हमें आज. ये दिन दुबारा नही आएगा.”

“सॉरी राहुल…खुद को रोक रही थी बहुत… पर रोकते-रोकते बिखर गयी. प्लीज़ बुरा मत मान-ना.”

राहुल उठ कर सोफे पर बैठ गया और आलिया को अपने सीने से लगा कर बोला, “कोई बात नही जान. हमारे बीच सॉरी की कोई ज़रूरत नही है. समझ रहा हूँ मैं सब कुछ. अच्छा ये बताओ अभी घर चलें या फिर कल.”

“क्या अभी टिकट मिल जाएगी”

“मिलनी तो चाहिए. अच्छा होगा अगर अपनी शादी के दिन हम अपने घर में रहें. वहीं तो हमें प्यार हुवा था.”

“चलो फिर जल्दी चलो…आज के दिन का ज़्यादा से ज़्यादा वक्त मैं अपने घर में बिताना चाहती हूँ.”

“हां चलो”

“क्या मैं शादी के जोड़े में ही चलूं?”

“और नही तो क्या? जैसे हैं वैसे ही चलेंगे. कोई दिक्कत की बात नही है”

राहुल और आलिया ने अपना समान समेटा होटेल से और एयर पोर्ट के लिए चल दिए. ५ बजे की फ्लाइट थी. ६:३० पर वो वडोदरा एयर पोर्ट पर उतर गये. ७:१५ पर टॅक्सी ने उन्हे उनके घर के बाहर उतार दिया. जैसे ही वो दोनो टॅक्सी से उतरे कमलेश मोदी ने उन्हे देख लिया.

"जिसका शक था वही बात निकली. तो तुम दोनो शरम हया त्याग कर साथ रह रहे थे यहा. और अब शादी करके आ गये. राहुल तुमसे ऐसी उम्मीद नही थी. शादी की भी तो किस से. तुम्हारे पेरेंट्स बिकुल पसंद नही करते थे इन लोगो को. वो क्या हम भी पसंद नही करते थे. जो लोग देश में आग लगाते हैं उनसे तुमने रिश्ता जोड़ लिया. लगता है ट्रेन हादसे को भूल गये तुम."

"अंकल क्या आपने किसी अपने को खोया था उस ट्रेन हादसे में." राहुल ने पूछा.

"नही"

"तो क्या आपने उसके बाद फैले दंगो में खोया किसी को."

"नही." घनश्याम ने जवाब दिया

"मैने अपने पेरेंट्स खोए ट्रेन हादसे में. उसके बाद बढ़के दंगो के कारण आलिया के पेरेंट्स और बहन को जान से हाथ धोना पड़ा. सबसे ज़्यादा कड़वाहट तो हम दोनो में होनी चाहिए थी एक दूसरे के प्रति. जबकि ऐसा नही है. हमने कड़वाहट को प्यार में बदल लिया है अंकल और आप बेवजह दिल में कड़वाहट बनाए हुवे हैं. क्या ये शोभा देता है आपको. छोटा हूँ मैं बहुत आपसे. आप ज़्यादा समझदार हैं. अपने जीवन को शांति और अमन फैलाने में लगायें ना की कड़वाहट फैलाने में. कुछ ग़लत कह दिया हो तो माफ़ कीजिएगा."

आलिया जो अब तक चुपचाप सब सुन रही थी अचानक बोली, "अंकल कभी आपसे बात नही हुई. क्योंकि घर पास पास हैं इसलिये रोज कभी ना कभी दिख जाते थे आप. आपने भी मुझे अक्सर देखा होगा. क्या ट्रेन में आग मैने लगाई थी? या फिर मेरे अम्मी-अब्बा गये थे ट्रेन फूँकने के लिए. हमे तो कुछ पता भी नही था कि कौन सी ट्रेन... कैसी ट्रेन फूँक दी गयी. प्लीज़ बहुत सज़ा मिल चुकी है मुझे. और सज़ा मत दीजिए. आपकी अपनी बेटी समझ कर मुझे माफ़ कर दीजिए."

कमलेश मोदी के पास कहने को कुछ नही था. वो बिल्कुल चुप हो गया. कुछ भी कहने की हिम्मत नही जुटा पाया. चुपचाप अपने घर में घुस गया.

“चलो आलिया अंदर चलते हैं.” राहुल ने कहा.

“देखा राहुल कैसे भाग गये अंकल बिना कुछ कहे.” आलिया ने कहा.

“देखो सही और ग़लत हम सभी जानते हैं बस स्वीकार करने की हिम्मत नही जुटा पाते. छोड़ो इन बातों को…. चलो प्यार से अपने घर में प्रवेश करते हैं.”

आलिया ने ताला खोला और वो कदम अंदर रखने ही वाली थी कि राहुल ने टोक दिया, “रूको एक बात मैं भूल ही गया. एक मिनिट यही रूको.”

“समझ गयी मैं. मैं भी भूल गयी थी.”

राहुल अंदर गया और भाग कर एक लोटे में चावल डाल कर लाया और आलिया के कदमो में रख कर बोला, “हां अब इसे गिरा कर अंदर आओ.”

आलिया ने प्यार से ठोकर मारी उस लोटे को और अंदर आ गयी. राहुल ने फॉरन दरवाजा बंद किया और आलिया को बाहों में भर लिया.

“अरे छोडो ये क्या कर रहे हो.”

“कब से तड़प रहा हूँ मैं अब और नही रुका जाता.”

“लंबे सफ़र से आए हैं हम. थोड़ा आराम तो कर लें.” आलिया ने कहा.

“मुझे अपनी जान से प्यार करना है. ढेर सारा प्यार. आराम करने का मन नही है अभी.”

“देखो वहा वो क्या है दीवार पर” आलिया ने कहा.

जैसे ही राहुल ने दीवार पर देखा आलिया राहुल को धक्का दे कर एक कमरे में घुस्स गयी.

राहुल भागा उसकी तरफ मगर अंदर से कुण्डी लग चुकी थी.

“जान प्लीज़…बाहर आओ तुरंत. ऐसे मत तड़पाव मुझे." राहुल ने दरवाजा पीट-ते हुवे कहा.

आलिया ने अंदर घुसते ही अपने दिल पर हाथ रखा. दिल बहुत ज़ोर से धड़क रहा था. “तुम्हे क्या हो गया अचानक ये. मुझे डर लग रहा है तुमसे.” आलिया ने कहा.

“जान ये सब क्या है. शादी से पहले भी दूर भागती थी और शादी के बाद भी दूर भाग रही हो. क्यों तडपा रही हो मुझे. मैं तड़प तड़प कर मर जाऊंगा. प्लीज़ दरवाजा खोलो.” राहुल ने कहा.

आलिया ने अंदर से आवाज़ दी, “पहली बार बहुत डर लग रहा है तुमसे.”

“अरे डरने की क्या बात है. अच्छा दरवाजा तो खोलो मैं कुछ नही करूँगा.”

“पक्का.” आलिया ने कहा.

“हां पक्का.”

आलिया ने दरवाजा खोला डरते-डरते.

“ये हुई ना बात. अब तुम्हारी खैर नही” राहुल ने आलिया का हाथ पकड़ लिया.

“नही राहुल प्लीज़…तुमने वादा किया था कि कुछ नही करोगे.” आलिया गिड़गिडाई और छटपटाने लगी.

आलिया पूरी कोशिश कर रही थी अपना हाथ छुड़ाने की मगर राहुल ने बहुत कस कर पकड़ रखा था उसका हाथ. छटपटाहट में आलिया की सारी का पल्लू सरक गया नीचे. राहुल की नज़र आलिया के ब्लाउस पर पड़ी तो उसने फॉरन हाथ छोड दिया आलिया का, “सॉरी पता नही मुझे क्या हो गया है.”

राहुल आलिया को वही छोड कर ड्रॉयिंग रूम में आकर सोफे पर बैठ गया. उसे ये फील हुवा कि वो आलिया के साथ ज़बरदस्ती कर रहा है.

आलिया एक पल को वही खड़ी रही फिर अपना पल्लू सही करके राहुल के पास आकर उसके कदमो में बैठ गयी. अपना सर उसने राहुल के घुटनो पर रख दिया.

"नाराज़ हो गये मुझसे?" आलिया ने प्यार से पूछा

"मैं बहुत तड़प रहा हूँ तुम्हारे लिए जान. तुम मुझसे दूर रहो अभी... नही तो कुछ कर बैठूँगा मैं."

"ठंडे पानी से नहा लो सब ठीक हो जाएगा हहेहहे." आलिया ने हंसते हुवे कहा.

"अच्छा मतलब कि तुम मेरे लिए कुछ नही करने वाली."

"मुझे कुछ समझ में नही आ रहा कि क्या करूँ."

"मुझे भी कहा कुछ समझ आ रहा है. बस पागल पन सा सवार है. शायद सेक्स ऐसा ही जादू करता है."

"तभी तो डर लग रहा है मुझे तुमसे."

"चलो छोडो ये सब. हम आराम करते हैं. तुम नहा लो थक गयी होगी."

"हां थक तो बहुत गयी हूँ. पर पहले तुम नहा लो. तब तक मैं खाने को कुछ बना देती हूँ. किचन का काम करके ही नहाना ठीक रहेगा." आलिया ने कहा.

"अरे मेरी नयी नवेली दुल्हन काम करेगी. मैं बाहर से ले आता हूँ कुछ."

"नही तुम कही नही जाओगे. मैं अपने राहुल के लिए कुछ ख़ास बनाऊंगी आज."

"चिकन कढ़ाई बना रही हो क्या."

“दुबारा मत बोलना ऐसी बात. नॉन-वेज के नाम से भी नफ़रत है मुझे.”

“उफ्फ गुस्से में कितनी प्यारी लग रही हो तुम. यार अब एक किस तो दे दो कम से कम. शादी के दिन कितना तडपा रही हो तुम मुझे.”

“मैं तो तुम्हारे भले की सोच रही थी कि कही जल कर राख न हो जाओ. हहेहहे.”

“राख ही कर दो. कुछ तो करो मेरी बेचैनी को दूर करने के लिए.”

“नहा लो चुपचाप जा कर. मुझे किचन में बहुत काम है.” आलिया उठ कर चल दी.

“उफ्फ लगता है आज मेरी जान ले लोगि तुम.”

आलिया किचन में आ गयी और अपने काम में लग गयी. राहुल कुछ देर चुपचाप सोफे पर बैठा रहा. फिर अचानक उठा और किचन में आकर आलिया को पीछे से जाकड़ लिया.

“मैं यहा तड़प रहा हूँ आपके लिए और आप खाना बना रही हैं.”

“आप नहा लीजिए ना जाकर. आपकी तड़प थोड़ी शांत हो जाएगी.”

“इस तड़प का इलाज सिर्फ़ आपके पास है. चलिए छोडिए ये सब.” राहुल ने आलिया को गोदी में उठा लिया.

“आज अचानक इतनी दीवानगी कहा से आ गयी.”

“ये दीवानगी तो हमेशा से थी. बस थामे हुवे था खुद को. शादी से पहले मैं बहकना नही चाहता था.”

“किस मे राहुल.”

“क्या कहा तुमने?”

“किस मे.”

“ऑम्ग ....ये कैसे हो गया.”

“अपने दीवाने के लिए कुछ भी कर सकती हूँ मैं.”

“वैसे मुझे पता है तुम मुझे किस दे कर टरकाने के चक्कर में हो. पर ऐसा नही होगा.”

“ओह गॉड तुम तो पीछे पड़ गये मेरे.”

“जी हां शादी की है आपसे कोई मज़ाक नही. पीछे नही पड़ूँगा आपके तो कुछ मिलने वाला नही है मुझे... ये मैं जान गया हूँ.” राहुल आलिया को बेडरूम में ले गया और दरवाजा अंदर से बंद कर लिया.

×××××××× **आखरी कुछ शब्द** ××××××××

हम सब की सीमा यही समाप्त होती है. बेडरूम में झाँक कर वहा के सीन का वर्णन करने से दोनो डिस्टर्ब हो जाएँगे. हमें दोनो को अकेला छोड देना चाहिए अब. पर ये क्या कुछ आवाज़े आ रही हैं अंदर से. शायद प्रेम-रस में डूब गये हैं दोनो. भगवान से यही दुआ है कि ये दोनो दुनिया की बुरी नज़र से बचे रहें और ये ख़ुशनूमा प्यार दोनो के बीच हमेशा बना रहे.

प्यार एक ऐसी ताक़त है जो कि इंसान को भगवान बना देता है. ये हमारे चरित्र को निखारता है. जीवन की बहुत सारी बुराईयाँ प्यार की आग में जल कर खाक हो जाती हैं. यही देखा हमने इस अनोखे बंधन में. नफ़रत करते थे राहुल और आलिया एक दूसरे से. धरम एक बहुत बड़ा कारण था इस नफ़रत के पीछे. प्यार ने धरम की दीवार भी गिरा दी और दोनो के दिलों में मौजूद नफ़रत को भी ख़तम कर दिया. ये कोई चमत्कार नही है. ऐसा रोज हो रहा है इस देश में. हां पर हर कोई आलिया और राहुल की तरह प्यार की मंज़िल तक नही पहुँच पाता.

******* समाप्त *******